वर्ष-6, अंक-18, 16-30 सितम्बर, 2021 (पाक्षिक)

चाणक्य वार्ता

राजभाषा हिन्दी की संपूर्ण अंतरराष्ट्रीय पत्रिका

ISSN 2456-1207

मूल्य : 15 रुपये

कुल पृष्ठ 40

इस अंक में पढ़ें–

2022 के विधान सभा चुनाव का परिदृश्य, स्वच्छ भारत अभियान की सबसे बड़ी बाधा, सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा, आजादी के अमृत वर्ष में हिन्दी, भारतीय संस्कृति और महिला सशक्तिकरण, उत्तर प्रदेश व जम्मू-कश्मीर से रिपोर्ट, कविताएँ, व्यंग्य, आलोचना में धन का तड़का, पुस्तक समीक्षा भारतीय संसद में भगत सिंह कोश्यारी, महत्त्वपूर्ण लेख पं. दीनदयाल और मातृशक्ति तथा आधुनिक कणाद प्रो. आशुतोष शर्मा। साथ ही सभी स्थायी स्तम्भ।

वृद्धजन की सेवा ही विनय का आधार है। वृद्ध सेवा अर्थात् ज्ञानियों की सेवा से ही ज्ञान प्राप्त होता है।—आचार्य चाणक्य

VISIT…

Corporate Office: Century House, P-15/1, Taratala Road, Kolkata – 700088

+91 33 39403950 | 1800-5722-122 | customerhelpdesk@centuryply.com | Century Plyboards India Limited

Century Plyboards (India) Ltd. | Century Plyboards India Ltd | Century Plyboards (India) Limited | Century Plyboards (I) Limited

ORR TECHNOLOGY
ISO 9001 Certified
SKIPPER
PIPES
FIXED FOR LIFE
COMPLETE RANGE OF PVC PIPES AND BATH FITTINGS
CPVC | UPVC | SWR | UGD | HDPE | BOREWELL | AGRICULTURE
CISTERN | SEAT COVER | BATH FITTINGS
NSF
pw
FOR ENQUIRY : enquiry@skipperlimited.com | Toll Free : 1800 120 6842

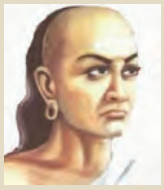

चाणक्य वार्ता

सम्पूर्ण अंतरराष्ट्रीय पत्रिका

वर्ष : 6, अंक : 18, 16-30 सितम्बर, 2021

अनुक्रम

5 सम्पादक के नाम पत्र

6 सम्पादक की कलम से

राष्ट्रीय

08 स्वच्छ भारत अभियान में सबसे बड़ी बाधा : योगेश कुमार गोयल

10 सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा : डॉ. दीपक कोहली

12 आजादी के अमृत वर्ष में हिंदी दिवस : डॉ. साकेत सहाय

14 भारतीय संस्कृति के मूल में है महिला सशक्तिकरण : अनुपमा अग्रवाल

राज्यों से

16 उत्तर प्रदेश—वाराणसी की प्राचीन जैन संस्कृति एवं परंपरा-4 : फूलचंद जैन प्रेमी

18 जम्मू-कश्मीर—अफगानिस्तान की घटना का कश्मीर घाटी पर प्रभाव - रमेश गुप्ता

चिंतन

19 कांग्रेस में संघ-प्रेम और संघ-द्वेष की समानांतर लहरें
कांग्रेस और संघ : एक सिंहावलोकन-30 : कृष्णानंद सागर

20 आचार्य चाणक्य की ये बातें है आज भी बड़े काम की : रमेश जैन

नई दिल्ली कार्यालय
मुख्यालय :
'सन्निधि', ए-28, मनसाराम पार्क, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059
कॉरपोरेट कार्यालय :
321, तृतीय तल, वर्धमान मॉल, प्लॉट-2, सेक्टर-19, द्वारका, नई दिल्ली-110077
सम्पर्क : 09871909808, 08571841127
ई-मेल : **chanakyavarta@gmail.com**

उत्तर क्षेत्र कार्यालय
एस.सी.ओ. 24, द्वितीय तल, सेक्टर-11, पंचकूला, हरियाणा-134112
सम्पर्क : 0172-4672424, 09466988764

पूर्वोत्तर क्षेत्र कार्यालय
116, कॉमर्स हाउस, एम.जी. रोड, फैंसी बाजार निकट ऐक्सिस बैंक, गुवाहाटी, असम-781001
सम्पर्क : 09101834214, 9864337619

दक्षिण क्षेत्र कार्यालय
13, नल्लन्ना मुदली स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600 079
सम्पर्क : 9342302248, 9941245660

संरक्षक
डॉ. योगेन्द्र नारायण (पूर्व महासचिव, राज्यसभा)
कुलाधिपति, गढ़वाल विश्वविद्यालय
लक्ष्मीनारायण भाला (वरिष्ठ साहित्यकार)

परामर्श मंडल
ए. सूर्य प्रकाश (पूर्व अध्यक्ष, प्रसार भारती)
पद्मश्री डॉ. श्यामसिंह शशि
(कुलाधिपति, रोमा विश्वविद्यालय)
वेणुगोपालन (वरिष्ठ पत्रकार)

सम्पादक मंडल
सम्पादक : **डॉ. अमित जैन**
राजनीतिक सम्पादक : **ओम प्रकाश पाल**
उप सम्पादक : **सारांश कनौजिया**

राष्ट्रीय समन्वयक
घनराज भम्बी
(वरिष्ठ पत्रकार—रक्षा सेनाएँ एवं अर्द्ध सैनिक बल)

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार प्रभारी
दिलीप बैनर्जी, कोलकत्ता

आर्थिक सलाहकार मंडल
सी.ए. मन्त्रेश्वर कर्ण
सी.ए. स्वीटी जैन

अन्तरराष्ट्रीय सलाहकार मंडल
धर्मपाल महेन्द्र जैन, टोरंटो, कनाडा

विधि सलाहकार मंडल
योगेश कुमार (चेयरमैन, नेचर व्यू)
अजय नागर (स्वतंत्र पत्रकार)
डॉ. भरत कुमार, (शिक्षाविद्), बनारस

राज्य प्रभारी
उत्तर क्षेत्र प्रभारी—**विशाल शर्मा**, चंडीगढ़
पूर्वोत्तर क्षेत्र प्रभारी—**राजीब अगस्ती**, गुवाहाटी
दक्षिण क्षेत्र प्रभारी—**नवरतन पींचा जैन**, चेन्नई
पश्चिमी क्षेत्र प्रभारी—**आशा सिंह देवासी**, मुम्बई
पूर्वी क्षेत्र प्रभारी—**प्रकाश बेताला**, भुवनेश्वर
कर्नाटक प्रभारी—**हर्ष गोयल**, बेंगलुरु
तमिलनाडु प्रभारी—**जे.पी. ललवानी**, चेन्नई
मध्य प्रदेश प्रभारी—**लखनलाल चौरसिया**, भोपाल
पश्चिमी उ.प्र. प्रभारी—**अंकित जैन**, मेरठ

कविताएं

21 मैं एक बीज हूं : प्रभुनाथ शुक्ला
21 बिना गुरु ज्ञान असंभव : श्याम सुन्दर श्रीवास्तव कोमल
21 आजादी की कीमत : डॉ. सुरेश गुप्ता
21 मेरे सर के क्या कहने : डॉ. कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव
22 गरम है बाजार : ज्ञानीचोर

व्यंग्य

22 फेकुलरिज्म का क्रैश कोर्स : विनोद कुमार विक्की
23 आलोचना में धन का तड़का : धर्मपाल महेन्द्र जैन

पुस्तक समीक्षा

24 भारतीय संसद में भगत सिंह कोश्यारी : डॉ. विनोद बब्बर

विविध

25 पंडित दीनदयाल और मातृशक्ति : डॉ. प्रेरणा चतुर्वेदी
26 आधुनिक कणाद प्रोफेसर आशुतोष शर्मा : डॉ. शुभ्रता मिश्रा

समाचार जगत

28 खबरों में देश-विदेश : सोनम जैन
29 उत्तर भारत की खबरें : विशाल शर्मा/शैलेन्द्र जैन
30 पूर्वोत्तर भारत की खबरें : राजीब अगस्ती/आलोक सिंह
31 दक्षिण भारत की खबरें : नवरतन पिंचा जैन/वेदप्रकाश पांडेय
32 पश्चिम भारत की खबरें : आशा सिंह देवासी/धीरेन बरोट

जॉब अलर्ट

36 सरकारी नौकरी में अवसर : सीए स्वीटी जैन

सबरंग

37 सिनेमा, टेलीविजन, आयोजन : डॉ. महेश्वर

देश भर में 'चाणक्य वार्ता' के प्रतिनिधि

राज्य ब्यूरो चीफ
धीरेन्द्र मिश्र, नई दिल्ली
डॉ. अमर सिंहल, जयपुर, राजस्थान
शैलेन्द्र जैन, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
इन्द्रमोहन मिश्रा, हरिद्वार, उत्तराखंड
डॉ. गुलाब सिंह, यमुना नगर, हरियाणा
शरद छिब्बर, चंडीगढ़
रमेश गुप्ता, उधमपुर, जम्मू-कश्मीर
एस.के. व्यास, जलंधर, पंजाब
गुरुवचन सिंह, शिमला, हिमाचल प्रदेश
सतीश सिंह, गुवाहाटी, असम
आलोक सिंह, शिलांग, मेघालय
शुभ्रांशु दाम, धर्मनगर, त्रिपुरा
तुम्बम रीबा 'लीली', ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश
हुरई जेलियांग, दीमापुर, नागालैंड
डॉ. ललमुआनओमा साइलो, आईजोल, मिजोरम
किरन कुमार, इम्फाल, मणिपुर
डॉ. छुकी लेप्चा, गंगटोक, सिक्किम
वेद प्रकाश पाण्डेय, बेंगलुरु, कर्नाटक
ईश्वर करुण, चेन्नई, तमिलनाडु
जी. गौरीशंकर, हैदराबाद, तेलंगाना
उमा महेश्वर रेड्डी, विजयवाड़ा, आंध्रप्रदेश
श्रीकांत कण्णन, पुडुचेरी
अरुण लक्ष्मण, तिरुवन्तपुरम, केरल
धीरेन बरोट, अहमदाबाद, गुजरात
अमोस छेत्री, पणजी, गोवा
किशोर आपटे, मुम्बई, महाराष्ट्र
विनायक भिषे, सतारा, महाराष्ट्र
विनोद कुशवाहा, भोपाल, म.प्र.
आदेश ठाकुर, रायपुर, छत्तीसगढ़
सियानंद मंडल, पटना, बिहार
गौतम चौधरी, राँची, झारखंड
दिनेश जैन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल
राजेन्द्रपाल शर्मा, पोर्टब्लेयर, अंडमान निकोबार

नेशनल सोशल मीडिया हेड
आदित्य जैन, यमुनानगर

नेशनल मार्केटिंग हेड
पीयुष जैन, नई दिल्ली

जिला ब्यूरो चीफ
अविनाश पाठक, नागपुर, महाराष्ट्र
अनमोल जैन, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश
सुनीता गोस्वामी, मथुरा, उत्तर प्रदेश
डॉ. डी.के. अस्थाना, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश
संजय सक्सेना, कानपुर, उत्तर प्रदेश
सोनम जैन, दिल्ली
अजय भट्ट, देहरादून
ए. रणजीत, आईजोल, मिजोरम

*नोट : देश के कोने-कोने में आप अपने समाचार पत्र हॉकर के माध्यम से घर बैठे 'चाणक्य वार्ता' पत्रिका मँगा सकते हैं। यदि आपको पत्रिका मिलने में कठिनाई होती है, तो आप 'चाणक्य वार्ता' के मुख्य प्रसार कार्यालय, नई दिल्ली में **08586858185** पर सम्पर्क कर सकते हैं अथवा*

***chanakyavarta@gmail.com** पर ई-मेल भी कर सकते हैं।*

—प्रसार प्रबंधक

© सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक, प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से 'चाणक्य वार्ता' पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अंतर्गत विचारणीय रहेंगे।

इंटरनेशनल दिव्य परिवार सोसाइटी, नई दिल्ली का पाक्षिक प्रकाशन

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अमित जैन के लिए विकास कम्प्यूटर एंड प्रिंटर्स, ट्रोनिका सिटी, लोनी, गाजियाबाद से मुद्रित एवं ए-28, मनसाराम पार्क, नई दिल्ली से प्रकाशित।

सम्पादक : अमित जैन।

आवरण व लेआउट : **स्वपन कम्यूनिकेशन, दिल्ली**

वेबसाइट : www.chanakyavarta.com

आप सभी पाठकगण पत्रिका में प्रकाशित लेखों पर अपने विचार या कोई सुझाव हमें हमारी ई-मेल आईडी response50123@gmail.com पर भेज सकते हैं। स्थान की उपलब्धता के अनुसार हम आपके विचारों को शामिल करने का प्रयास करेंगे।
—सम्पादक 'चाणक्य वार्ता'

चाणक्य वार्ता समूह द्वारा प्रकाशित पाक्षिक पत्रिका 'चाणक्य वार्ता' के प्रकाशन के पांच वर्ष पूर्ण होने पर शुभकामनायें। अब छठा वर्ष भी पूर्ण होने की ओर है। इस अवसर पर आपके द्वारा पत्रिका के पांच वर्षों के सभी 120 अंकों का संकलन 15 खंडों में सजिल्द तैयार कराकर देश भर के पुस्तकालयों में प्रदान किया जा रहा है, इस हेतु आपको साधुवाद। प्रो. अवनीश कुमार-आचार्य, गणितीय विज्ञान एवं कम्प्यूटर अनुप्रयोग विभाग, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय ने दिनांक 15.08.2021 को स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर 'चाणक्य वार्ता' का यह संकलन मुझे सादर भेंट किया है, जिसे बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय में अध्ययन हेतु प्रेषित किया जा रहा है।

प्रो. जे.वी. वैशमपायन, कुलपति
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी, उ.प्र.

चाणक्य वार्ता के 1 सितंबर 2021 के अंक में चाणक्य वार्ता प्रकाशन समूह के द्वारा प्रकाशित पुस्तक भारतीय संसद में भगत सिंह कोश्यारी का दिल्ली में विमोचन समारोह और देहरादून में आयोजित परिचर्चा समारोह की रिपोर्ट पढ़ी। भगत सिंह कोश्यारी का जीवन बहुत ही सादगी से भरा हुआ है। कठिन परिश्रम के बल पर भगत दा देश की राजनीति में लगातार अपना स्थान बनाये हुये हैं। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री से लेकर महाराष्ट्र के राज्यपाल का दायित्व निभा रहे श्री कोश्यारी युवाओं को भी राजनीति में आगे बढ़ाने में सदैव अग्रणी रहे हैं, जिसका एक उदाहरण उत्तराखंड के वर्तमान युवा मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी हैं।

—डॉ. भरत कुमार
शिक्षाविद्, बनारस, उ.प्र.

चाणक्य वार्ता प्रकाशन समूह के द्वारा भारतीय संसद में भगत सिंह कोश्यारी पुस्तक का प्रकाशन, उसके बाद दिल्ली में ऐतिहासिक विमोचन तथा देहरादून में पुस्तक पर सफल परिचर्चा के आयोजन हेतु मैं प्रकाशन से जुड़े सभी पदाधिकारियों व कर्मचारियों को बधाई देता हूं। मैंने इन दोनों कार्यक्रमों पर रिपोर्ट चाणक्य वार्ता के 1 सितंबर के अंक में पढ़ी। पढ़कर प्रसन्नता हुई और कोश्यारी जी पर लिखी पुस्तक को पढ़ने की उत्सुकता भी मन में बढ़ गयी। प्रकाशित रिपोर्टों के आधार पर मुझे लगता है कि यह पुस्तक उन सभी लोगों के लिये लाभदायक है, जो किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहते हैं। किसी सफल व्यक्ति की सफलता के पीछे कितनी मेहनत होती है, यह बात इस पुस्तक को पढ़कर हम सभी सीख सकते हैं। भगत दा राजनीति में हैं, इसलिए निश्चित ही यह पुस्तक इस क्षेत्र से जुड़े लोगों के लिये अधिक लाभदायी होगी।

—राजेंद्र पाल शर्मा
पत्रकार, पोर्ट ब्लेयर, अण्डमान व निकोबार

चाणक्य वार्ता का 1 सितंबर का अंक पढ़कर ज्ञात हुआ कि चाणक्य वार्ता प्रकाशन समूह के द्वारा उत्तर प्रदेश के पूर्व राज्यपाल राम नाईक की पुस्तक चरैवेति! चरैवेति!! का तमिल संस्करण भी निकाला गया है, जिसका लोकार्पण तमिलनाडु के राज्यपाल बनवारीलाल पुरोहित के द्वारा चेन्नई स्थित राजभवन में किया गया। तमिल भाषा हमारी भारतीय भाषाओं में अपना एक विशेष स्थान रखती है, जिसको बोलने वाले काफी संख्या में हैं। इसलिये इस पुस्तक का तमिल संस्करण अवश्य ही तमिल के पाठकों के लिये लाभदायी होगा। पुस्तक के सफल प्रकाशन, आयोजन एवं अनुवाद की गुणवत्ता को बनाये रखने के लिये मैं प्रकाशन समूह को अपनी ओर से बधाई देता हूं। चेन्नई की रिपोर्ट में अखबारों की कतरने देखकर और श्री राम नाईक जी का यह बयान पढ़कर कि पुस्तक का अनुवाद बहुत ही शुद्ध हुआ है। मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई है।

—विनय शर्मा
समाजिक कार्यकर्ता, उधमपुर, जम्मू-कश्मीर

चाणक्य वार्ता के 1 सितंबर के अंक में रंजना मिश्रा का पंजशीर और तालिबान से जुड़ा लेख पढ़ा। इस लेख पर अपनी प्रतिक्रिया देने के समय तक पंजशीर के शेर बहुत कमजोर हो चुके हैं परंतु इन शेरों ने अभी तक हार नहीं मानी है, लेकिन बहुत अधिक दिनों तक तालिबान से मुकाबला कर पाना इनके लिये कठिन होगा। पंजशीर के लड़ाकों के पास पुराने हथियार है, इसके अलावा जितनी वहां की कुल जनसंख्या है, उतने तो तालिबान के पास आतंकवादियों की फौज हैं। तालिबान का उन सभी रास्तों पर कब्जा है, जहां से पहले 90 के दशक में पंजशीर को मदद मिली थी। यह दुख:द है कि विभिन्न देश और अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं अफगानिस्तान की स्थिति पर चिंता तो व्यक्त कर रही हैं, लेकिन कोई भी तालिबान को रोकने के लिये कदम नहीं उठा रहा है।

—जे.पी. ललवानी
समाजिक कार्यकर्ता, चेन्नई, तमिलनाडु

चाणक्य वार्ता के 1 सितंबर के अंक में हिन्दुत्व के पुरोधा रहे कद्दावर नेता कल्याण सिंह पर विस्तृत लेख पढ़ा, जिसमें उनके जीवन के अनेक पहलुओं को जाना। उनका जाना संपूर्ण देश के लिये दुखदायी है। जिस समय कल्याण सिंह दूसरी बार उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने थे, तब मैंने हाई स्कूल की प्राइवेट परीक्षा दी थी। उस समय प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होने पर मेरे परिवार में इतनी प्रसन्नता थी, जैसे कोई बड़ी उपलब्धि प्राप्त कर ली हो। इसका कारण कल्याण सिंह जी के शासनकाल में नकलविहीन परीक्षा और सही प्रकार से होने वाला मूल्यांकन था। आज जिस प्रकार विद्यार्थियों पर नंबरों की बारिश होती है, वैसा तब नहीं हुआ करता था। जो योग्य विद्यार्थी होता था, कम से कम यूपी बोर्ड में तो उसे ही 75 प्रतिशत या उससे ऊपर के नंबर मिलते थे। आज अयोध्या में जो राम मंदिर का स्वप्न साकार होने जा रहा है, उसके नींव के पत्थर भी कल्याण सिंह जी ही थे।

- सारांश कनौजिया
वरिष्ठ पत्रकार, कानपुर, उ.प्र.

चाणक्य वार्ता के प्रत्येक अंक में नई-नई विविधता दिखायी देती है, जो हम सभी पाठकों के लिये आकर्षण का केंद्र है। जहां एक ओर कृष्णानंद सागर जैसे विषयों की पकड़ रखने वाले साहित्यकार अपना विषय रखते हैं, वहीं आचार्य चाणक्य द्वारा आज से वर्षों पूर्व सुझाये गये अनमोल विचार भी हमें पढ़ने को मिलते हैं। अंतरराष्ट्रीय से लेकर राष्ट्रीय और राष्ट्रीय में भी देश के कोने-कोने के समाचार जो कहीं पढ़ने को नहीं मिलते, वह भी चाणक्य वार्ता द्वारा हमें पहुंचाये जा रहे हैं।

शरद भाई पटेल
छात्र, सूरत, गुजरात

2022 के विधानसभा चुनाव का परिदृश्य

साल 2022 में उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, मणिपुर, गोवा, गुजरात और हिमाचल प्रदेश में विधानसभा चुनाव होने हैं। इन सात में से छह राज्यों में भाजपा की तो पंजाब में कांग्रेस की सरकार है। किसान आंदोलन, कोरोना महामारी और बेरोजगारी की वजह से सियासी फिजां धुंधली लग रही है। चुनाव परिणाम को लेकर साफ तौर पर कुछ भी कहना मुनासिब नहीं है। पंजाब में अपनी पार्टी के अंदर आंतरिक कलह से कांग्रेस परेशान है तो कुछ राज्यों में भाजपा स्वयं को कमजोर महसूस कर रही है।

फिलहाल, 2022 में होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए उल्टी गिनती शुरू हो चुकी है। चुनावी अखाड़े में एक दूसरे को पटखनी देने के लिए राजनीति दलों ने अभी से कमर कस ली है। अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव को 2024 लोकसभा चुनाव से पहले केंद्र सरकार के लिए सेमीफाइनल के तौर पर देखा जा रहा है। ऐसे में उत्तर प्रदेश व अन्य बड़े राज्यों में जीत से किसी भी पार्टी के लिए केंद्र में सरकार बनाने की उम्मीदें जग सकती है। इसलिए यह जानना जरूरी है कि 2022 में जिन राज्यों में चुनाव होने हैं, वहां सरकार की मौजूदा तस्वीर कैसी है ?

उत्तर प्रदेश-केंद्र की सत्ता उत्तर प्रदेश से तय होती है। किसी पार्टी की उत्तर प्रदेश में जीत दिल्ली में उसकी सरकार बना सकती है। प्रदेश में चुनावी हलचल अभी से शुरू हो गई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भाजपा के पूर्व कद्दावर नेता कल्याण सिंह के गृह जनपद अलीगढ से चुनावी तैयारियां शुरू कर दी हैं। वहीं उत्तर प्रदेश राज्य के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश में कोविड-19 की विभीषिका से पार पाने के लिए मंत्रिपरिषद और अधिकारियों की टीम ने अच्छा काम करके दिखाया है। कोरोना वायरस प्रबंधन को लेकर उत्तर प्रदेश की प्रशंसा देश ही नहीं बल्कि विदेश में भी हो रही है। महज 4 साल में 40 लाख परिवारों को आवास मिला, 1 करोड़ 38 लाख परिवारों को बिजली कनेक्शन मिला, वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट पर अमल, हर गांव तक ऑप्टिकल फाइबर केबल बिछाने का काम, पांच एक्सप्रेस-वे का विकास, देश को रक्षा उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के लिए डिफेंस कॉरिडोर का निर्माण, पांच साल में प्रति व्यक्ति आय दो गुना होना, उत्तर प्रदेश का निवेशकों के लिए पहली पसंद बनना, अन्नदाताओं के ऋण की कुछ हद तक माफी, 1.26 लाख करोड़ रुपए का गन्ना मूल्य भुगतान, किसान आंदोलनों के बीच प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना से प्रदेश के 2 करोड़ 42 लाख लोगों को लाभ मिलना और श्रीरामजन्मभूमि पर सकल आस्था के केंद्र प्रभु श्री राम के भव्य-दिव्य मंदिर के निर्माण के शिलान्यास के साथ 2015-16 में 10.90 लाख करोड़ से अब 21.73 लाख करोड़ की जीडीपी वाला राज्य बनने की वजह से लोगों के बीच उत्तर प्रदेश में भाजपा का इकबाल कायम है।

पंजाब-पंजाब में कांग्रेस की सरकार है। पिछली बार कांग्रेस को 117 सीटों में से 77 सीटों पर जीत मिली थी। अमरिंदर सिंह सरकार का दावा है कि उनके अधिकांश चुनावी वादे पूरे हो चुके हैं। किसान आंदोलन का बैकडोर से साथ देकर अमरिंदर सिंह ने भी लोगों के बीच अपने भरोसे को जिंदा बनाए रखा। आठ नगर निगमों में से 6 में कांग्रेस की जीत सहित अधिकांश नगरपालिकाओं में कांग्रेस की जीत से पार्टी की स्थिति मजबूत हुई है। यह माना जाने लगा था कि 2022 में कांग्रेस दुबारा सत्ता में वापसी कर सकती है। लेकिन कांग्रेस के अपने ही विधायकों ने सीएम कैप्टन अमरिंदर सिंह के खिलाफ मोर्चा खोल रखा है। नवजोत सिंह सिद्धू के ईंट से ईंट बजाने के तेवर ने पार्टी की स्थिति को कमजोर कर दिया है। वहीं अकाली दल और बीएसपी ने कांग्रेस को पटखनी देने के लिए हाथ मिला लिया है। इस बीच आम आदमी पार्टी ने भी अपनी स्थिति मजबूत कर ली है। यानी पंजाब में सियासी लड़ाई दिलचस्प होगी। वहीं भाजपा यदि पुनः अकाली दल के कन्धों पर ही सवार होती है, तो उसे कोई लाभ मिलने वाला नहीं है, इसलिए भाजपा को अपने दम पर चुनाव लड़ने की रणनीति बनानी चाहिए और अपने पंजाब से संबंधित नेताओं को आगे बढ़ाना चाहिए।

मणिपुर-60 विधानसभा सीटों वाले मणिपुर में भाजपा सत्ता में है। सीएम एन बीरेन सिंह के नेतृत्व में मणिपुर में बीजेपी लगातार अपने पांव मजबूत करने की कोशिशों में जुटी है। पार्टी की कोशिश है कि सत्ता एक बार फिर बीजेपी के हाथ में ही रहे। कई परियोजनाओं पर काम होने से मणिपुर में भाजपा नेतृत्व वाली सरकार की छवि बरकरार है, लेकिन बीजेपी और सहयोगी दलों के कुछ विधायकों के बागी तेवरों की वजह से जून में एन बीरेन सिंह की सरकार संकट में आ गई थी। इस बीच कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष का कुछ विधायकों के साथ बीजेपी में शामिल होने से वहां पर कांग्रेस की स्थिति पहले से कमजोर हुई है, वहीं क्षेत्रीय दलों के बदले रुख से सियासी हलचल चुनाव से कुछ माह पूर्व तेज हो गई है।

गोवा-गोवा में फिलहाल भाजपा की सरकार है। पिछले पांच वर्षों में गोवा के सभी गांवों में सौ फीसदी विद्युतीकरण हो चुका है। मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत के नेतृत्व में गोवा प्रति व्यक्ति आय के मामले में नंबर वन राज्य बन गया है। उनकी छवि के कारण भाजपा गोवा में मजबूत स्थिति में है, दूसरी तरफ कांग्रेस सत्ता में वापसी के लिए पुरजोर कोशिश में जुटी है।

उत्तराखंड-उत्तराखंड में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में भाजपा सरकार सड़क निर्माण, स्वास्थ्य, अटल आयुष्मान योजना, गरीब जनता को एक रुपए में हर घर को नल से जल की योजना, शिक्षा के क्षेत्र में बेहतर कार्य, महिलाओं को पति की पैतृक संपत्ति में सहखातेदार बनाने, मुख्यमंत्री घसियारी कल्याण योजना आदि के माध्यम से जनता के बीच में है। धामी पूरी मेहनत से जुटे हैं, वहीं कांग्रेस पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत के आधे-अधूरे नेतृत्व में सत्ता पाना चाहती है, लेकिन इस बार यह कार्य उसके लिए इतना आसान नहीं है।

—डॉ. अमित जैन

हरियाणा सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

हरियाणा कृषि व्यवसाय और खाद्य प्रसंस्करण नीति

कृषि क्षेत्र में त्वरित विकास के लिए
मज़बूत मूल्य श्रंखला लिंकेज बनाने के लिए
हरियाणा सरकार की एक पहल

व्यक्तिगत कृषि और खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों का निर्माण/विस्तार/विविधीकरण

- 1 करोड़ रुपये तक की एफ.सी.आई. (निश्चित पूंजी निवेश) पर 25% पूंजी निवेश सब्सिडी - 'सी' और 'डी' श्रेणी ब्लॉक।
- 50 लाख रुपये तक सीमित एफ.सी.आई. पर 25% पूंजी निवेश - सब्सिडी 'ए' और 'बी' श्रेणी ब्लॉक।

कोल्ड चेन और वैल्यू एडिशन इंफ्रास्ट्रक्चर

- 'बी', 'सी', 'डी' ब्लॉक के भंडारण बुनियादी ढांचे, पैकेजिंग हाऊस, परिवहन बुनियादी ढांचे के लिए 35% पूंजी निवेश सब्सिडी - 5 करोड़ रुपये तक।

बैकवर्ड और फारवर्ड लिंकेज योजना

- खराब होने वाली कृषि-बागवानी उपज के लिए बैकवर्ड और फॉरवर्ड लिंकेज बनाने के लिए सहयोग।
- 'सी' और 'डी' ब्लॉक में परियोजना लागत पर 50% पूंजी निवेश सब्सिडी - 3.5 करोड़ रुपये तक।
- 'ए' और 'बी' ब्लॉक में परियोजना लागत पर 50% पूंजी निवेश सब्सिडी - 2.5 करोड़ रुपये तक।

मिनी फूड पार्क योजना

- 'सी' और 'डी' श्रेणी के ब्लॉक में प्रमोटर/डेवलपर को प्रदान की जाने वाली कुल परियोजना लागत का 50% - 10 करोड़ रुपये तक।
- बुनियादी ढांचे और सामान्य सुविधाओं के विकास के लिए सरकार का सहयोग।

अधिक जानकारी के लिए
कृपया नीचे दिए गए QR कोड को स्कैन करें

एम.एस.एम.ई. निदेशालय, हरियाणा
संपर्क करें : 0172-2580707; ई-मेल: sectoral-cell.msme@hry.gov.in
अधिक जानकारी के लिये कृपया यहां देखें : https://msme.haryana.gov.in/

सूचना, जन सम्पर्क एवं भाषा विभाग, हरियाणा
www.prharyana.gov.in | @DiprHaryana

स्वच्छ भारत अभियान में सबसे बड़ी बाधा

योगेश कुमार गोयल

पिछले दिनों केन्द्र सरकार द्वारा देश में सिंगल यूज प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाए जाने को लेकर जारी की गई अधिसूचना के बाद अब दिल्ली सरकार द्वारा इसे लेकर कमर कस ली गई है। दरअसल दिल्ली सरकार ने भी अब सिंगल यूज प्लास्टिक के प्रयोग के खिलाफ सराहनीय अभियान चलाने का बड़ा निर्णय लिया है। हालांकि अभी तक दिल्ली में सिंगल यूज प्लास्टिक के प्रयोग के खिलाफ विभिक एजेंसियां अभियान चलाती रही हैं लेकिन अब दिल्ली सरकार ने भी इसे लेकर कड़े कदम उठाने का फैसला किया है। दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (डीपीसीसी) द्वारा सिंगल यूज प्लास्टिक के खिलाफ बड़ा अभियान चलाने के लिए तैयार किए गए एक्शन प्लान के तहत एनफोर्समेंट ड्राइव भी चलाया जाएगा। चूंकि विभिन्न धार्मिक और सामाजिक समारोहों में बड़ी संख्या में लोगों के इकट्ठा होने पर प्लास्टिक का उपयोग काफी ज्यादा होता है, इसीलिए इस एक्शन प्लान के तहत ऐसे समारोहों पर नजर रखी जाएगी और डीपीसीसी द्वारा इसके लिए राज्यस्तरीय स्पेशल टास्क फोर्स तथा जिलास्तरीय टास्क फोर्स गठित करने का निर्णय लिया गया है, जो उल्लंघनकर्ताओं के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करते हुए शिकंजा कसेंगी। दिल्ली में सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग की सटीक जानकारी मिल सके, इसके लिए डीपीसीसी दिल्ली की तमाम जगहों से प्रतिदिन का आंकड़ा मंगाएगी कि शहर में प्लास्टिक कचरे का कुल कितना उत्पादन हो रहा है। इन आंकड़ों के आधार पर सिंगल यूज प्लास्टिक यूनिट्स को बंद कराने में आसानी हो सकेगी। सिंगल यूज प्लास्टिक की रोकथाम के लिए डीपीसीसी द्वारा तैयार एक्शन प्लान के अनुसार प्लास्टिक रीसाइक्लिंग की व्यवस्था भी की जाएगी।

इससे पहले 13 अगस्त को केन्द्र सरकार द्वारा महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए भारत को अगले साल तक 'सिंगल यूज प्लास्टिक से मुक्त भारत' बनाने की दिशा में 1 जुलाई 2022 से सिंगल यूज प्लास्टिक वस्तुओं के उपयोग पर प्रतिबंध लगाए जाने की घोषणा की गई थी। पर्यावरण मंत्रालय द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार उसके बाद पॉलीस्टाइनिन और एक्सपैंडेड पॉलीस्टाइनिन सहित सिंगल यूज वाले प्लास्टिक के उत्पादन, आयात, भण्डारण, वितरण, बिक्री और उपयोग पर प्रतिबंध रहेगा। अधिसूचना में पहली बार सिंगल यूज प्लास्टिक को परिभाषित करते हुए कहा गया कि सिंगल यूज वाली प्लास्टिक वस्तु का अर्थ है, प्लास्टिक की वह वस्तु, जिसे डिस्पोज या रिसाइकिल से पहले एक काम के लिए एक ही बार यूज किया जाना है। देश में फिलहाल 50 माइक्रोन से कम के पॉलीथीन बैग पर प्रतिबंध है लेकिन नए नियमों के तहत 75 माइक्रोन से कम मोटाई के पॉलीथीन बैग और 120 माइक्रोन से कम के बैग पर प्रतिबंध लगाया जाएगा। केन्द्र सरकार की अधिसूचना के अनुसार प्लास्टिक कचरे के बढ़ते खतरों से निपटने के लिए देश में सिंगल यूज प्लास्टिक को दो चरणों में प्रतिबंधित किया जाएगा। पहले चरण की शुरूआत जनवरी 2022 से होगी, जिसमें कुछ प्लास्टिक की चीजें जैसे प्लास्टिक के झंडे, गुब्बारे, आइसक्रीम और कैंडी की प्लास्टिक स्टिक पर प्रतिबंध लगेगा और १ जुलाई 2022 से दूसरे चरण में प्लास्टिक के कप, प्लेट, गिलास, कांटे, चम्मच, चाकू, पुआल, ट्रे, रैपिंग, पैकिंग फिल्म्स, मिठाई बॉक्स, निमंत्रण कार्ड, सिगरेट के पैकेट पर लपेटी जाने वाली पॉलीथीन, 100 माइक्रोन से कम के पीवीसी बैनर इत्यादि चीजों पर प्रतिबंध लगेगा। अधिसूचना के तहत अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली की स्थापना और समन्वय, प्लास्टिक कचरे को अलग करना, कलैक्शन, भंडारण, परिवहन, प्रोसेसिंग और डिस्पोजल जैसे कार्यों के लिए शहरी स्थानीय निकायों और ग्राम पंचायतों की जिम्मेदारी होगी।

नई अधिसूचना जारी करने से पहले प्रधानमंत्री द्वारा सर्वप्रथम 5 जून 2018 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर वर्ष 2022 तक भारत को प्लास्टिक से निजात दिलाने का लक्ष्य रखा गया था और प्लास्टिक के खतरनाक प्रभावों को देखते हुए देशवासियों से 2 अक्तूबर 2019 तक ही प्लास्टिक रूपी मुसीबत से छुटकारा पाने का आह्वान किया था। वर्ष 2019 में स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लाल किले की प्राचीर से अपने सम्बोधन में देश को प्लास्टिक कचरे से मुक्त

कराने का अभियान छेड़ने का आह्वान करते हुए कहा था कि गांधीजी की 150वीं जयंती के अवसर पर देशवासी अपना सारा सिंगल यूज प्लास्टिक अपने नजदीकी नगर निगम या स्वच्छता कर्मचारी के पास जमा कराकर देश को सिंगल यूज प्लास्टिक से मुक्त करने में सहयोग दें। उसके बाद उन्होंने संयुक्त राष्ट्र की ओर से ग्रेटर नोएडा में आयोजित एक सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए सिंगल यूज प्लास्टिक से छुटकारा पाने के लिए पूरे विश्व समुदाय का भी आह्वान किया था। दरअसल आज प्लास्टिक कचरे की विकराल होती समस्या के मद्देनजर प्रत्येक राष्ट्र की जिम्मेदारी है कि धरती पर प्लास्टिक कचरे से उत्पन्न पर्यावरणीय समस्याओं से दुनिया को राहत दिलाने के लिए वह अब अपने स्तर पर इस दिशा में ठोस कदम उठाएं।

2018 में प्रधानमंत्री द्वारा देश को प्लास्टिक मुक्त करने को लेकर शुरू की गई मुहिम को देखकर लगने लगा था कि बहुत जल्द भारत को सिंगल यूज प्लास्टिक रूपी मुसीबत से छुटकारा मिल जाएगा। दरअसल प्लास्टिक के खतरों के प्रति प्रधानमंत्री के उन आह्वानों का जमीनी स्तर पर सकारात्मक प्रभाव दिखने लगा है और स्वयं प्रधानमंत्री भी मानने लगे थे कि भारत जल्द ही सिंगल यूज प्लास्टिक से छुटकारा पा लेगा तथा देश में अब सिंगल यूज प्लास्टिक की कोई जगह नहीं होगी। हालांकि एक बार तेजी पकड़ने के बाद यह अभियान शिथिल पड़ गया। सिंगल यूज प्लास्टिक के खिलाफ अभियान छेड़ने का कारण यही था कि अगर सिंगल यूज प्लास्टिक का प्रयोग नहीं रोका गया तो भू-रक्षण का नया स्वरूप सामने आएगा और फिर जमीन की उत्पादकता को वापस प्राप्त करना नामुमकिन होगा।

'स्वच्छ भारत अभियान' में सिंगल यूज प्लास्टिक सबसे बड़ी बाधा है, इसीलिए लोगों से प्लास्टिक मुक्त भारत की मुहिम में योगदान देने के लिए बाजार से खरीदारी के लिए पॉलीथीन के बजाय कपड़े का थैला इस्तेमाल करने की अपील भी की जाती रही है। दरअसल एक समय था, जब हम बाजार से कोई भी सामान लाने के लिए कपड़े का थैला लेकर ही घर से निकलते थे लेकिन समय के साथ-साथ अपनी सहूलियतों के हिसाब से हमने पॉलीथिन को इतना महत्व दिया कि कपड़े का थैला लेकर बाजार जाना आज की पीढ़ी को अपनी शान के खिलाफ लगता है। जेब में 250 ग्राम का स्मार्टफोन लेकर चलने वाले लोग 50-100

ग्राम वजनी पतला थैला जेब में डालकर ले जाना पसंद नहीं करते। ऐसे में पर्यावरण संरक्षण और 'प्लास्टिक मुक्त भारत' के लिए इन आदतों में बदलाव लाने हेतु सिंगल यूज प्लास्टिक से तौबा करने के लिए आमजन को जागरूक करना और कड़े नियमों का प्रावधान करना आज के समय में बेहद जरूरी है।

दो वर्ष पूर्व प्रधानमंत्री के देश से सिंगल यूज प्लास्टिक पर प्रतिबंध के आह्वान के बाद लोकसभा सचिवालय द्वारा देश की सबसे बड़ी पंचायत 'संसद' परिसर में दोबारा इस्तेमाल न हो सकने वाली प्लास्टिक की चीजों पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। उसके बाद सरकारी विमानन कम्पनी 'एयर इंडिया' ने भी अपनी सभी उड़ानों में प्लास्टिक के इस्तेमाल पर रोक लगाने का निर्णय लिया था। ऐसे कदमों के बाद उम्मीद बढ़ी थी कि इसका अनुसरण करते हुए देश के तमाम राज्यों में भी एक-एक कर सभी संवैधानिक संस्थाओं, सरकारी व गैर सरकारी कार्यालयों और औद्योगिक परिसरों में भी इसी प्रकार के सकारात्मक कदम उठाए जाएंगे लेकिन इस दिशा में कोई विशेष प्रगति नहीं होना चिंता का विषय है। 'प्लास्टिक मुक्त भारत' अभियान से जुड़े अधिकारियों का दावा है कि सिंगल यूज प्लास्टिक में पॉलीथीन, प्लास्टिक के कप-प्लेट, बोतलें, स्ट्रा, कुछ प्रकार के सैशे इत्यादि पर प्रतिबंध लग जाने से भारत में 14 मिलियन टन प्लास्टिक की खपत कम हो जाएगी, जिससे सालाना प्लास्टिक की खपत में 5-10 फीसदी तक की कमी आएगी लेकिन यह लक्ष्य तभी हासिल हो सकेगा, जब नियमों को सख्ती से लागू कराने के प्रति सरकारें गंभीर होंगी और लोगों को भी इस दिशा में जागरूक किया जा सकेगा।

यह भी जान लें कि आखिर सिंगल यूज प्लास्टिक को प्रतिबंधित करना क्यों जरूरी है? दरअसल सिंगल यूज प्लास्टिक ऐसा प्लास्टिक है, जिसे हम एक बार इस्तेमाल कर कूड़े में फैंक देते हैं। पर्यावरण मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार 2019-2020 में 34 लाख टन से भी अधिक प्लास्टिक कचरा पैदा हुआ, जो कि 2017-18 की तुलना में 10 लाख टन अधिक रहा। पॉलीथीन चूंकि पेपर बैग के मुकाबले सस्ती पड़ती है और टिकाऊ भी है, इसीलिए अधिकांश दुकानदार इसका इस्तेमाल करते रहे हैं। प्रतिवर्ष उत्पादित प्लास्टिक कचरे में से सर्वाधिक प्लास्टिक कचरा सिंगल यूज प्लास्टिक का ही होता है और इसका खतरा इसी से समझा जा सकता है कि ऐसे प्लास्टिक में से केवल 20 फीसदी प्लास्टिक ही रिसाइकल हो पाता है, करीब 39 फीसदी प्लास्टिक को जमीन के अंदर दबाकर नष्ट किया जाता है, जिससे जमीन की उर्वरक क्षमता प्रभावित होती है और यह जमीन में केंचुए जैसे जमीन को उपजाऊ बनाने वाले जीवों को बुरी तरह क्षतिग्रस्त कर देती है। 15 फीसदी प्लास्टिक जलाकर नष्ट किया जाता है और प्लास्टिक को जलाने की इस प्रक्रिया में बड़ी मात्रा में वातावरण में उत्सर्जित होने वाली हाइड्रो कार्बन, कार्बन मोनोक्साइड तथा कार्बन डाईऑक्साइड जैसी गैसें फेफड़ों के कैंसर व हृदय रोगों सहित कई बीमारियों का कारण बनती हैं।

ब्रसेल्स आयोग के सदस्य फ्रांस टिमरमंस के अनुसार प्लास्टिक की थैली सिर्फ पांच सैकेंड में ही तैयार हो जाती है, जिसका लोग प्राय: पांच मिनट ही इस्तेमाल करते हैं, जिसे गलकर नष्ट होने में पांच सौ साल लग जाते हैं। प्लास्टिक की एक थैली को नष्ट होने में 20 से 1000 साल तक लग जाते हैं जबकि एक प्लास्टिक की बोतल को 450 साल, प्लास्टिक कप को 50 साल और प्लास्टिक की परत वाले पेपर कप को नष्ट होने में करीब 30 साल लगते हैं। बहरहाल, प्लास्टिक प्रदूषण से छुटकारा पाने का एकमात्र उपाय यही है कि कड़े नियमों का प्रावधान करने के अलावा लोगों को प्लास्टिक के खतरों के प्रति सचेत और जागरूक करते हुए उन्हें प्लास्टिक का उपयोग न करने को प्रेरित भी किया जाए।

लेखक वरिष्ठ पत्रकार तथा सामरिक मामलों के विश्लेषक हैं।
ई-मेल : response50123@gmail.com

सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा

डॉ दीपक कोहली

नेल्सन मंडेला ने अपने प्रसिद्ध उदाहरण 'शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है, जिसका उपयोग आप दुनिया को बदलने के लिये कर सकते हैं', के माध्यम से इस तथ्य को रेखांकित किया कि शिक्षा, 'अज्ञानता, गरीबी, सामाजिक और आर्थिक बहिष्कार' के बंधनों से मुक्ति प्राप्त करने का मुख्य साधन (या मुक्तिदाता) है। इसी विचारधारा को मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा में अनुच्छेद 26 में निहित/प्रतिस्थापित किया गया है, जिसमें कहा गया था कि प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा का अधिकार प्राप्त है। हालाँकि मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा जारी होने के सात दशक बाद भी वैश्विक स्तर पर 58 मिलियन बच्चे स्कूलों से बाहर हैं और 100 मिलियन से अधिक बच्चे प्राथमिक शिक्षा पूरी करने से पहले ही स्कूली शिक्षा प्रणाली से बाहर हो जाते हैं।

भारत जो कभी 'विश्व गुरु' का स्थान रखता था, वर्तमान में सबसे अधिक 'स्कूल से बाहर' या 'आउट ऑफ स्कूल' बच्चों वाले देशों की सूची में सबसे ऊपर है। हालाँकि भारत के केरल राज्य ने आशा की किरण दिखाई है, क्योंकि यह अब संपूर्ण प्राथमिक शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने वाले देश के पहले राज्य के रूप में घोषित होने के लिये बिल्कुल तैयार है। इस संदर्भ में देश के अन्य राज्य (विशेष रूप से बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश और असम), जिनका प्रदर्शन देश में प्राथमिक शिक्षा स्तर के मामले में खराब रहा है, वे केरल शिक्षा मॉडल का अनुकरण कर सकते हैं।

शिक्षा का केरल मॉडल : केरल, जिसने बहुत पहले वर्ष 1991 में ही पूर्ण साक्षरता के लक्ष्य को प्राप्त कर लिया था, ने एक बार स्वयं को पुन: प्रमाणित करते हुए दिखा दिया है कि प्राथमिक स्तर पर भी पूर्ण साक्षरता के लक्ष्य को प्राप्त करना संभव है। हालाँकि इस सफलता की जड़ों को वर्ष 1817 के रानी गौरी पार्वती बाई के ऐतिहासिक शाही निर्देश से जोड़कर देखा जा सकता है, जिसके तहत शिक्षा को राज्य की 'जिम्मेदारी' के रूप में घोषित किया गया था।

इसके साथ ही निर्देश में इस बात पर भी जोर दिया गया कि शिक्षा के लिये निर्दिष्ट खर्च तय करने के लिये 'राजनीतिक अर्थव्यवस्था' की अपेक्षा 'राजनीतिक इच्छाशक्ति' अधिक महत्त्वपूर्ण है। क्रमिक रूप से चुनी गई सरकारों के प्रयासों के परिणामस्वरूप केरल देश में उच्चतम साक्षरता दर और सौ प्रतिशत प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा नामांकन के लिये जाना जाता है। प्राथमिक शिक्षा को सार्वभौमिक बनाने के लिये केरल सरकार ने अक्तूबर 2014 में 'अथुल्यम' (Athulyam) नामक एक विशेष योजना की शुरुआत की। इसके तहत व्यापक सर्वेक्षणों के माध्यम से पंचायतों में रहने वाले ऐसे लोगों की पहचान की गई जिन्होंने अब तक अपनी प्राथमिक शिक्षा पूरी नहीं की थी या जिन्होंने अपनी प्राथमिक शिक्षा पूरी करने से पहले ही कुछ कारणों से स्कूल छोड़ दिया था। इसके अगले चरण में उन्हें फिर से अध्ययन

''इसके साथ ही निर्देश में इस बात पर भी जोर दिया गया कि शिक्षा के लिये निर्दिष्ट खर्च तय करने के लिये 'राजनीतिक अर्थव्यवस्था' की अपेक्षा 'राजनीतिक इच्छाशक्ति' अधिक महत्त्वपूर्ण है। क्रमिक रूप से चुनी गई सरकारों के प्रयासों के परिणामस्वरूप केरल देश में उच्चतम साक्षरता दर और सौ प्रतिशत प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा नामांकन के लिये जाना जाता है। प्राथमिक शिक्षा को सार्वभौमिक बनाने के लिये केरल सरकार ने अक्तूबर 2014 में 'अथुल्यम' (Athulyam) नामक एक विशेष योजना की शुरुआत की।''

करने और परीक्षा में बैठने के लिये राजी करने का प्रयास किया गया। इसके पश्चात् उन्हें पाँच माह का प्रशिक्षण प्रदान किया गया, जिससे वे चौथी कक्षा के समकक्ष परीक्षा में शामिल हो सकें। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन ने केरल की आर्थिक और सामाजिक सफलता का श्रेय इस राज्य में स्कूली शिक्षा के विस्तार की निरंतरता को दिया है, जो सार्वजनिक नीतियों और कार्रवाई पर आधारित रही है।

शिक्षा के सार्वभौमिकरण में चुनौतियाँ : भारत का संविधान 14 वर्ष तक के सभी बच्चों के लिये निशुल्क और अनिवार्य शिक्षा उपलब्ध कराने का प्रावधान करता है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये भारत सरकार द्वारा 'शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009' लागू किया गया। हालाँकि प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण का लक्ष्य अभी भी हमारी पहुँच से बहुत दूर है। इसके लिये उत्तरदायी कारकों में से कुछ निम्नलिखित हैं—

कम सार्वजनिक व्यय : भारत 'इंचियोन घोषणा' (Dncheon DecDaration) का एक हस्ताक्षरकर्ता देश है और इस घोषणा में यह उम्मीद की जाती है कि सदस्य देशों द्वारा 'सतत् विकास लक्ष्य (SDG)-4' को प्राप्त करने के लिये शिक्षा पर अपने सकल घरेलू उत्पाद का 4-6% खर्च किया जाएगा।

निजी क्षेत्र की बढ़ती भागीदारी : कई रिपोर्ट और उपलब्ध आँकड़े शिक्षा क्षेत्र में बढ़ते निजीकरण को रेखांकित करते हैं। इसके साथ ही एक बड़ी संख्या ऐसे बच्चों की भी है जो प्राथमिक स्तर पर ही शिक्षण प्रणाली से बाहर हो रहे हैं तथा प्रणालीगत अक्षमताओं के कारण

''प्रत्येक गाँव या शहरी क्षेत्र में एक गाँव या मोहल्ला स्कूल समिति को अनिवार्य बनाया जाना चाहिये। ऐसी समिति भवनों, खेल के मैदानों और स्कूल के बगीचों के निर्माण और रखरखाव, सहायक सेवाओं के प्रबंधन, उपकरणों की खरीद आदि की देखरेख करेगी। अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने के लिये समिति के पास राज्य सरकार से दान और अनुदान सहायता के माध्यम से पर्याप्त धनराशि होगी। उदाहरण के रूप में केरल की क्रमिक सरकारों ने शिक्षा के लिये पूंजी परिव्यय में वृद्धि के साथ-साथ स्थानीय निकायों के माध्यम से शिक्षा के विकेंद्रीकृत वित्तपोषण को बढ़ावा दिया है।''

शिक्षा की लागत बढ़ रही है और कई छात्र डेटा व लैपटॉप जैसे आवश्यक संसाधनों के अभाव में आत्महत्या करने को विवश हो जाते हैं।

गुणवत्ता का मुद्दा : अनिवार्य शिक्षा के सार्वभौमिकरण के वांछित लक्ष्य प्राप्त करने में विफलता का एक कारण यह भी रहा है कि प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता को नहीं बनाए रखा जा सका है। पिछले कई वर्षों से 'असर' (ASA•) सर्वेक्षण लगातार देश के विभिन्न राज्यों में प्राथमिक शिक्षा में सीखने के परिणामों की खराब स्थिति को दर्शाता रहा है।

अन्य कारक : माता-पिता की निरक्षरता और अनदेखी, स्कूल तथा स्थानीय समुदाय के बीच सहयोग की कमी एवं शिक्षकों की भर्ती में भ्रष्टाचार जैसे कारक शिक्षा के सार्वभौमिकरण के लक्ष्य को प्रभावित करते हैं।

आगे की राह, सरकार की सक्रिय भूमिका: शिक्षा को सार्वभौमिक बनाने के लिये राज्य को स्कूली स्वास्थ्य, मध्याह्न भोजन, पाठ्य पुस्तकों की मुफ्त आपूर्ति, लेखन सामग्री, स्कूल की वर्दी आदि जैसी सहायक सेवाएँ प्रदान करने हेतु संसाधन जुटाने चाहिये। केरल मॉडल से पता चलता है कि पोषण, स्वास्थ्य, स्वच्छता आदि से संबंधित व्यापक हस्तक्षेप मानव विकास में स्थायी वृद्धि/बढ़त प्राप्त करने में सहायता कर सकते है।

सामाजिक लेखा परीक्षण : प्रत्येक गाँव या शहरी क्षेत्र में एक गाँव या मोहल्ला स्कूल समिति को अनिवार्य बनाया जाना चाहिये।

ऐसी समिति भवनों, खेल के मैदानों और स्कूल के बगीचों के निर्माण और रखरखाव, सहायक सेवाओं के प्रबंधन, उपकरणों की खरीद, आदि की देखरेख करेगी। अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने के लिये समिति के पास राज्य सरकार से दान और अनुदान सहायता के माध्यम से पर्याप्त धनराशि होगी। उदाहरण के रूप में केरल की क्रमिक सरकारों ने शिक्षा के लिये पूंजी परिव्यय में वृद्धि के साथ-साथ स्थानीय निकायों के माध्यम से शिक्षा के विकेंद्रीकृत वित्तपोषण को बढ़ावा दिया है।

सिविल सोसाइटी की भागीदारी को प्रोत्साहन : केरल की सफलता सरकार के विभिन्न विभागों, अधिकारियों, स्वयंसेवकों, गैर-सरकारी संस्थाओं और मैत्रीपूर्ण संगठनों के सामूहिक प्रयासों के कारण ही संभव हो सकी है।

निष्कर्ष : व्यापक साक्षरता के लिये सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह आर्थिक विकास, सामाजिक संरचना के आधुनिकीकरण और लोकतांत्रिक संस्थानों के प्रभावी कामकाज हेतु एक बुनियादी आवश्यकता है। साथ ही यह सभी नागरिकों को अवसर की समानता प्रदान करने के लिये आवश्यक अनिवार्य पहला कदम होगा। ऐसे में समग्र रूप से भारतीय समाज द्वारा प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण को प्राप्त करने के लिये आवश्यक कदम उठाए जाने चाहिये।

लेखक पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, उत्तरप्रदेश शासन में संयुक्त सचिव हैं।
ई-मेल : response50123@gmail.com

डॉ. साकेत सहाय

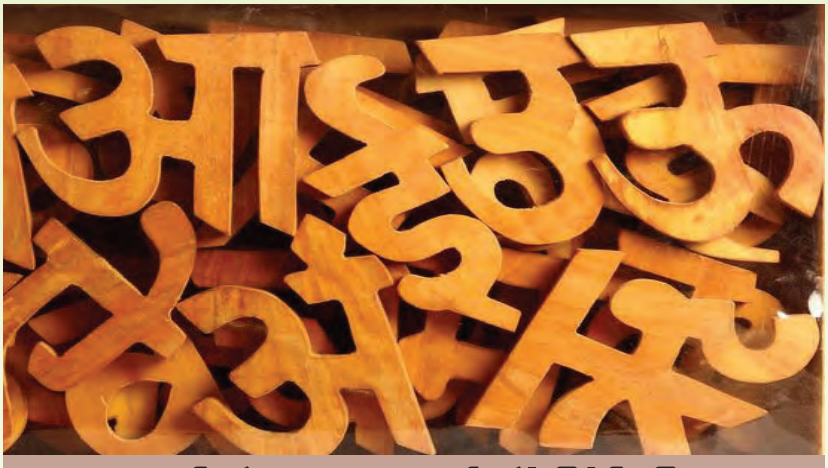

आजादी के अमृत वर्ष में हिंदी दिवस

एक और सितंबर माह। फिर से हिंदी की महिमा गान का आगाज। सरकारी और कुछ निजी कार्यालयों में हिंदी दिवस, हिंदी पखवाड़ा, हिंदी माह का आयोजन। फिर से वही वादे, फिर से वही अंदाज, पर आगे...फिर से अँग्रेजी महारानी। कभी-कभी मन में यह टीस भी उठती है कि आखिर कब तक हिंदी को बढ़ावा देने का कागजी प्रयास चलता रहेगा? कब इसे धरातल पर उतारा जाएगा। आयोजन-उत्सव गलत नहीं, भारत तो उत्सव-आयोजनों का देश है, फिर हमें राष्ट्रभाषा, राजभाषा के उत्सव से परहेज-खीज क्यों? क्योंकि आजादी के अमृत वर्ष में भी भारत की राजभाषा की बुनियादी स्थिति बहुत हद तक संक्रमण की बनी हुई है।

यह दुर्भाग्य है कि हिंदी के मामले में भारत की पूरी व्यवस्था संतुलित एवं प्रगामी सोच के अभाव में कार्य करती है। यह स्थापित सत्य है कि भाषा का मामला मात्र भावुकता का नहीं बल्कि ठोस यथार्थ का है। पर हिंदी के मामले में आज भी हम सभी भावुक होकर ही ज्यादा कार्य करते हैं। इसका कुपरिणाम यह है कि यथार्थ में अँग्रेजी ही राज व्यवस्था पर आज भी कायम है। सबसे दु:खद स्थिति यह है कि जिस हिंदी ने अपने ठोस सामाजिक एवं राजनीतिक यथार्थ के बल पर पूरे देश में स्वीकार्यता हासिल की थी। यह तथ्य है कि हिंदी ने अपने लोकसत्ता के बल पर 'राष्ट्रभाषा से संवैधानिक राजभाषा' का सफर तय किया है। मगर बाद में तंत्र एवं व्यवस्था के घालमेल ने सब कुछ पीछे कर दिया। हिंदी यथार्थ से दूर होती चली गयी। भाषिक हीनता की सोच के कारण हिंदी यथार्थ से मुकाबला कर पाने में भी सक्षम नहीं रही।

यह सत्य है कि भावुकता की वजह से कभी देश भर में खादी चल पड़ी थी। देशभक्ति भी एक प्रकार की भावुकता ही है जो राष्ट्रीय संकट के समय सभी भारतीयों को ऐक्यबद्ध करती है। कभी हिंदी भी इसी राष्ट्रीय प्रेम की वजह से देश भर में स्वीकार्य हुई। यह भावुकता ही है कि हम उन आईआईटी इंजीनियरों को अपना मानते हैं जो सरकारी अनुदान के बल पर पढ़ाई कर विदेशी धरती की सेवा कर रहे है जबकि हमारा देश आज भी तकनीक के मामले में पिछड़ा है। बस हम इस बात पर खुश हो लेते हैं कि गूगल और माइक्रोसॉफ्ट का सीईओ भारतीय है। हिंदी के मामले में भी वही स्थिति है। भले ही हम यह जानकर खुश हो जाए कि हिंदी पूरी दुनिया में पहले नंबर की भाषा बन चुकी है। पर समाज मात्र इस कोरे यथार्थ और भावुकता से नहीं चलता। समाज वास्तविकता की धरातल पर चलता है और इस मामले में यथार्थ यहीं है कि व्यवस्थागत कारणों से हिंदी विज्ञान, तकनीक के मंच पर आज भी बहुत पीछे है। जिसका नुकसान हमारी मौलिक सोच पर पड़ रहा है। हमारी युवा पीढ़ी भाषाई विकलांगता की स्थिति में जी रही है।

'विदेशी भाषा हमें मौलिकता से दूर करती है।'

अक्सर, मैं इस महसूस किए गए कथन को दोहराता रहता हूँ। फिर भी भारत की भाषाई विडंबना यह है कि हम एक विदेशी भाषा के कुचक्र से अपने-आप को निकाल पाने में दीर्घ काल से असफल ही रहे है। दोष किसी एक को देने से क्या होगा? क्योंकि इस कुचक्र को बनाए रखने में समाज, व्यवस्था सभी की मिलीभगत है। भले ही हिंदी कागजों में राजभाषा बन गई, पर हमारी आत्महीनता की वजह से यह आजादी के 75 वर्ष बाद भी अपने अधिकार से महरूम है। हिंदी की इसी स्थिति पर विचार करते हुए भारतीय संस्कृति के मर्मज्ञ डॉ. विद्यानिवास मिश्र कहते हैं-झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने कहा था, 'मेरी झांसी मुझे वापस चाहिए।' मैं भी हिन्दी के लेखक की हैसियत से यही मांगता हूँ कि मेरा तो कोई प्रदेश नहीं, कोई वर्ग नहीं, मजहब नहीं, सिर्फ एक देश है, उसे वापस लाओ। बंद करो यह ढोंग कि हिन्दी संपर्क भाषा है। सारा राज-काज अँग्रेजी में, फारसी में या लैटिन में चलाओ! हिन्दी के विकास के मालिकों, हिन्दी को जीनो दो, छूछे सम्मान का जहर न दो, हिन्दी को, देश को वापस बुलाने का अवसर दो। (अस्मिता के लिए-से साभार)

यह सिद्ध सत्य है कि कोई भी भाषा अपने मूल स्वरूप में कभी-भी हीन नहीं होती, परंतु सरकार की नीतियों के तहत हिंदी समेत भारत की सभी भाषाएँ व्यावहारिक तौर पर हीन बनती चली गई या जान-बूझकर बना दी गयी। और, एक पूरी प्रक्रिया के तहत अँग्रेजी को बतौर श्रेष्ठ भाषा के रूप में स्थापित किया गया। चूंकि यह व्यवस्था एक खास वर्ग के लिए अत्यंत उपयोगी रही, अत: इसे बनाए रखने हेतु सभी प्रकार की नीतियाँ अपनाई गई। क्या यह दुर्भाग्य का प्रश्न नहीं है कि देश की आजादी के अमृत वर्ष में उच्चतम न्यायालय तथा देश के 24 में से 20 उच्च न्यायालयों में अँग्रेजी के साथ भारतीय भाषाओं का प्रयोग कोसों दूर है? देश की सिविल सेवाओं में भी हिंदी एवं भारतीय भाषाओं से भेदभाव आज भी जारी है। हिंदी के प्रति इस भेदभाव के दर्द को एक पूरी पीढ़ी ने महसूस किया। पर व्यवस्था की ताकत ने उसे भी अँग्रेजी की गोद में जाने को मजबूर किया है। अब इस देश में कोई आयंगर, पुरुषोत्तम दास टंडन, सुभाष घोष, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सुब्रमण्यम भारती, राजा रवि वर्मा, राम मनोहर लोहिया, महात्मा गाँधी, राजेन्द्र प्रसाद आदि पैदा नहीं होते और न व्यवस्था इन्हें पनपने देती है।

ऐसे में 'आत्मनिर्भर भारत' का स्वप्न देखने वाली इस व्यवस्था से यह प्रश्न जरूर पूछा जाना चाहिए कि क्या आजादी के इतने वर्षों बाद भी कोई अपना वैज्ञानिक चिंतन देश की राष्ट्रभाषा या राजभाषा में प्रस्तुत कर सकता हैं? हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के प्रति स्पष्ट सोच के अभाव के कारण क्या यह सत्य नहीं है कि मूल चिंतन, भाव और विचार कभी बंधकर प्रकट नहीं होते? क्या कारण है कि देश के उच्च एवं उच्चतम न्यायालय में, वैज्ञानिक, तकनीकी एवं चिकित्सा संस्थान आदि में हिंदी में शोध-पत्र प्रस्तुत करना आज भी श्रेयस्कर नहीं माना जाता?

भारत में हिंदी अथवा दूसरी भारतीय भाषाओं के साथ अंग्रेजी भाषा का यह द्वंद बहुत हद तक भावुकता बनाम यथार्थ का ही है। अर्थात यह कि भावुकता में हम भले ही कह लें कि हिंदी या दूसरी भारतीय भाषाएं किसी भी मामले में अंग्रेजी से कमतर नहीं है। पर, यह दु:खद सच्चाई है कि हमने हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं की ऐसी स्थिति खुद ही निर्मित कर दी है। भले हम में से अधिकांश इस व्यवस्था को कोसें। कहने के लिए यह भी कहा जा सकता है कि हममें से अधिकांश अपनी मातृभाषा से प्रेम करते है पर उनमें प्रतिबद्धता का अभाव है। एक विदेशी भाषा के प्रति यह अंतहीन प्रेम एवं हीनता-बोध की पराकाष्ठा नहीं तो और क्या है कि तमाम दुश्वारियों के बीच यदि अधिकारी से लेकर क्लर्क और चपरासी तक, अपना और अपने परिवार का पेट काट कर भी, अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में भेजना चाहते हैं और भेज भी रहे है तो इसका कुछ तो मतलब है?

समय-समय पर प्रकाशित एवं प्रसारित संचार माध्यमों की रिपोर्टों से यह भी स्पष्ट है कि देश भर में अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में प्रवेश लेने वाले छात्रों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। भले ही हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में पढ़ने वालों की कुल संख्या अब भी बहुत अधिक है। लेकिन यह भी दुर्भाग्य का विषय है कि सफल और संपन्न वर्ग के ऐसे व्यक्ति विरल ही होंगे जो अपने बच्चों की पढ़ाई स्वेच्छा से अंग्रेजी माध्यम में नहीं करवा रहे है। यह भी सत्य है कि जैसे-जैसे मध्य वर्ग या निम्न मध्यम वर्ग के लोगों की संख्या बढ़ेगी, हिंदी या भारतीय भाषाओं की स्थिति में कमी ही दर्ज की जाएगी। क्योंकि माहौल भी यही है। ऐसे में नयी शिक्षा नीति आशा की किरण जगाती है पर तब जब

''भारत में हिंदी अथवा दूसरी भारतीय भाषाओं के साथ अंग्रेजी भाषा का यह द्वंद बहुत हद तक भावुकता बनाम यथार्थ का ही है। अर्थात यह कि भावुकता में हम भले ही कह लें कि हिंदी या दूसरी भारतीय भाषाएं किसी भी मामले में अंग्रेजी से कमतर नहीं है। पर, यह दु:खद सच्चाई है कि हमने हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं की ऐसी स्थिति खुद ही निर्मित कर दी है। भले हम में से अधिकांश इस व्यवस्था को कोसें। कहने के लिए यह भी कहा जा सकता है कि हममें से अधिकांश अपनी मातृभाषा से प्रेम करते है पर उनमें प्रतिबद्धता का अभाव है।''

व्यवस्था और लोग में भाषिक आत्मविश्वास का संचार होगा। तभी लोग और व्यवस्था हिंदी को तरजीह देंगे।

अब समय आ गया है कि सरकार को कोरी भावुकता से ऊपर उठकर यह निर्णय लेना होगा कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं को उनका उचित अधिकार मिले। सरकारों को भी यह समझना होगा कि भाषा सिर्फ अभिव्यक्ति का साधन मात्र नहीं। यह एक जीवन व्यवस्था भी है और जब तक उस जीवन व्यवस्था पर निर्णायक प्रहार नही किया जाएगा, जिसमें अंग्रेजी को फूलने-फलने का खतरनाक अवसर मिल रहा है, तब तक हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के बलवती होने की आशा दिवा-स्वप्न मात्र है। क्योंकि जिन घरों में हिंदी या भारतीय भाषाएं जिंदा है वहाँ यह प्रेम या आधुनिक विकास नामक पश्चिमी चिड़िया के अब तक न पहुँचने के ही कारण है।

हालांकि सब कुछ बुरा नहीं है। यह हिंदी के खुद का सामर्थ्य है कि इसने अर्थ जगत के बदलते स्वरूप के अनुसार स्वयं को ढाल लिया है। आज हिंदी की अपनी 'कमर्शियल वैल्यू' है, इसलिए कारोबार, मनोरंजन, परस्पर संवाद और संचार जगत में हिंदी ने अंग्रेजी को चुनौती प्रस्तुत की है। पिछले कुछ वर्षों में हिंदी भाषा की शब्द संपदा का जितना विस्तार हुआ है, उतना विश्व की शायद ही किसी भाषा का हुआ हो। आज इंटरनेट पर हिन्दी की पर्याप्त उपस्थिति है। गूगल जैसी तकनीकी क्षेत्र की दिग्गज कंपनी ने हिंदी की महत्ता को स्वीकार कर लिया है। गूगल ने हिंदी की ताकत को पहचान कर इसे तकनीकी क्षेत्र में सशक्त भाषा के रूप में स्थापित करने में सहयोग किया है। आज हिंदी विश्व की समृद्ध भाषाओं में गिनी जाती है।''अंग्रेजी जिसे महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय भाषा होने का गौरव प्राप्त है, उसके मूल में कुल शब्द जहां मात्र दस हजार हैं, वहीं हिंदी के पास संस्कृत एवं देश की समरूपी भाषाओं की कुल ताकत से दस लाख से भी अधिक शब्द संख्या की ताकत है।'' संख्या बल के आधार पर आज हिंदी संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा होने का हक मांग रही है। पर इसके पूर्व यह जरूरी है कि हिंदी को उसके घर में उसका वास्तविक हक मिले। जो अधिकार उसे जन, समाज और बाजार ने उसकी क्षमता के बल पर प्रदत्त किया है।

भारत जैसे देश में राष्ट्रीय परिदृश्य के अंतर्गत कार्य करने वाले संगठनों के लिए उत्पाद, सोच एवं रणनीति का एक विस्तृत राष्ट्रीय आधार होना चाहिए। इस राष्ट्रीयता की परिपुष्टि संगठन हिंदी के माध्यम से ही कर सकते हैं। भारतीय जन की अभिव्यक्ति यदि हिंदी में हो तो यह देश के सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक विस्तार को सकारात्मक स्वरूप प्रदान करती है। हिंदी भाषा के प्रयोग द्वारा 135 करोड़ देशवासियों की आकांक्षाओं को पूरा किया जा सकता है। हिंदी ने अपनी इस अपूर्व शक्ति को पहचान लिया है।

मानव संसाधन प्रबंधन, प्रशिक्षण एवं सांगठनिक आत्मीयता में हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका है। भाव या विचार ही मानव को संसाधन के रूप में प्रकट करते हैं। इस प्रकार से राष्ट्रीय स्तर पर मानव संसाधन के हर पहलू में हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका स्थापित है। अखिल भारतीय स्तर पर मानव संसाधन प्रशिक्षण हेतु सबसे उपयुक्त भाषा हिंदी है। हिंदी एवं भारतीय भाषाओं की भूमिका नवोन्मेषी सोच में भी सहायक है। हम सभी के लिए यह चिंता का विषय होना चाहिए कि तकनीक के क्षेत्र में हिंदी एवं भारतीय भाषाएँ जुगाड़ स्तर तक ही उपलब्ध हैं। ऐसे में डिजिटल क्रांति की सार्थकता पर भी प्रश्न चिन्ह खड़े हो जाते है। हिंदी की भूमिका की संवृद्धि के लिए यह जरूरी है कि भारत में इसे ज्ञान-विज्ञान में शिक्षण और संप्रेषण के रूप में विकसित होने वाली भाषा के रूप में मजबूती के साथ स्थापित किया जाए।

इस हेतु विश्वविद्यालयों को हिंदी में

शेष पृष्ठ 15 पर

भारतीय संस्कृति के मूल में है महिला सशक्तिकरण

अनुपमा अग्रवाल

गतदिनों देश की शीर्ष अदालत ने समानता के अधिकार के तहत लड़कियों को एनडीए परीक्षा में शामिल होने का अंतरिम आदेश पारित किया। अभी तक नेशनल डिफेंस एकेडमी के माध्यम से राष्ट्र की सेवा एवं सुरक्षा करने का अधिकार केवल देश के पुरूष वर्ग को प्राप्त था परन्तु जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परचम लहराने वाली लड़कियां भी अब राष्ट्र रक्षा एवं सेवा के क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेंगी। कोर्ट का यह आदेश निश्चित ही,महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा। स्वतंत्र भारत में यह अधिकार भले ही बालिकाओं को पहली बार मिला हो परन्तु वैदिक काल में, बालिकाओं को बालकों के समान शिक्षा दीक्षा के अतिरिक्त शस्त्र चलाने एवं घुड़सवारी करने का समान रूप से प्रशिक्षण दिया जाता था। राष्ट्र की रक्षा एवं सुरक्षा हेतु दुश्मनों से लोहा लेने व रणभूमि में अपने प्राण न्योछावर करने वाली अनेकों वीरांगनाओं से इस देश का इतिहास भरा पड़ा है।

वैदिक हिन्दू संस्कृति-सञ्जयता, संस्कार एवं परम्पराओं के वाहक लाखों वर्ष पुराने वेदों में नारी को पुरुषों से उच्च स्थान दिया गया है। वेदों के अनुसार स्त्री यज्ञीय है अर्थात यज्ञ के समान पूजनीय एवं पवित्र है, साथ ही ज्ञान एवं सुख समृद्धि देने वाली देवी,विदुषी, इंद्राणी जैसे अनेकों नामों से उसे सम्बोधित किया गया है। वैदिक काल में स्त्रियों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति मजबूत और महत्वपूर्ण होने के साथ उसे परिवार और समाज दोनों स्थानों पर उचित सम्मान दिया जाता था। शिक्षा का समान अधिकार होने के कारण उसे समितियों और सभाओं में भाग लेने की पूर्ण स्वतंत्रता थी। घुड़सवारी एवं शस्त्र चलाने में पुरुषों के समान दक्षता हासिल होने के साथ धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेने के अतिरिक्त अनुष्ठान क्रियाएं सम्पन्न कराने वाले पुरोहितों एवं ऋषियों तक का दर्जा प्राप्त था। महिलाएं धर्म शास्त्रार्थ में पुरुषों के समान बढ़ चढ़ कर भाग लेती थीं इसका उदाहरण विदुषी गार्गी हैं जिन्होंने ऋषि याज्ञवल्क्य को शास्त्रार्थ में पराजित किया था। नारियों को परिपक्व उम्र में स्वयंवर के द्वारा अपना वर चुनने की पूर्ण आजादी थी। वैदिक काल में स्त्रियों को पुरुषों के समान या कहें उससे ज्यादा अधिकार,सम्मान एवं स्वतंत्रता प्राप्त थी। वेदों में अनेकों ऐसे श्लोक वर्णित हैं जो नारी के अध्ययन, अध्यापन, राजनीति, श्रवण एवं वाचन में समान अधिकार के पक्षधर होने के साथ समस्त सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यों में भाग लेने का वर्णन करते हैं। मैत्री, अपाला, गार्गी, विश्वआरा, रत्नावली, मुद्रा आदि कुछ ऐसी विदुषी नारियां हैं,जिनकी चर्चा वेदों में की गई है।

वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति अत्यंत सुदृढ़ और सशक्त थी। महिलाएं कृषि एवं बाजार हाट आदि के कार्यों में पुरूषों का हाथ बटाया करती थीं। गणिकाएं भी नृत्य, संगीत, श्रृंगार, गायन आदि में कुशल होती थीं। नृत्य व संगीत उनकी आजीविका के साधन थे,वे केवल मनोरंजन की सामग्री मात्र नहीं थीं वरन संगीत की उपासना के साथ राज्यों में युद्ध के भेदिये जैसे दुष्कर कार्यों के लिए भी समर्पित रहती थीं वे आय का एक भाग राज्य को कर के रूप में भी देती थीं। नारी द्वारा सूत कातना,वस्त्र बुनने आदि का उल्लेख भी इतिहास में मिलता है। 11वीं सदी से लेकर 18वीं सदी के मध्य विदेशी आक्रमणकारियों एवं मुगलों के शासन काल में महिलाओं की जिदंगी बद्तर हो गई। उन पर अत्याचार होने लगे तथा अधिकारों का हनन होने के कारण उन्हें गुलामों की जिंदगी जीने को मजबूर होना पड़ा। इस काल में रानी लक्ष्मीबाई, जीजाबाई, चिन्नम्मा, बेगम हजरत महल, पद्मावती आदि कुछ ऐसी वीरांगनाएं हैं जिन्होंने अपनी बहादुरी, साहस एवं हिम्मत के बल पर स्वयं के स्वाभिमान को बचाये रखते हुए राष्ट्र की रक्षा हेतु अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। 19वीं सदी में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात पुन: महिलाओं की स्थिति में सुधार शुरू हुआ। शिक्षा की अनिवार्यता ने महिलाओं को न केवल घर की चारदीवारी से बाहर निकाला बल्कि समान अधिकारों के चलते महिलाओं को पुरुषों के बराबर लाकर खड़ा किया। शिक्षा के कारण महिलाएं रूढ़िवाद की कोठरी से बाहर निकल स्वयं अपने पैरों पर खड़े होने लगीं और कभी पुरूष को बैसाखी बनाकर चलने वाली महिलाएं स्वयं अपने बलबूते आसमान छूने लगीं।

वर्तमान परिदृश्य में महिलाएं न केवल घर परिवार को भलीभांति संभाल रही हैं बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी प्रतिभा के बल पर स्वयं को नए मुकाम पर स्थापित करने में भी सफल हो रही हैं। महिलाओं को उनकी प्रतिभा निखारने एवं आगे बढ़ाने में वर्तमान मोदी सरकार की भी अहम भूमिका रही है। सरकार द्वारा वंचित बस्तियों की महिलाओं को आर्थिक रूप से सक्षम एवं स्वावलंबी बनाने के लिए विभिन्न योजनाएं चलाई जा रही हैं। शिक्षा के अतिरिक्त महिलाओं के चहुंमुखी विकास को ध्यान में रखते हुए कौशल विकास योजना के तहत युवक युवतियों को निशुल्क प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है तथा प्रशिक्षण के उपरांत अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए बैंकों से कम ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध कराने की सरकार की योजना चालू है, ताकि घरों अथवा फैक्ट्री में कार्य करने वाली महिलाएं आर्थिक शोषण से बच सकें और छोटे पैमाने पर घर से अपना व्यापार चालू कर सकें । महिला सशक्तिकरण को लेकर वर्तमान सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयास कोरोना काल में रंग लाते दिखे। लॉक डाउन के समय जब आमजन घर की चारदीवारी के भीतर रहने को मजबूर था और काफी लोगों की नौकरी पर संकट आने के कारण रोजीरोटी छिन गई थी। उस समय महिलाओं ने अचार, पापड़, मठरी, मास्क, राखी निर्माण व हस्तशिल्प सामग्री आदि का घर से निर्माण कर उसका ऑनलाइन व्यापार चालू कर

''महिलाओं को उनकी प्रतिभा निखारने एवं आगे बढ़ाने में वर्तमान मोदी सरकार की भी अहम भूमिका रही है। सरकार द्वारा वंचित बस्तियों की महिलाओं को आर्थिक रूप से सक्षम एवं स्वावलंबी बनाने के लिए विभिन्न योजनाएं चलाई जा रही हैं। शिक्षा के अतिरिक्त महिलाओं के चहुंमुखी विकास को ध्यान में रखते हुए कौशल विकास योजना के तहत युवक युवतियों को निशुल्क प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है तथा प्रशिक्षण के उपरांत अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए बैंकों से कम ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध कराने की सरकार की योजना चालू है, ताकि घरों अथवा फैक्ट्री में कार्य करने वाली महिलाएं आर्थिक शोषण से बच सकें और छोटे पैमाने पर घर से अपना व्यापार चालू कर सकें। ''

न केवल अपने परिवार का पेट पाला बल्कि स्वयं आत्मनिर्भर बन अब अन्य लोगों को रोजगार प्रदान कर रही हैं।

आज की नारी ने यह साबित कर दिया है कि वह कोमल है पर कमजोर नहीं। उसमें पन्नाधाय का त्याग है तो रानी लक्ष्मीबाई सा साहस भी, अवनि चतुर्वेदी सी बहादुरी है तो अरुणिमा सिंह जैसा साहस भी,कल्पना चावला व सुनीता विलियम्स जैसी अंतरिक्ष विजय करने की क्षमता है तो बछेंद्री पाल जैसी पर्वत फतह करने की हिम्मत भी,पी टी उषा जैसा जीत का जज्बा है तो लक्ष्मी सॉ जैसी जीवटता भी,दीपा कर्माकर जैसा जुनून है तो सुरसम्राज्ञी लता मंगेशकर जैसी मधुरता भी, स्व. सुषमा स्वराज जैसी राजनीतिज्ञ है तो इंदिरा नूई जैसी सफल व्यवसायी भी। राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक आदि सभी क्षेत्र में न जाने ऐसे कितने ही उदाहरण भरे पड़े हैं जो महिला सशक्तिकरण के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं जो ये दर्शाते हैं कि आज की नारी अबला नहीं सबला है जो विपरीत परिस्थितियों में भी सक्षम और सबल बन परिवार के साथ राष्ट्र की प्रगति,रक्षा और निर्माण में अपनी अहम भूमिका निभाने की हिम्मत रखती है। महर्षि दयानंद सरस्वती जी व स्वामी विवेकानंद जी का कथन था कि जब तक महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं होगा तब तक विश्व का कल्याण नहीं हो सकता, किसी भी पक्षी का एक पंख से उड़ना सम्भव नहीं है।

आज भारत सबसे तेज गति से आर्थिक तरक्की प्राप्त करने वाले देशों में शुमार हो गया है, इसमें कहीं न कहीं महिलाओं की भी अहम भागीदारी है निश्चित ही,नारी की स्थिति में निरंतर सुधार, राष्ट्र की प्रगति का मापदंड है।

लेखिका अलीगढ़ की वरिष्ठ साहित्यकार हैं।
ई-मेल : response50123@gmail.com

पृष्ठ 13 का शेष भाग

निर्वचन-विधि का विकास करना होगा। उदाहरण के लिए, विधि की शिक्षा, इसके जानने-समझने, अर्थ-बोध की शिक्षा है। विधि का अर्थ-बोध एक निर्वचन एवं व्याख्या की प्रणाली है और इस हेतु भारतीय शिक्षा पद्धति को भारतीय परंपराओं, संस्कृति, भाषा की शरण में जाना होगा। साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय मन का विधिशास्त्र, ज्ञान-विज्ञान की प्रणाली विकसित करनी होगी। आज संस्कृत की पुत्री लोकभाषा हिंदी भारत में उच्च शिक्षा में भारतीय वाक् के रूप में अल्पांश रूप में ही उपस्थित है। इसे बदलने हेतु सभी को समवेत होकर कार्य करना होगा।

समग्रत: आजादी के अमृत वर्ष में यह संकल्प लिया जाए कि आत्मनिर्भरता एवं संवैधानिक हितों की सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को राजनीतिक, आर्थिक, प्रशासनिक, वैज्ञानिक, तकनीकी व औद्योगिक व्यवस्था से जोड़ना ही एकमात्र विकल्प है। इस दिशा में हिंदी भाषी राज्य के साथ ही देश के सभी राज्यों को पहल करनी होगी। अन्यथा वहीं 'ढाक के तीन पात'। हिंदी को लागू करने के लिए सबसे बड़ी जरुरत है सामाजिक व्यवस्था को बदलने की। यह तथ्य है कि हिंदी की जमीन सामान्य जन से जुड़ी है, तो अंग्रेजी का संबंध भारत में शोषण और संग्रह की प्रक्रिया से है। इस प्रक्रिया में प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से शामिल हुए बगैर आप संपन्नता की सीढ़ियां कभी नही चढ़ सकते। हमारा सत्ता प्रतिष्ठान शोषण और संग्रह की इस प्रक्रिया का प्रमुख एजेंट बन चुका है। इसमें हमारी सारी राजनैतिक धारायें शामिल है।

अमृत वर्ष के इस विशेष 'हिंदी दिवस' के अवसर पर सरकार एवं व्यवस्था से अपील है कि सभी भारतीय भाषाओं को साथ लेते हुए राष्ट्रभाषा हिंदी को भारतीय संविधान के अनुच्छेद-351 की भावना के अनुरूप सशक्त किया जाए। संवैधानिक मूल्यों की रक्षा के लिए भी यह जरूरी है कि सरकार नयी शिक्षा नीति में स्वतंत्रता आंदोलन की भाषा, एकता व अखंडता की भाषा, राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा 'हिंदी' का स्पष्टता से सम्मान करें। राष्ट्रभाषा किसी भी देश की आत्मा होती है अत: इसका समुचित सम्मान करना प्रत्येक भारतवासी का कर्तव्य है। तभी हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के संवैधानिक अधिकार का सम्मान होगा। जय हिंद! जय हिंदी!!

लेखक पंजाब नेशनल बैंक,मंडल कार्यालय, पटना में वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) हैं।
ई-मेल : response50123@gmail.com

प्रो. फूलचन्द जैन प्रेमी

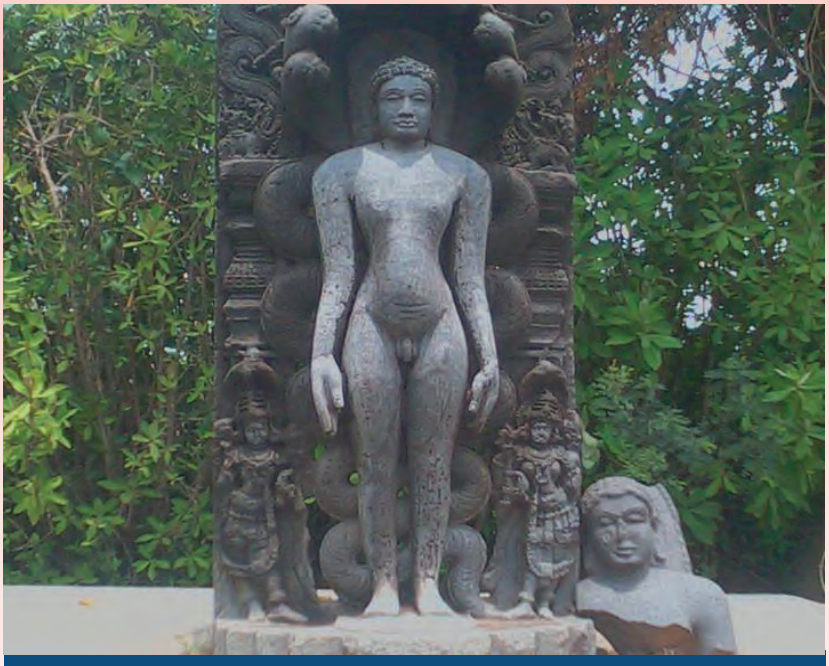

वाराणसी की प्राचीन जैन संस्कृति एवं परम्परा-4

''आत्म-कल्याण के बाद, अर्थात् जन-जन के कल्याण हेतु काशी, कोशल, पांचाल, मरहटा, मारु, मगध, अवंती, अंग-बंग-कलिंग आदि सभी क्षेत्रों में भ्रमण करते हुए धर्मोपदेश के द्वारा अहिंसा, सत्य, आदि सिद्धांतों का प्रचार एवं धर्मान्धता, पाखंड, ऊंच-नीच की भावना-आदि दोषों को दूर करने का उपदेश देते और विहार करते हुए हजारीबाग के निकट सम्मेद शिखर पहुंचे जहां प्रतिमायोग धारण करते ही श्रावण शुक्ला सप्तमी की प्रातः अवशिष्ट अघातियों के कर्मों का क्षय करके उन्होंने मोक्ष (निर्वाण) प्राप्त किया। उनके आदर्शपूर्ण जीवन और धर्म-दर्शन की लोकव्यापी छवि आज भी संपूर्ण भारत तथा इसके सीमावर्ती क्षेत्रों और देशों में विविध रूपों में दिखलाई देती है।'

गतांक से आगे

हमारे पौराणिक कथानक के अनुसार पार्श्वनाथ के जन्म के पूर्व उनकी माता वामादेवी ने रात्रि के अंतिम प्रहर में सोलह मांगलिक स्वप्न देखे, जिनका फल था-पार्श्वनाथ अपनी मां के गर्भ में आए। अत: वैशाख कृष्ण द्वितीया को विशाखा नक्षत्र में आनत स्वर्ग से समागत पार्श्वनाथ के पूर्व भव के जीव आनतेंद्र को जैसे ही माता ने अपनी पवित्र कोख में धारण किया कि माता प्राची दिशा की भांति कांतियुक्त हो गईं।

नौ माह पूर्ण होते ही पौष कृष्णा एकादशी को अनिल योग विशाखा नक्षत्र में जिस पुत्र का जन्म हुआ वही आगे चलकर तीर्थंकर पार्श्वनाथ बने। वे तीस वर्ष तक कुमारावस्था में रहे। फिर उन्होंने पौष कृष्ण एकादशी के प्रात: तीन सौ राजाओं के साथ मुनि दीक्षा ग्रहण की।

संयम और ध्यान साधना में आपको अनेकानेक भयंकर कष्टों का सामना करना पड़ा, किंतु आप उनसे किंचित विचलित हुए बिना तपश्चरण में लीन रहे और लंबी साधना के बाद उन्हें चैत्र कृष्ण चतुर्थी को सर्वोच्च केवलज्ञान की प्राप्ति हो गयी। इसकी प्राप्ति के साथ ही अर्हन्त पद प्राप्त करके वे सर्वज्ञ-सर्वदर्शी बन गए।

आत्म-कल्याण के बाद, अर्थात् जन-जन के कल्याण हेतु काशी, कोशल, पांचाल, मरहटा, मारु, मगध, अवंती, अंग-बंग-कलिंग आदि सभी क्षेत्रों में भ्रमण करते हुए धर्मोपदेश के द्वारा अहिंसा, सत्य, आदि सिद्धांतों का प्रचार एवं धर्मान्धता, पाखंड, ऊंच-नीच की भावना-आदि दोषों को दूर करने का उपदेश देते और विहार करते हुए हजारीबाग के निकट सम्मेद शिखर पहुंचे जहां प्रतिमायोग धारण करते ही श्रावण शुक्ला सप्तमी की प्रात: अवशिष्ट अघातियों के कर्मों का क्षय करके उन्होंने मोक्ष (निर्वाण) प्राप्त किया। उनके आदर्शपूर्ण जीवन और धर्म-दर्शन की लोकव्यापी छवि आज भी संपूर्ण भारत तथा इसके सीमावर्ती क्षेत्रों और देशों में विविध रूपों में दिखलाई देती है। इनकी मूर्ति की पहचान मुख्यत: सप्त फणावली और पादपीठ के मध्य सर्प चिह्न से होती है। यक्ष धरणेन्द्र और यक्षिणी पद्मावती का मूर्तांकन भी इनकी मूर्ति की पहचान में सहयोगी बनते हैं।

लोकव्यापी प्रभाव : अर्धमागधी प्राकृत साहित्य में 'पुरुसादाणीय' अर्थात् लोकनायक श्रेष्ठपुरुष जैसे अति लोकप्रिय व्यक्तित्व के रूप में प्रयुक्त इनके सम्मानपूर्ण विशेषणों का उल्लेख मिलता है। वैदिक और बौद्ध आदि अनेक धर्मों तथा अहिंसा एवं आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत संपूर्ण भारतीय संस्कृति पर इनके चिंतन और प्रभाव की अमिट गहरी छाप आज भी विद्यमान है। वैदिक, जैन और बौद्ध साहित्य में इनका उल्लेख मिलता है तथा व्रात्य, पणि और नाग आदि जातियां स्पष्टत: पार्श्वनाथ की अनुयायी थीं। वर्तमान में भारत में प्रचलित नाग-पूजा भी निश्चियत: इन्हीं से संबंद्ध प्रतीत होती है।

जैनधर्म का प्राचीन इतिहास (भाग 1, पृ. 359) के अनुसार नाग तथा द्रविड़ जातियों में तीर्थंकर पार्श्वनाथ की मान्यता असंदिग्ध है । श्रमण संस्कृति के अनुयायी व्रात्यों में नागजाति सर्वाधिक शक्तिशाली थी। तक्षशिला, उद्यानपुरी, अहिच्छत्र, मथुरा, पद्मावती, कांतिपुरी, नागपुर आदि इस जाति के प्रसिद्ध केंद्र थे। तीर्थंकर पार्श्वनाथ नाग जाति के इन केंद्रों में कई बार पधारे और यहां इनके चिंतन से प्रभावित हो सभी इनके अनुयायी बन गए। इस दिशा में गहन अध्ययन और अनुसंधान से आश्चर्यकारी नये तथ्य सामने आ सकते हैं जो तीर्थकर पार्श्वनाथ के लोकव्यापी स्वरूप को और अधिक स्पष्ट रूप से उजागर कर सकते हैं।

इसी संदर्भ में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रो. जगदीश गुप्त का यह कथन महत्त्वपूर्ण है-

''तीर्थंकर पार्श्वनाथ की महत्ता नागपूजा, यक्ष पूजा और सूर्य पूजा से समर्थित है। इससे यह सिद्ध होता है कि भारतीय संस्कृति में उनकी कितनी लोकप्रियता रही है और कितने रूपों में उन्हें चित्रित एवं उत्कीर्ण किया गया है। भारतीय कलाकारों ने कितनी तन्मयता से उनके स्वरूप को अपनी कल्पना से समृद्ध किया है। नाग-छत्र के भी कितने रूप मिलते हैं-यह पार्श्वनाथ की असंख्य प्रतिमाओं के अनुशीलन से पहचाना जा सकता है। मेरी दृष्टि में भारतीय संस्कृति के स्वरूप को समझने के लिए तीर्थंकर महावीर और गौतम बुद्ध के बाद यदि कोई जैन तीर्थंकर कलात्मक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं, तो वे पार्श्वनाथ ही हैं।

ई. पूर्व दूसरी-तीसरी सदी के जैन धर्मानुयायी सुप्रसिद्ध कलिंग नरेश महाराजा खारवेल भी इन्हीं के प्रमुख अनुयायी थे। अंग, बंग, कलिंग, कुरु, कौशल, काशी, अवंती, पुण्ड, मालव, पांचाल, मगध, विदर्भ, भद्र, दशार्ण, सौराष्ट्र, कर्नाटक, कोंकण, मेवाड़, लाट, कश्मीर, कच्छ, वत्स, पल्लव और आमीर आदि तत्कालीन अनेक क्षेत्रों, राष्ट्रों और देशों का उल्लेख आगमों में मिलता है जिनमें पार्श्वनाथ ने ससंघ विहार करके जन-जन के लिए हितकारी धर्मोपदेश देकर जागृति पैदा की।

भारत के पूर्वी क्षेत्रों, विशेषकर बंगाल, बिहार, उड़ीसा आदि अनेक प्रान्तों के आदिवासी बहुल क्षेत्रों में लाखों की संख्या में बसने वाली सराक, सद्गोप, रंगिया आदि जातियों का सीधा और गहरा संबंध तीर्थंकर पार्श्वनाथ की परंपरा से है। इन लोगों के दैनिक जीवन व्यवहार की क्रियाओं और संस्कारों पर तीर्थंकर पार्श्वनाथ और उनके चिंतन की गहरी छाप है।

इस प्रकार तीर्थंकर पार्श्वनाथ तथा उनके लोकव्यापी चिंतन ने लंबे समय तक धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक क्षेत्र को प्रभावित किया है। व्यवहार की दृष्टि से उनका धर्म सहज था। धार्मिक क्षेत्रों में उस समय पुढेषाण, वित्तैषणा, लोकैषणा आदि के लिए हिंसामूलक यज्ञ तथा अज्ञानमूलक तपों का काफी प्रचलन था किंतु उन्होंने पूर्वोक्त क्षेत्रों में विहार (भ्रमण) करके अहिंसा का जो समर्थ प्रचार किया, उसका समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा और अनेक आर्य तथा अनार्य जातियां उनके धर्म में दीक्षित हो गईं। धर्म के नाम पर हिंसा की जगह अब तक जो भी अहिंसक प्रयोग देखे जा रहे हैं, इनमें पार्श्वनाथ के उपदेशों का ही विशेष प्रभाव है ।

''भारत के पूर्वी क्षेत्रों, विशेषकर बंगाल, बिहार, उड़ीसा आदि अनेक प्रान्तों के आदिवासी बहुल क्षेत्रों में लाखों की संख्या में बसने वाली सराक, सद्गोप, रंगिया आदि जातियों का सीधा और गहरा संबंध तीर्थंकर पार्श्वनाथ की परंपरा से है। इन लोगों के दैनिक जीवन व्यवहार की क्रियाओं और संस्कारों पर तीर्थंकर पार्श्वनाथ और उनके चिंतन की गहरी छाप है।'

आचार्य समन्तभद्र ने आपकी स्तुति करते हुए कहा है—

स सत्य विद्यातपसां प्रणायक: समग्रधीरुग्रकुलाम्बरांशुमान।

मया सदा पार्श्वजिन: प्रणम्यते विलीन मिथ्यापथदृष्टि विभ्रम: ॥5॥

अर्थात् आप सत्य विद्याओं और तपस्याओं के प्रणेता हैं, पूर्णबुद्धि युक्त सर्वज्ञ हैं तथा उग्रवंश रूप आकाश में चंद्रमा के समान हैं। आपने अपने उपदेशों के द्वारा मिथ्यादर्शन आदि अनेक कुमार्ग दृष्टियों को दूर कर सम्यग्दर्शन-ज्ञान और चारित्र्य रूप रत्नत्रय का मार्ग प्रशस्त किया है। इसलिए हे पार्श्व! इन गुणों के कारण मैं सदा आपको प्रणाम करता हूं।

हमारे देश के हजारों नए और प्राचीन जैन मंदिरों में सर्वाधिक तीर्थंकर पार्श्वनाथ की मूर्तियों की उपलब्धता भी उनके प्रति गहरे आकर्षण, गहन आस्था और लोकव्यापी प्रभाव का ही परिणाम है। मध्य एवं पूर्वी देशों के व्रात्य क्षत्रिय उनके अनुयायी थे। गंगा का उत्तर एवं दक्षिण भाग तथा अनेक नागवंशी राजतंत्र एवं गणतंत्र उनके अनुयायी थे। श्रावस्ती के श्रमण केशीकुमार भी पार्श्व की ही परंपरा के श्रमण थे। संपूर्ण राजगृह भी पार्श्व का उपासक था। तीर्थंकर महावीर के माता-पिता तथा अन्य संबंधी पापित्य परंपरा के श्रमणोपासक थे।

महात्मा बुद्ध के जीवन-प्रसंग से पता चलता है कि वे अपनी साधनावस्था में पार्श्व परंपरा से संबद्ध रहे थे। मज्झिमनिकाय, महासिंहनाद सुत्त (1.1.2) के उल्लेखानुसार एक बार बुद्ध अपने प्रमुख शिष्य सारिपुत्र से कहते हैं— ''सारिपुत्र! बोध प्राप्ति से पूर्व मैं दाढ़ी, मूंछों का लुंचन करता था। मैं खड़ा रहकर तपस्या करता था, उकडूं बैठकर तपस्या करता था। मैं नंगा रहता था। लौकिक आचारों का पालन नहीं करता था। हथेली पर भिक्षा लेकर खाता था। बैठे हुए स्थान पर आकर दिए हुए अन्न को, अपने लिए तैयार किए हुए अन्न को और निमंत्रण को भी स्वीकार नहीं करता था। गर्भिणी व स्तनपान कराने वाली स्त्री से भिक्षा नहीं लेता था।'' बुद्ध द्वारा वर्णित यह समस्त आचार जैन साधुओं के हैं। इससे प्रतीत होता है कि गौतम पार्श्वनाथ की परंपरा के किसी श्रमण संघ में दीक्षित हुए और वहां से उन्होंने बहुत कुछ सद्ज्ञान प्राप्त किया। बाद में बुद्ध ने कारणवश अलग होकर मध्यमार्गी बन अपना स्वतंत्र मत चलाया।

कुछ इतिहासकारों का यह भी मानना है कि प्रधान वेदों के बाद उपनिषदों में आध्यात्मिक चिंतन की प्रधानता के समावेश में तीर्थंकर पार्श्वनाथ के चिंतन का काफी प्रभाव है। इस तरह वैदिक परंपरा को आध्यात्मिक रूप प्रदान करने में इनका बहुमूल्य योगदान माना जा सकता है।

इस प्रकार तीर्थंकर पार्श्वनाथ का ऐसा लोकव्यापी प्रभाव व्यक्तित्व एवं चिंतन था कि कोई भी एक बार इनके या इनकी परंपरा के परिपार्श्व में आने पर उनका प्रबल अनुयायी बन जाता था। तभी तो हिंदी जगत के शिखर पुरुष भारतेंदु हरिश्चंद्र ने लिखा: तुमहि तौ पार्श्वनाथ हो पियारे तलफन लागै प्रान बगल तै छिनहु होत न न्यारै!

तुम सौ और पास नहीं कोउ मानहु करि पतियारे।'हरीचंद्र' खोजत तुमही को वेद-पुरान पुकारै॥

इस प्रकार वाराणसी प्रारम्भ से ही जैन संस्कृति का समृद्ध और प्रधान केन्द्र रहा है। वर्तमान में स्याद्वाद विद्यालय, भदैनी, गणेशवर्णी शोध संस्थान नरिया, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, करौंदी, जैसी अनेक विशिष्ट संस्थाओं तथा सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के जैन दर्शन एवं प्राकृत-जैनागम विभाग तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में जैन एवं बौद्ध दर्शन विभाग तथा अन्यान्य विभागों द्वारा इस क्षेत्र में अध्यापन अध्ययन और अनुसंधान के माध्यम से अनेक नये अनुसंधान सामने आ रहे हैं, जो स्वतंत्र निबंध का विषय है। (समाप्त)

लेखक जैन संस्कृति, साहित्य और दर्शन के वरिष्ठ विद्वान हैं।

ई-मेल : response50123@gmail.com

रमेश गुप्ता

अफगानिस्तान की घटना का कश्मीर घाटी पर प्रभाव

अफगानिस्तान में तालिबान ने कब्जा कर लिया है तथा वहां पर तालिबान द्वारा हकुमत चलायी जा रही है। वहीं अफगानिस्तान के इस घटनाक्रम से पाकिस्तान काफी प्रसन्न है, क्योंकि पाकिस्तान की मदद से तालिबान अफगानिस्तान पर अपना परचम फहरा सका है। तालिबान को कहीं भी ज्यादा विरोध का सामना नहीं करना पड़ा। एकमात्र पंजशीर ही ऐसा क्षेत्र बचा है, जहां पर उसको कब्जा करने के लिए न सिर्फ भारी मुश्किल का सामना करना पड़ रहा है, बल्कि उसके काफी लड़ाके भी मारे जा रहे हैं। तालिबान पंजशीर पर कब्जा के लिए लगातार प्रयास जारी रखे हुए है तथा पंजशीर व तालिबान के बीच भीषण युद्ध लगातार जारी है।

वहीं दूसरी ओर अफगानिस्तान पर तालिबान का कब्जा होने का जश्न कश्मीर घाटी में भी मनाया गया तथा उनको बधाई संदेश भी भेजे गए। कुछ ने तो तालिबान से कश्मीर को भारत से मुक्त करवाने की सलाह तक दे दी। इससे कश्मीर के वातावरण में हल्का बदलाव दिखाई दे रहा है तथा आतंकवाद की घटनाओं में वृद्धि हुई है। वहीं स्थिति की गंभीरता को देखते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में अफगानिस्तान की वर्तमान स्थिति तथा उससे देश में विशेषकर कश्मीर घाटी में पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण किया गया तथा यहां पर सर्तकता बढ़ा दी गई है।

प्रदेश में चर्चा चल रही है कि अफगानिस्तान में तालिबान द्वारा कब्जा करने के उपरांत कई जेहादी जो कैद थे, उन्हें छोड़ दिया गया है। छोड़े गए कैदियों में कुछ पाक अधिकृत कश्मीर के भी थे, उन्हें पाकिस्तान द्वारा हमारे देश के विरूद्ध कार्य के लिए कहा जा रहा है ताकि एक बार फिर कश्मीर घाटी में आतंकवाद को बढ़ावा दिया जा सके। इसके लिए घुसपैठ के प्रयास किये जा रहे हैं जो सेना द्वारा विफल कर दिए गए, परंतु कुछ सूत्रों का कहना है कि फिर भी कई संवेदनशील क्षेत्रों से घुसपैठ करने में कुछ आतंकवादी सफल हुए हैं, उनकी संख्या बहुत ज्यादा नहीं है, उनको ढुंढा जा रहा है। कहा जा रहा है कि सीमा के उस पार घुसपैठ के लिए लगभग 300 के करीब आतंकवादी तैयार बैठे हैं। उन्हें सीमा के पास लाया गया है ताकि मौका लगते ही उनकी घुसपैठ करवाई जा सके।

वहीं यह भी चर्चा का विषय बना हुआ है कि घाटी के 50 से 60 युवा आतंकवाद के लिए सक्रिय हुए हैं तथा वह विभिन्न गुटों में भर्ती हुए हैं। पुलिस व सेना द्वारा इसका खंडन किया जा रहा है। इस समय जम्मू-कश्मीर प्रदेश में 250 से 300 तक आतंकवादी अभी भी सक्रिय हैं जो मौका देखते ही किसी न किसी घटना को करने का अवसर ढुंढते रहते हैं। हालांकि आतंकवाद के अधिकांश टाप लीडर सुरक्षाबलों के हाथों मारे जा चुके हैं। अब बहुत ही कम बचे हैं उन्हें नेतृत्व तथा हथियारों की कमी खल रही है, जिससे घाटी में आतंकवाद दम तोड़ता नजर आ रहा है।

घाटी के वातावरण में काफी बदलाव देखने को मिल रहा है। अब पर्यटक कश्मीर घाटी पहुंच रहे हैं। वहां पर फिल्म सिटी बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं ताकि पिक्चरों की शुटिंग बिना किसी डर के हो सकें।

92 वर्षीय हुरियत कांफ्रेंस के नेता अली शाह गिलानी का निधन हो गया है। उनके निधन से हुरियत कांफ्रेंस कमजोर हो गई हैं। कश्मीर घाटी में सबसे ज्यादा प्रभाव भी हुरियत कांफ्रेंस का था। वह कश्मीर घाटी में बंद आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी। हुरियत में अब कोई ऐसा नेता नहीं है जो सही मायने में उनका उतराधिकारी बन सके। कहा जाता है कि अली शाह गिलानी जो ईडी के राडार पर थे तथा कई बार उनसे पूछताछ भी की गई थी। वह डेढ करोड़ की सम्पति छोड़ गए हैं। एनआईए ने भी उन पर शिकंजा कसा हुआ था।

जम्मू-कश्मीर में कोरोना महामारी का प्रकोप कुछ कम हुआ है। प्रतिदिन 100 से भी कम केस आ रहे हैं। ऐसी चर्चा है कि कोरोना की तीसरी लहर सितम्बर के अंत तक आ सकती है। इस बात को लेकर प्रशासन द्वारा कोई ढील नहीं दी जा रही है। शादी समारोह या अन्य धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक कार्यक्रमों में केवल 25 लोगों की संख्या ही रखी गयी है। अधिकांश पार्क बंद ही हैं। रात्रि 8 से सुबह 6 बजे तक प्रतिदिन का कर्फ्यू जारी है। अंतर्राज्यीय बसें अभी तक बंद हैं। ट्रेन सेवा भी काफी सीमित है। बहुत कम रेलगाड़ियां चलाई जा रही है। उनमें बिना रिजर्वेशन चढ़ने की अनुमति नहीं है तथा दो वैक्सीन या आरटीपीसीआर का टैस्ट भी जरूरी है।

आगामी दिनों में काफी त्यौहार आ रहे हैं। सरकार के रवैये से लगता है कि उनमें कोई छूट मिलने वाली नहीं है। इस बार भी रामलीला व दशहरा उत्सव धूमधाम से मनाया जाना मुश्किल लग रहा है। विभिन्न मंदिरों से चलने वाली छड़ी, शोभा यात्राएं भी नहीं निकल सकेंगी। इसके साथ ही अफगानिस्तान की घटना का प्रभाव प्रदेश में किस स्तर तक पड़ता है, यह भी सरकार के लिये चिंता का विषय है।

लेखक चाणक्य वार्ता के जम्मू-कश्मीर ब्यूरो चीफ हैं।
ई-मेल : response50123@gmail.com

कृष्णानंद सागर

कांग्रेस में संघ-प्रेम और संघ-द्वेष की समानांतर लहरें

कांग्रेस और संघ : एक सिंहावलोकन-30

गतांक से आगे...

संघ की स्थापना भले ही डॉक्टर हेडगेवार जी के घर पर कुछ विचारवान वरिष्ठ लोगों द्वारा हुई हो, किन्तु मैदान पर उसका व्यावहारिक रूप डॉक्टर जी ने कुछ बालकों और किशोरों को लेकर आरम्भ किया। बिना कागज, बिना पेंसिल, बिना मेज-कुर्सी के। यह शायद इस प्रकार का विश्व का प्रथम और अभिनव प्रयोग था। खेल-कूद, व्यायाम, संचलन आदि शारीरिक और भारतीय महापुरुषों की कथा-कहानियों के माध्यम से उन्हें संस्कारित करना शुरू किया। वीर भाव के संचार के लिए लाठी शिक्षण भी शुरू किया गया। प्रारंभ में कुछ समय तक एक ही शाखा रखी गई। बाद में एक से अनेक हो गईं और नागपुर से बाहर भी कुछ स्थानों पर संघ शाखाएं स्थापित हो गईं। सन् 1928 तक नागपुर और उसके आस-पास 18 स्थानों पर शाखाएं चल रही थीं।

विट्ठल भाई पटेल : 23 अक्टूबर 1928 को विजया दशमी थी। उस दिन डाक्टर जी के निमंत्रण पर विट्ठल भाई पटेल मोहिते शाखा (जहां आज संघ का केंद्रीय कार्यालय है) पर पधारे थे। घोष के साथ कदम मिलाते हुए लगभग 500 स्वयंसेवकों के अनुशासनबद्ध संचलन को देख कर विट्ठल भाई बहुत प्रसन्न हुए थे। इस अवसर पर स्वयंसेवकों के सम्मुख दिए गए अपने भाषण में उन्होंने कहा—

''यह कार्य मेरे लिए नवीन है, पर इससे मेरे विचारों को चालना मिली है। राष्ट्रीय जीवन में इस कार्य के स्थान के विषय में मैं कोई मत देने में समर्थ नहीं हूं। परंतु इतना कहूंगा कि जगत में ईश्वर को छोड़कर किसी से डरो मत तथा अपने कार्य पर अविचल निष्ठा रख कर जोर से कार्य वृद्धि करो''। (पालकर, डॉ. हेडगेवार चरित्र, पृष्ठ-188)

पं. मदनमोहन मालवीय : इससे पूर्व 1926-27 में पं. मदनमोहन मालवीय भी मोहिते बाड़ा की शाखा देखने आए थे। उस समय उन्होंने ये उद्‌गार प्रकट किए थे—''अन्य संस्थाओं के पास बड़ी-बड़ी इमारतें और बहुत सा कोष रहता है। पर तुम्हारे संघ में मनुष्य बल अच्छा है, यह देखकर मुझे आनंद होता है।'' (पालकर, डॉ. हेडगेवार चरित्र, पृष्ठ-204)

कलकत्ता कांग्रेस : डाक्टर जी सत्ता राजनीति से दूर थे, लेकिन राष्ट्रीय राजनीति से नहीं। 1928 में भी वे मध्य प्रांत कांग्रेस की कार्यकारिणी के सदस्य थे और उस वर्ष के अंत में हुए कलकत्ता अधिवेशन में भी उपस्थित रहे थे। इसी अवसर पर उनकी भेंट सुभाषचंद्र बोस से हुई और दोनों की काफी लम्बी वार्ता देश की परिस्थिति पर हुई। इस भेंट के समय प्रसिद्ध क्रांतिकारी बाबाराव सावरकर भी उपस्थित थे। कलकत्ता अधिवेशन में कांग्रेस के स्वयंसेवकों के बारे में डॉक्टर जी ने अपनी डायरी में लिखा—

''इस बार कलकत्ता कांग्रेस में स्वयंसेवकों की संख्या तीन हजार से ऊपर थी। स्वयंसेवक -विभाग पर पैंसठ हजार रूपया खर्च हुआ। परंतु स्वयंसेवकों का जैसा अनुशासन चाहिए, वैसा नहीं था। कांग्रेस के मण्डप में विशेष भीड़ न होते हुए भी वे ठीक काम नहीं कर सकते थे। अत: एक समय तो सभी स्वयंसेवकों को मण्डप से हटाना पड़ा।'' (पालकर, डॉ. हेडगेवार चरित्र, पृष्ठ-199)

पूर्ण स्वतंत्रता का ध्येय : डॉ. हेडगेवार ने 1920 के नागपुर अधिवेशन के अवसर पर यह प्रयास किया था कि कांग्रेस अपना ध्येय 'विशुद्ध स्वातंत्र्य अर्थात पूर्ण स्वराज्य घोषित करे। लेकिन नेताओं को तब यह बात समझ नहीं आई और इसे मजाक में उड़ा दिया गया। इसके नौ वर्ष बाद 1929 के लाहौर अधिवेशन में 31 दिसंबर की अर्धरात्रि को रावी के तट पर जब 'पूर्ण स्वराज्य' का प्रस्ताव पारित किया गया तो डॉक्टर जी को असीम आनंद हुआ। उन्होंने संघ की सभी शाखाओं को परिपत्र भेज कर यह निर्देश दिया कि 26 जनवरी 1930 को सभी शाखाओं में स्वतंत्रता दिवस मनाया जाए।

इस निर्देश के अनुसार सभी संघ शाखाओं में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था।

जंगल सत्याग्रह : कांग्रेस के द्वारा 1930 में नमक सत्याग्रह शुरू किया गया था, जोकि समुद्र तट पर जाकर किया जाता था। मध्यप्रांत समुद्र से पांच-छ: सौ मील दूर था। इसलिए मध्य प्रांत कांग्रेस ने मध्य प्रांत में नमक सत्याग्रह की बजाए 'जंगल सत्याग्रह' शुरू किया। डॉक्टर हेडगेवार जी ने भी अपने अनेक साथियों सहित जंगल सत्याग्रह में भाग लिया। उन्हें नौ महीने का सश्रम कारावास का दण्ड मिला। उन्हें अकोला कारागृह में रखा गया। यह उनका दूसरा कारावास था।

संघ राजनीतिक धारा से अलिप्त : डॉक्टर जी ने यद्यपि स्वयं को राजनीतिक धारा से सम्बद्ध रखा था, किन्तु संघ को उससे बिल्कुल अलग रखा था। उनकी दृष्टि भविष्य में आने वाली सम्भावित परिस्थिति पर भी थी। विश्व की राजनीतिक खींचातानी में ऐसे भी अवसर कभी-कभी आ जाते हैं जबकि परतंत्र देश अनुशासित एवं आज्ञापालक शक्ति का उपयोग कर विद्रोह कर सकता है। किन्तु इस विद्रोह के सामर्थ्य की सिद्धता यदि पूर्वयोजनानुसार नहीं रही, तो आग लगने पर कुआं खोदने के समान, जरूरत पड़ने पर ही किए गए प्रयत्न विफल होते हैं। इतिहास के इस अनुभव से शिक्षा लेकर ही डॉक्टर जी ने संघ की नींव रखी थी।

संघ रूपी यह पौधा वृक्ष का रूप धारण करने से पहले ही कहीं पाले या ओले की चपेट में न आ जाए, इस बात की वे पूरी सावधानी बरत रहे थे। जब तक संघ पूर्णतया शक्ति-संपन्न होकर अंग्रेजी शासन को चुनौती देने की स्थिति में नहीं आ जाता, तब तक इसे अंग्रेजों की कुदृष्टि से बचाए रखना आवश्यक था। इसलिए उन्होंने संघ को राजनीतिक आंदोलन से अलिप्त रखा। इसी नीति का निर्वाह करते हुए

जंगल सत्याग्रह में जाते समय वे सरसंघचालक पद छोड़ कर गए थे। उस समय उन्होंने अपनी जगह डॉ. परांजपे को सरसंघचालक नियुक्त किया था।

संघ-विरोध का आरंभ : कांग्रेस के लिए डॉ. हेडगेवार का यह चिंतन समझ पाना संभव नहीं था। वह तो प्रस्तावों और आंदोलनों को ही राष्ट्र-कार्य समझ बैठी हुई थी। कांग्रेस में अधिकांश लोग केवल तात्कालिक राजनीतिक दृष्टि से ही विचार करते थे। अत: ऐसे लोग संघ की आलोचना करने लगे थे। परंतु बहुत से कांग्रेसी ऐसे भी थे, जो तात्कालिक राजनीति के साथ-साथ राष्ट्रीय दृष्टि से भी विचार करते थे। ऐसे कांग्रेसी संघ से प्रेम करते थे और हर तरह का सहयोग करते थे। इससे विरोधक कांग्रेसियों को संघ से अधिक चिढ़ होने लगी थी। कुछ स्थानों पर तो उनकी चिढ़ 'शत्रुता' की सीमा तक पहुंच गई।

साकोली से श्री रामभाऊ फाटक ने 26 अक्टूबर 1929 के पत्र में डॉक्टरजी को लिखा—''...राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को शह (मात) देने के लिए प्रांतीय कांग्रेस कमेटी का एक 'सेवा-दल' निर्माण करने का विचार दिखाई दे रहा है।'' दूसरे एक कार्यकर्ता ने लिखा था—''...यहां दशहरा के शुभ मुहूर्त पर हिन्दुस्थानी सेवा दल की शाखा शुरू हो गई तथा इस शाखा के अधिकारियों ने एक महीने के अंदर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का नामोनिशान मिटा डालने की प्रतिज्ञा की है।'' (डॉ. हेडगेवार चरित्र, पृष्ठ-203)

स्पष्ट है कि हिन्दुस्तानी सेवा दल की शाखाएं स्वाधीनता आंदोलन को मजबूत करने के लिए नहीं, अपितु संघ को समाप्त करने के लिए खोली जा रही थीं? इसके कुछ दिन पूर्व दादाराव परमार्थ और कृष्णराव मोहरीर ने भी ऐसी ही कोई जानकारी पत्र द्वारा डॉक्टर जी को भेजी थी। उत्तर में 24 अक्टूबर को डॉक्टर जी ने उन्हें लिखा—''...आप दोनों ने ही अपने पत्र में एक महत्व की बात मुझे बतायी, यह बहुत ही अच्छा किया। मुझे इसकी कल्पना थी ही। हमें इस परिस्थिति को पार करना ही होगा। परमेश्वर सब लोगों को सद्बुद्धि दे, यही हमारी उससे प्रार्थना है। अपनी सद्-असद् विवेक बुद्धि से तथा भगवान का स्मरण कर हमारे काम करने पर यदि किसी को विषाद हो या वह विरोध की सोचे, तो फिर हमारे पास रास्ता ही क्या है? यह राज कारण (राजनीति) है। अत: इस प्रकार की बातों से डरकर कितने दिन चल सकेगे?'' (डॉ. हेडगेवार चरित्र, पृष्ठ-203)

यह थी डॉ. हेडगेवार जी की दृष्टि। विरोधकों के प्रति भी कोई रोष नहीं, कोई द्वेष नहीं।

1932 में नागपुर शाखा के विजया दशमी उत्सव पर डॉक्टर जी ने अपने भाषण में कहा—''...नागपुर प्रांत के बाहर संघ के प्रचार कार्य में कांग्रेस और हिन्दू संगठन में भी भेद नहीं दिखता। इतना ही नहीं, अनेक स्थानों पर कांग्रेस-भक्तों ने ही इस कार्य की सहायता की है। पर नागपुर में यह नहीं होता। मुझे लगता है कि इसका कारण तात्विक न होकर व्यक्तिगत है। किंतु मेरा उनसे अत्यंत विनम्र निवेदन है कि कम से कम अब तो हमारी भूमिका को साफ-साफ समझ कर इस राष्ट्र कार्य को सफल करने में सहयोग करें। संघ की स्थापना हिन्दू जाति को घातक हमलों से रक्षा के लिए तैयार रखने के लिए ही हुई है।'' (डॉ. हेडगेवार चरित्र, पृष्ठ-267)

डॉ. हेडगेवार-जमनालाल बजाज भेंट : राजनीतिक आंदोलनों के अस्थिर वातावरण में कांग्रेस नेताओं को अपने दल की आंतरिक स्थिति देखने का मौका ही नहीं मिला था। 1933 में आकर जब कुछ शांति हुई, तो उनका ध्यान इस ओर गया। उस समय उन्हें मध्य प्रांत में यह दिखा कि कांग्रेस के अनेक प्रमुख कार्यकर्ता स्थान-स्थान पर संघ के काम में जुटे हुए हैं। स्वयं वर्धा में, जोकि गांधी जी का केंद्र था, प्रांतीय कांग्रेस के मंत्री अप्पाजी जोशी भी पिछले कई वर्षों से संघ कार्य में तल्लीन थे और उनके परिश्रम व पुरुषार्थ के कारण वर्धा जिला संघमय बनता जा रहा था।

कुछ कांग्रेस नेताओं को यह बात अच्छी नहीं लगी। अत: वर्धा के सेठ जमनालाल बजाज ने डॉ. हेडगेवार तथा डॉ. शिवराम बालकृष्ण मुंजे के पास राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, हिन्दू महासभा तथा कांग्रेस के ध्येय और नीति का पारस्परिक संबंध जानने के उद्देश्य से एक प्रश्नावली भेजी। इस प्रश्नावली में अस्पृश्यता निवारण, खादी, कांग्रेस का कार्यक्रम, हिन्दू महासभा तथा संघ का संबंध आदि विषयों पर प्रश्न थे। सेठ जमनालाल ने इसी समय बैरिस्टर मोरोपंत अभ्यंकर को भी एक पत्र संघ और हिन्दू महासभा के संबंधों की जांच करने के लिए लिखा था।

डॉक्टर जी ने सेठजी को उत्तर में लिखा कि

शेष पृष्ठ 37 पर

आचार्य चाणक्य की ये बातें हैं आज भी बड़े काम की

रमेश जैन

आचार्य चाणक्य का कहना था कि यह संसार दु:खों का सागर है। इस संसार में एक भी व्यक्ति ऐसा नही है जिसे दु:ख न हुआ हो। सभी व्यक्तियों में कुछ न कुछ दु:ख, रोग और अवगुण अथवा कुछ न कुछ बुरी आदतें पाई जाती हैं। इस संसार में एक भी व्यक्ति ऐसा नही है जो सदैव सुखी रहता हो। उसे किसी न किसी तरह के संकटों का, दु:खों का, रोगों का, बुरी आदतों का सामना करना ही पड़ता है। दु:ख और सुख तो साथ-साथ लगे ही रहते हैं। जैसे रात के बाद दिन और दिन के बाद रात आती है।

मनुष्य के स्वभाव से, उसकी बातचीत से, उसके व्यवहार से और उसके शरीर से कितनी ही बातों का पता बिना परिचय के ही लगाया जा सकता है, जो आदमी शांत और शील स्वभाव का होगा, जिसका आचरण, व्यवहार आदि सहृदय होगा, वह व्यक्ति निश्चित रूप से उच्च कुल का होगा, परंतु जिसका व्यवहार दुष्टता से भरा होगा, वह निश्चय ही नीच खानदान का होगा। इसी प्रकार आदमी की बोल-चाल से उसके स्थान का पता चल जाता है कि वह कहां का रहने वाला है, क्योंकि उसकी बोली में स्थानीय शब्दों का पुट आ जाता है।

आदमी के आदर-सत्कार से उसके प्रेमभाव का पता चल जाता है कि वह सच्चा है अथवा झूठा या दिखावटी है। इस तरह आदमी के स्वस्थ और दुबले-पतले शरीर को देखकर ही अंदाजा लगाया जा सकता है कि यह आदमी कैसी खुराक खाता होगा। ये सभी सामान्य बाते हैं। कभी-कभी अति मृदु व्यवहार करने वाला व्यक्ति अत्यंत दुष्ट व चालाक निकलता है और अत्यधिक दुबला-पतला व्यक्ति बहुत ज्यादा खाना खाता है। अपवाद सभी जगह मिल जाते हैं।

संकलनकर्ता नवभारत टाइम्स में कार्यरत हैं।

मैं एक बीज हूँ

प्रभुनाथ शुक्ल

मैं
एक बीज हूँ
मुझमें
समाया है एक विशाल वृक्ष
लेकिन
मैं अपने अस्तित्व को खुद नहीं समझ पाता
क्योंकि
मैं शायद खुद को नहीं समझ पाता
मैं
धरती में जब खपता हूँ
फिर निकलती हैं ऊर्जा की कोपलें
पनपती हैं पत्तियाँ और डालियां
मैं
जब लेता हूँ तरुणाई और अंगड़ाई
तो खिलते हैं फूल और फल
मैं
तब होता हूँ एक विशालकाय वृक्ष
फिर पता चलता है मेरे अस्तित्व का
मैं
फिर मैं बन जाता हूँ
दूसरों के लिए बिछ जाता हूँ।

कवि भदोही (उ.प्र.) के युवा साहित्यकार हैं।

बिना गुरु ज्ञान असंभव

श्याम सुन्दर श्रीवास्तव कोमल

करते हैं शत बार हम, गुरु को नमन प्रणाम।
उनके पावन शुभ चरण, कोमल ललित ललाम।
कोमल ललित ललाम, हरें सब तम के बंधन।
शीश झुका कर विनत, भाव से करते वंदन।
कह कोमल कविराय, सदा गुरु तम को हरते।
भरते ज्ञान प्रकाश, प्रकाशित जीवन करते।
संभव कभी न मानिये, बिन गुरुवर के ज्ञान।
गुरु की पावन दृष्टि सब, हर लेती अज्ञान।
हर लेती अज्ञान, ज्ञान की ज्योति जलाती।
भव के हरे विकार, मोक्ष का मार्ग दिखाती।
कह कोमल कविराय, बिना गुरु ज्ञान असंभव।
गुरु की कृपा अपार, करे हरि दर्शन संभव।

कवि सुप्रसिद्ध साहित्यकार हैं।

आजादी की कीमत

डॉ सुरेश गुप्ता

जब भी सुनता हूँ,
''दे दी हमें आजादी
बिना खड्ग बिना ढाल'',
खून में आ जाता है उबाल।
एक प्रश्न मन में उठता है
जो भीतर तक कचोटता है,
गर यह बात सही है,
जो कवि ने कही है,
तो फिर वो क्या था
जो बाबू सुभाष ने किया था,
जो भगतसिंह, सुखदेव, अशफाक ने किया था।
वो जो फांसी पर थे झूल गए ,
माँ भारती के बंधन देख,
घर परिवार सब थे भूल गए।
जिन्हें भेजा गया था
काले पानी की जेलों में,
और जोता गया था उन्हें
वहाँ कोल्हू में।
श्रीमान जी,
जहाँ मुफ्त में रोटी भी नहीं मिलती,
वहाँ बिन मूल्य चुकाये आजादी क्योंकर
मिलती।
कुछ पाने के लिए
कीमत चुकानी पड़ती है।
और क्या थी आजादी की कीमत,
वह नेता जी ने बतलाई थी,
''तुम मुझे खून दो,
मैं तुम्हें आजादी दूँगा'',
ये अलख उन्होंने जगाई थी।
यह था आजादी का मूल मंत्र,
जिससे देश हुआ था स्वतंत्र।
इस गीत को लिखकर कवि ने
बड़ा अन्याय किया है,
अनजाने में ही सही पर,
देश पर मिटने वालों का,
उसने अपमान किया है।
अब तो भावी पीढ़ी को
सच्चाई जानने दीजिये,
आजादी भीख में नहीं,
खून देकर मिली है,
यह उसे जानने दीजिये।

कवि मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) के वरिष्ठ साहित्यकार हैं।

मेरे सर के क्या कहने

डॉ. कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव

आँखों में चश्मा चमक रहा,
है गेहुंआ रंग।
धोती कुर्ता पहन कर आते,
अजब निराले ढंग।।
पतली छड़ी साथ वो लाते ,
जब कक्षा में आते।
सब डर जाते देख छड़ी को,
दौड़ दुबक हम जाते।।
फिर कहते एक पाठ निकालो,
मोनू जरा पढ़ो तुम,
ध्यान कहाँ है प्यारे बच्चे,
क्यों बैठे हो तुम गम सुम।।
मोनू भैया थर थर कांपे ,
कुछ बोल ना पाए।
आँखों में चमक सी आयी,
सुब्रत सर जब आये।।
सुब्रत सर जब बोले सर से,
दूर छड़ी तुम फेंको।
अच्छे प्यारे बच्चे है ये,
फिर होशियारी देखो।।
सर बोले फेंक छड़ी को,
डर कर कभी पढ़ो मत।
अच्छी बातें अपना लो,
गंदे काम की छोड़ो लत।।
कक्षा बिल्कुल सुधर गयी,
जम कर नाम कमाया।
नाम हो गया मेरे सर का,
पुरस्कार वही पाया।।

कवि जालौन (उ.प्र.) में शासकीय शिक्षक हैं।

कविता

गरम है बाजार!

ज्ञानीचोर

गरम है बाजार आज शहर के
उड़ी है अफवाह मेरे मरने की।
तमाम कोशिशों के बावजूद
अफवाहों के दौर जारी थे।
मैंने कहा मैं जिंदा हूँ जनाब
लोग पहचानते न थे मुझकों।
शामिल हो गया जुलूस में मैं,
तोड़फोड़ ताबड़तोड
जोर-शोर छोर-छोर।
उपद्रव ही लक्ष्य मात्र
थक गया दिमाग बैठें-बैठें
सुस्त पड़ गया शरीर
नई ऊर्जा के लिए जरूरी
अफवाह और तोड़फोड़
राजनीति भी चमकनी चाहिए!
न मरा तो मार देंगे हमकों
फिर मिलेगी जोरदार
ताबड़तोड़ सांत्वना।
मुआवजा और नौकरी
मांग पकड़ेगी जोर
मैं समझ गया राजनीति।

कवि सीकर राजस्थान के साहित्यकार हैं।

फेकुलरिज्म का क्रैश कोर्स

विनोद कुमार विक्की

नि:शुल्क फेकुलर प्रशिक्षण केंद्र में आपका स्वागत है। यदि आप में भी फेकुलरिज्म के प्रति रुचि है और फेकुलर बनने की इच्छा है तो चले आइए हमारे संस्थान में। हम आपको बिना हींग फिटकरी लगाए एक जिम्मेदार फेकुलर नागरिक बनने के हॉट टिप्स देंगे! चलिए बातों में बिना वक्त जाया किए फेकुलर कोर्स की शुरुआत करते हैं। फेकुलर बनने के लिए आप का बुद्धिजीवी होना मायने नहीं रखता आप दिमाग से पैदल भी हो तो चलेगा क्योंकि प्रत्येक छोटे-बड़े विवाद या मुद्दे पर हाय-तौबा मचाने की कला आपको बुद्धिमान की श्रेणी में स्वत: स्थापित कर देगी।

आपको यह मालूम होना चाहिए कि हम फेकुलर मानववादी हैं, मानवता की बात करते हैं। आखिर करें भी क्यों ना, मानवीय हितो के पोषक जो ठहरे! जब कभी किसी एक कौम विशेष के एक चिंदी चोर का मॉब लिंचिंग होता है तो हमारा दिल फट जाता है, दिमाग झनझना जाता है, भुजाएँ फड़कने लगती है। खून उबाल मारने लगता है। फाइटर इम्यूनिटी का एंटीबॉडिज ओवरफ्लो होने लगता है। हमारे समूह के विद्रोही बंधु मोर्चा खोल सड़को पर उतर जाते है। हमारे पंथ के निष्पक्ष पत्रकार न्यूज चैनल पर श्वान राग का उद्घोष करने लगते हैं। हमारे पंथ के उदार और सदाशय साहित्यकार अखबार, मैग्ज़ीन, टेक्स्ट बुक से फेसबुक तक विधवा विलाप करने लगते हैं। आखिर करें भी क्यों ना, मानवीय संवेदना भी कोई चीज है भाई। भले ही उस कौम के पीड़ित की संख्या एक ही सही लेकिन है तो वो इंसान ही! तो उसे बहुसंख्य दूसरे कौम द्वारा प्रताड़ित करने का कोई लाइसेंस तो नहीं। हम मानवतावादी की अन्तरात्मा सागर की लहरों में हिचकोले खाती डेंगी की तरह उफान मारने लगती है। हमे तथाकथित दूसरी कौम/समुदाय से घृणा नफरत होने लगती है और हम इंसानियत की दुहाई और असहिष्णुता का युगल गीत गला फाड़कर गाने लगते है।

फेकुलरिज्म पंथ की कुछ ऐसे नियम भी है जिसमें खास सावधानियाँ बरतनी आवश्यक है। जब कभी किसी दूसरे बहुसंख्य कौम के लोगो का सामूहिक नरसंहार हो, उत्पीड़न हो, घर-दुकान में लूट हो आगजनी हो,बलात्कार हो, प्रताड़ना हो तो भूलकर भी अपने चमड़े का चोंच नही खोलना है! यदि बकना आवश्यक हो तो सिर्फ शांति और भाईचारे का मुहावरा पढ़ना। वैसे भी बहुसंख्य कुआं से दो चार बाल्टी पानी बहा भी दी जाए तो क्या फर्क पड़ता है!

बहुसंख्य उत्पीड़न पर निंदा या विरोध स्वर ना ही उठे तो फेकुलरिज्म के हित में होगा। जुल्म ढाने वाले समुदाय के प्रति आवाज क्या ऊँगली भी उठाने का दुस्साहस नही करना है। एक वर्ग के देवी देवताओं के अश्लील तस्वीर चित्रण पर या फिल्मों में धार्मिक कटाक्ष आदि पर अनुलोम-विलोम की मुद्रासन को अपनाना है तथा दूसरे कौम की कुप्रथाओं पर टिप्पणी आने पर कपालभाति की तरह भाइब्रेशन मोड में आ जाना है। आप न्यूज चैनल के रिपोर्टर हो या साहित्यकार उन घटनाओं पर सौ प्रतिशत शुद्ध धृतराष्ट्र बन जाना है। यदि आप महिला फेकुलर है तो इन स्थिति में गांधारी बनना ही आपके फेकुलरिज्म का मानदंड होगा।

अपने देश में कश्मीर, बंगाल,केरल आदि स्थानों पर घटित अमानवीय कृत्यों पर टेम्परारी मौन व्रत धारण करना है। ब्लैक की रानी मुखर्जी और गोलमाल का तुषार कपूर बन जाना है। देश के अंदर एक समुदाय के प्रति गिद्ध दृष्टि रखते हुए चिल्ल पों मचाना तथा दूसरे समुदाय के प्रति सूरदास बन कान में तेल डालकर कुंभकर्ण की तरह सो जाना उच्च कोटि फेकुलरिज्म के लिए आवश्यक है। इजराइल द्वारा फिलीस्तीन पर जवाबी हमला,अमेरिका द्वारा जवाबी आतंकी हमला,सेना द्वारा पाक सर्जिकल आदि पर जोर जोर से राग मल्हार गाना आपके फेकुलरपंथी विचारधारा को ऊंचाइयां प्रदान करेगी!

यदि फेकुलर निर्माण पाठ के उपरोक्त बिन्दुओं को अपने चाल-चरित्र में आत्मसात करते हैं,तो आप भी देश के एक योग्य जिम्मेदार इंसानियत के रहनुमा फेकुलर बन सकते हैं!

लेखक व्यंग्यकार हैं।

ईमेल : response50123@gmail.com

धर्मपाल महेंद्र जैन

आलोचना में धन का तड़का

कवि असंतोषजी मेरे पास आए। सधे कदम, मुस्कुराते अधर, उन्नत मस्तक और मेरे नाक पर केंद्रित उनकी आँखें। कविताएँ अधकचरी हों, छरहरी हों, तो कवि में गजब का बाँकपन आ जाता है। वे बोले— आचार्यजी, इन कविताओं में से श्रेष्ठ छाँट दीजिए और अश्रेष्ठ फाड़ दीजिए। अप्रकाशित कविताओं का गट्ठर चार किलो का था। भारतेंदु काल में कविताएँ सेर में तोली जाती थीं तो छँटाक भर ठीक निकल आती थीं। आधुनिक काल की किलोग्राम भर कविताओं में कवित्त मिलीग्राम में बैठता है। मैं ठहरा आचार्य कुल का। कवि असंतोषीजी को मना कर दूँ तो हिंदी साहित्य का निरादर हो जाए और कविताएँ छाँटने लगूँ तो मैं ही छँट जाऊँ। न केवल मेरी आँखें पढ़ने के तनाव से फट जाएँ पर दिमाग भी समझने के चक्कर में बठ्ठर हो जाए। इसलिए मैंने उनसे एक प्रसिद्ध आलोचक की तरह पूछा— आपका वजन कितना है? वे बोले, लगभग अस्सी किलो। तब मैंने गंभीर मुद्रा में कहा –कविवर कविताओं में वजन हो या न हो, कविताओं के समग्र पुलिंदों का वजन भी लगभग अस्सी किलो होना चाहिए। कवि को अपने भार के बराबर कविताओं का भार ढोना आना चाहिए। इस सिद्धांत को हम कहते हैं समभार का सिद्धांत।

वे मुदित हो कर बोले— आप सही के आचार्य हैं। मैं पहली बार किसी विद्वान आलोचक से मिला हूँ, जो मुझे कविताएँ लिखने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है और आलोचना के सिद्धांत समझा रहा है। आप मुझे एक महीना दीजिए, मैं अस्सी किलो कविताएँ लिखकर आपके श्रीचरणों में डाल दूँगा। इन दिनों अधिकांश साहित्यकार यही करते हैं, श्रीचरण खोजते हैं और उन पर अपनी रचनाएँ चढ़ा आते हैं। कविता ने तुलसी को राममय कर दिया था, अब कविता आधुनिक तुलसी को आराममय कर रही है। असंतोषजी अपना गट्ठर उठा कर निकल लिए। कविवर गए तो मैं सोचता रहा कि आज बला टली। वे एक जीवंत प्रश्न छोड़ गए थे कि बला कौन। मैंने सारा भाषाविज्ञान ठिकाने लगा दिया और निष्कर्ष में पाया कि कविवर बला थे, कविता तो केवल अबला थी।

वे अब एक महीने बाद आएँगे। जब आएँगे तब तक आलोचना शास्त्र में मेरे नए सिद्धांत आ जाएँगे। आपसे क्या छुपाना, मैं खुद ही ''आलोचना शास्त्र के आधुनिक सिद्धांत'' विषय पर ग्रंथ लिख रहा हूँ। मेरी औकात ग्रंथावली लिखने की थी पर प्रकाशक एक ही ग्रंथ की सेंटिंग कर पाए थे, इसलिए मुझे इतने पर ही संतुष्ट होना पड़ा। आलोचना के सिद्धांत विषय पर लिखना बहुत आवश्यक लग रहा था। मैंने अपने कई कविता संकलन आलोचकों को भारी अनुनय-विनय कर के भेजे थे, पर उन्हें समुचित लिखना नहीं आया। नब्बे प्रतिशत आलोचक बधाई के आगे नहीं लिख पाए, उन्हें शुभकामना तक लिखना नहीं आया। शेष आलोचकों ने इस तरह समीक्षा की जैसे किसी राजनीतिक दल के प्रवक्ता राष्ट्रीय टीवी पर दबाव के मारे घिसे-पिटे जुमले बोलते हैं। मैंने तभी तय कर लिया था कि मुझे आलोचना के क्षेत्र में कुछ नया करना पड़ेगा। मेरे बाद की पीढ़ी को उचित मूल्यांकन के अभाव का दर्द नहीं सहना पड़े इसलिए साहित्य समीक्षा के नए सिद्धांत मुझे घड़ने होंगे।

बिना सिद्धांत के आलोचना व्यर्थ है। इसलिए अपना पहला सिद्धांत, ''समभार का सिद्धांत'' बना कर मुझे संतुष्टि मिली। साहित्यकार अपने भार के बराबर साहित्य रच डाले तो उसका मूल्यांकन अवश्य हो। उस क्षण मुझे समझ आया कि सिद्धांत बनाए नहीं जाते, प्रतिपादित किए जाते हैं। तो मैंने दूसरा सिद्धांत प्रतिपादित किया, समलंब का सिद्धांत। अर्थात् यदि किसी रचनाकार के प्रकाशित संकलनों के ढेर की ऊँचाई, उसकी जूते रहित ऊँचाई से अधिक हो जाए तो साहित्य अकादमियों का कर्तव्य बनता है कि वे उसकी ओर भी देखें, और उसके अवसादग्रस्त चेहरे पर किसी पुरस्कार का क्रीम लगा दें।

अब मुझे सिद्धांत प्रतिपादित करने में आनंद आने लगा था। न्यूटन तीन सिद्धांत प्रतिपादित कर के अमर हुए थे, मैं उनसे एक कदम आगे निकलना चाहता था। मैंने तीसरा सिद्धांत प्रतिपादित किया सम-धन का सिद्धांत। जो भी प्रख्यात साहित्यकार सम-धन निवेश कर पाए उसे अवश्य पुरस्कृत किया जाए। प्रवासी साहित्यकारों के द्वारा डॉलर और पौंड के निवेश की तुलना में रुपया भी कम नहीं पड़ता है। भौतिक अर्थ जुड़ जाए तो आलोचना के आभासी प्रतिमान फटाफट बदल जाते हैं। आलोचना में अर्थशास्त्र का तड़का लग जाए तो निष्कर्ष चमक उठते हैं। आलोचना में सौंदर्यशास्त्र का अनुपम योगदान है। इससे मुझे चौथे सिद्धांत का विचार आया— समतन का सिद्धांत। मैं इसकी विवेचना करने लगा तो मुझे इसमें अभद्र और अश्लील रंग दिखाई दिए। साहित्यकार का जो रूप परोक्ष हो, वह आलोचना का विषय नहीं बनना चाहिए। इसलिए इस सिद्धांत को मैं शास्त्रसम्मत नहीं मानूँगा, और हर साहित्यकार को संदेह का लाभ दूँगा। अब मैं हर प्रकार की आलोचना करने के लिए तैयार हूँ। इन तीनों सिद्धांतों पर खरे उतरने वाले विभूति साहित्यकारों की मुझे प्रतीक्षा है। आप मेरा अता-पता उन तक जरूर पहुँचा दें। हिंदी के प्रति आपकी यह निस्वार्थ सेवा आलोच्य साहित्यकार याद रखेंगे।

लेखक वरिष्ठ व्यंग्यकार हैं।
ईमेल : response50123@gmail.com

देवभूमि के आराधक श्री भगत सिंह कोश्यारी की ओजस्वी वाणी में है

देश की समस्याओं के समाधान का रोड मैप

डॉ. विनोद बब्बर

संसद के दोनों सदनों के सदस्य के रूप में कार्य करते हुए विभिन्न महत्वपूर्ण समितियों के अध्यक्ष तथा उत्तराखंड के मुख्यमंत्री और वर्तमान में महाराष्ट्र के राज्यपाल के रूप में अपनी सेवाएं देने वाले श्री भगत सिंह कोश्यारी जी का संपूर्ण जीवन राष्ट्र आराधना और समाज सेवा को समर्पित है।

कोश्यारी जी 2008 में राज्यसभा तथा 2014 में लोकसभा के सदस्य निर्वाचित हुए। उन्होंने विभिन्न विषयों पर संसद और देश का ध्यान आकर्षित किया। दूरदर्शी अध्येता, निडर वक्ता, राष्ट्र साधक व्यक्तित्व के रूप में उन्होंने देश की सीमाओं की सुरक्षा के प्रति सजगता का प्रश्न उठाया तो केदारनाथ में आई आपदा से बुरी तरह प्रभावित हुए लोगों की कठिनाइयों को उजागर करते हुए संसद की संवेदनाओं को झकझोरा।

पर्यावरण प्रेमी कोश्यारी जी ने संसद में 3 अगस्त 2009 को अपने भाषण में जी-8 सम्मेलन में क्लाइमेट चेंज पर हुई चर्चा की ओर संकेत करते हुए तत्कालीन सरकार द्वारा वन एवं पर्यावरण मंत्रालय के लिए कुल बजट का 1% से भी कम आवंटित करने के लिए उसे आड़े हाथ लिया। उनके अनुसार पर्यावरण संरक्षण शेष विश्व के लिए एक नया विषय है लेकिन हमारे दूरदर्शी पूर्वजों ने सदियो पूर्व धरती को माता, समुद्र को वसना कहा था। नदियों, पर्वतों, सभी जीव-जंतु पेड़-पौधे सभी के प्रति भारतीय लोगों का श्रद्धा भाव रहा है।

वेद पुराण रामायण महाभारत सहित हमारे सभी धर्म ग्रंथों में इस पर व्यापक चर्चा की गई है। बंकिम चंद चटर्जी वंदे मातरम और सुजलाम सुफलाम का उद्घोष करते हैं। हमारे संविधान में भी वन संरक्षण अधिनियम है लेकिन वर्तमान में जंगलों और पहाड़ों के निकट रहने वाले सामान्य व्यक्ति के जीवन में कठिनाइयां बढ़ती जा रही हैं, उस और ध्यान देने की जरूरत है।

उन्होंने उत्तराखंड में बाढ़ तथा अकाल की स्थिति की ओर 17 फरवरी 2009 को संसद का ध्यान आकर्षित किया। 20 फरवरी 2009 को उन्होंने सुरक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण उत्तराखंड में रेल सेवाओं के प्रसार पर बल दिया, 24 फरवरी 2009 को केंद्रीय विश्वविद्यालय विधेयक पर चर्चा में विश्व में उच्चतर शिक्षा के 56% के मुकाबले भारत में केवल 11% होने की चर्चा करते हुए देश में अधिक से अधिक विश्वविद्यालय खोलने तथा पहले से ही चल रहे विश्वविद्यालयों को और अधिक संसाधन उपलब्ध कराने पर बल दिया। 5 जुलाई 2009 को बजट चर्चा में आपने 1853 से 1947 तक के 93 वर्षों के विदेशी शासन में 153996 किलोमीटर रेलवे लाइन तथा उसके बाद के 63 वर्षों में केवल 9263 किलोमीटर रेलवे लाइन बनाने की स्थिति को दुर्भाग्यपूर्ण बताते हुए इस ओर राष्ट्र का ध्यान आकर्षित किया, 9 दिसंबर 2009 को विद्युत मंत्रालय पर हुई चर्चा में आपने हाइड्रो पावर बिजली की क्षमता का पूर्ण सदुपयोग न किए जाने की चर्चा करते हुए चीन द्वारा 7500 मेगावाट बिजली के उत्पादन के मुकाबले में हमारे यहां केवल 36000 मेगावाट बिजली उत्पादन होने जैसा महत्वपूर्ण आंकड़ा भी प्रस्तुत किया। उन्होंने भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों तथा सुदूर क्षेत्रों में बिजली के ट्रांसमिशन और डिस्ट्रीब्यूशन को बढ़ाकर विकास और रोजगार के अवसर बढ़ाने की बात कही।

देवभूमि उत्तराखंड के सजग प्रहरी के रूप में आपने टनकपुर पिथौरागढ़ धारचूला राष्ट्रीय राजमार्ग के विस्तार के कार्य में हो रहे विलंब, उत्तराखंड को अतिरिक्त केंद्रीय सहायता रोके जाने पर अपना शालीन लेकिन जोरदार विरोध प्रकट किया। उत्तराखंड में भूस्खलन और बादल फटने से हुए विनाश, भारतीय सीमाओं में चीनी सेना की घुसपैठ, बिंदुखट्टा को राजस्व गांव घोषित करने से नंदा देवी राजजात मेले की स्थिति सहित हर समस्या की ओर संसद और सरकार को उसके दायित्व स्मरण कराये ।

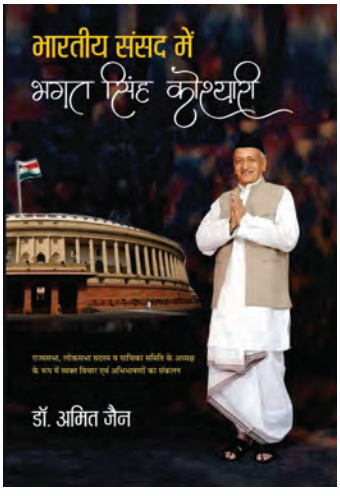

भारतीय संसद में भगत सिंह कोश्यारी
डॉ. अमित जैन
प्रकाशक : चाणक्य वार्ता प्रकाशन समूह
मूल्य : 950 रुपये

लेकिन इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि प्रखर राष्ट्रवादी श्री भगत सिंह कोश्यारी जी केवल उत्तराखंड पर ही केन्द्रित रहे। कोश्यारी जी ने वन रैंक वन पेंशन, पूर्वोत्तर के राज्यों सहित सभी छोटे राज्यों के लिए अधिक से अधिक केंद्रीय योजनाएं लाने, देश में खाद्य वस्तुओं में मिलावट और नकली दवाओं के निर्माण पर रोक, गौ मांस पर कानूनन प्रतिबंध, साइबर क्राइम पर नियंत्रण, सभी सीमावर्ती राज्यों में रेल नेटवर्क के विस्तार जैसे विषयों को भी उठाया जो पूरे देश की सुरक्षा, संरक्षा और विकास से जुड़े हुए हैं। आपके भाषणों में भारत की महान संस्कृति के उद्धरण, हिंदी और भारतीय भाषाओं को उनका वास्तविक अधिकार दिलाने का दृढ़ संकल्प परिलक्षित होता है। अनेक स्वनाम धन्य सांसदविदो और महान नेताओं के साथ कार्य करते हुए प्राप्त अनुभव का जनहित में उपयोग करने वाले कोश्यारी जी ने दलगत भावनाओं से ऊंचे उठ कर राष्ट्र हित में अच्छा कार्य करने वाले दूसरे दलों के नेताओं की भी मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

सांसद के रूप में कोश्यारी जी ने सीमांत प्रदेशों की यात्राएं करके जमीनी सच्चाई को जाना और अपने भाषणों के द्वारा संसद को उससे परिचित कराया। आपने जहां चीन की कुटिल चालों की ओर सावधान किया वही चीन की सद्भावना यात्रा भी की।

संसद की विभिन्न समितियों के अध्यक्ष के रूप में आपने महत्वपूर्ण याचिकाओं में प्रस्तुत समस्याओं के निराकरण पर बल दिया तो एक जन नेता के रूप में उन्हें जब भी जो भी दायित्व दिया गया उसके हर निर्णय में समाज के अंतिम व्यक्ति को प्राथमिकता दी। मुख्यमंत्री और राज्यपाल के रूप में आपने कुशल प्रशासक, संविधान की मर्यादा के रक्षक के रूप में 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' बिना किसी पक्षपात के

शेष पृष्ठ 37 पर

डॉ प्रेरणा चतुर्वेदी

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जन्मदिवस पर विशेष

पंडित दीनदयाल और मातृशक्ति

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक निष्काम कर्म आंदोलन है। जिसके संगठन का आधार सक्षम, स्थायी, आत्मनिर्भर तथा कालजयी राष्ट्र है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय संघ के एक सशक्त स्वयंसेवक, कार्यकर्ता, प्रचारक, विचारक, लेखक, चिंतक और राजनीति में मूल्यों के प्रतिपादक रहे हैं। उनका जन्म 25 सितंबर 1916 को मथुरा में हुआ था। दीनदयाल उपाध्याय ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विचारों के अनुकूल नारी को 'मातृशक्ति' रूप में परिकल्पित किया है। भारतीय संस्कृति में स्त्री और पुरुषों के सम्मिलित रूप से ही परिवार की संकल्पना उत्पन्न होती है। यही संकल्पना आगे चलकर समाज, राष्ट्र तथा विश्व परिवार के कल्याणकारी विचार से जुड़कर भारतीय चिंतन में आती है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने नारी विषयक विचारों में कहा है कि वह नारी को मातृशक्ति के रूप में देखते हैं। राष्ट्र के उन्नयन एवं विकास के लिए तथा भावी संतति के अभिनव निर्माण के लिए स्त्री-पुरुष दोनों का शारीरिक-मानसिक, नैतिक, चारित्रिक, आर्थिक तथा आध्यात्मिक विकास आवश्यक है। साथ ही उन्हें धार्मिक शिक्षा एवं परिवार संचालन में भी प्रशिक्षण मिलना चाहिए। नारी फूलों की क्यारी नहीं, लोहे की चिंगारी है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी नारी को सामाजिक-राजनीतिक कार्यों में भाग लेने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित करते थे। दीनदयाल जी चाहते थे कि भारतीय नारी तेजस्वी हो और वह राष्ट्रीय जागृति हेतु हाथ बंटाए।

पंडित दीनदयाल जी ने वर्गहीन, समतापूर्ण, समाज की रचना का स्वप्न देखा था। जिसमें कोई किसी का शोषण न करें। पंडित दीनदयाल उपाध्याय एकात्म समाज की स्थापना के समर्थक थे। वह नारी को मातृशक्ति रूप में देखते थे। इसका उदाहरण है कि प्रयाग के प्रसिद्ध इविंग क्रिश्चियन कॉलेज में विद्यार्थी संगठन की ओर से पंडित दीनदयाल जी को सादर आमंत्रित किया गया था। जब उन्होंने भारतीय संस्कृति पर अपना भाषण प्रारंभ किया तो, प्रांगण में बैठे छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा— 'उपस्थित आचार्य वृंद, भाइयों तथा माताओं!'

इस प्रकार स्पष्ट है कि नारी चाहे जिस रुप में भी हो। वह हमेशा उसे सादर नमन करते हुए 'माता' रूप में देखते थे। उनका मानना था कि,

बिना भारतीय नारी के योगदान के भारतवर्ष समृद्ध और उन्नत कभी नहीं हो सकता। वह जनसंघ को भारतीय संस्कृति से ओतप्रोत एवं भविष्य की ओर देखने वाली संस्था बनाना चाहते थे। इसके साथ ही वे भारत के राजनीतिक और सामाजिक जीवन में नारी जगत को उचित स्थान दिलाने के इच्छुक थे। वे जनसंघ में अधिक से अधिक महिला कार्यकर्ताओं की खोज में रहते और यथासंभव उन्हें जनसंघ में लाने का प्रयत्न करते।

इस संबंध में नारायण स्वरुप शर्मा जी बताते हैं कि—जब लंदन प्रवास के समय पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी उनके यहां ठहरे थे। तब उनकी पत्नी ने पंडित जी से पूछा कि, 'आप विवाह क्यों नहीं करते?' 'आपको विवाह कर लेना चाहिए।' 'आप की देखभाल कौन करेगा?' इस पर पंडित दीनदयाल जी ने कहा कि— 'क्या आवश्यकता है, मेरी देखभाल करने की? कोई आवश्यकता नहीं। यदि कभी आवश्यकता हुई तो मेरी माताएं और बहनें इस कार्य को कर लेंगी। यदि मैंने विवाह कर लिया तो मेरा अधिकांश समय परिवार को चलाने में ही निकल जाएगा और देश के कार्यों के लिए समय नहीं मिल पाएगा। भारत से 6 हजार मील दूर लंदन की इस धरती पर भी जब मुझे तुम्हारी जैसी एक बहन मिल सकती है। जो बड़ी तत्परता से मेरी देखभाल करती है, तो विवाह की क्या जरूरत है।'

जनसंघ अधिवेशन के 2 वर्ष पश्चात जनसंघ की अखिल भारतीय कार्यकारिणी समिति के सदस्यों की घोषित सूची में किसी महिला सदस्य का नाम ना देखकर नारायण स्वरुप शर्मा जी की पत्नी दीनदयाल उपाध्याय जी की धर्म बहन श्रीमती उर्मिला ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय को पत्र लिखकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की। पत्र में उन्होंने लिखा कि देश की जनसंख्या में 50 प्रतिशत महिलाएं हैं और यदि आप उनकी वोट चाहते हैं तो उन्हें 50 प्रतिशत प्रतिनिधित्व देना होगा।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने बहन उर्मिला के इस पत्र का तुरंत उत्तर दिया और ध्यान दिलाने के लिए बहन को धन्यवाद देते हुए ऐसा आगे ना होने का वचन दिया। कालीकट के अधिवेशन में उन्होंने अपना यह वचन पूरा किया।

नारी चाहे किसी भी रूप में हो अमीर, गरीब, राजसी या भिखारिणी हो। वह सदैव पूज्य है। इस दृष्टिकोण के अखंड समर्थक थे पंडित दीनदयाल उपाध्याय। मध्य प्रदेश के प्रवास के समय दिल्ली के रेलवे स्टेशन पर ट्रेन में एक अबला भिखारिणी भीख मांग रही थी। इस पर एक पुलिस वाले ने उसे डांट दिया और मारने लगा। तब पंडित जी ने क्रोधावेश में उस पुलिस वाले को रोकते हुए कहा कि—'मैं देखता हूं, तुम इसे कैसे मारते हो। पुलिस वाले ने कहा— यह औरतें चोर हैं और तुम लोगों को परेशानी में डाल सकती हैं। यह मेरा काम है। उसे करने में दखल मत दो।

इस पर पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने उस पुलिस वाले को रोकते हुए कहा—'अदालत उन्हें उनके असामाजिक कार्यों के लिए दंड दे सकती है।' लेकिन एक ही स्त्री के साथ अभद्र व्यवहार को देखना मेरे लिए असहनीय है। पुलिस के सिपाही ने अपनी गलती को माना और पंडित जी से क्षमा प्रार्थना की।

प्राय: माना जाता है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से मुस्लिम समुदाय दूरी बनाए रखता है। परंतु यह सत्य नहीं है। मुस्लिम महिलाएं एवं पुरुष भी पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी से उतना ही लगाव रखते थे। इसका एक उदाहरण है कि-पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के प्रयाण पर 2 मुस्लिम कुलीन परिवार की बहुएं बुर्का पहने हुए आयी और पंडित जी के पार्थिव शरीर के पास आकर जोर जोर से रोने लगीं। पंडित दीनदयाल उपाध्याय सभी धर्मों को समानता के भाव से देखते थे।

लेखिका वरिष्ठ साहित्यकार एवं स्तंभकार हैं।
ईमेल : response50123@gmail.com

प्रोफेसर आशुतोष शर्मा की षष्टिपूर्ति पर विशेष लेख

आधुनिक कणाद प्रोफेसर आशुतोष शर्मा

डॉ. शुभ्रता मिश्रा

भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के सचिव प्रोफेसर आशुतोष शर्मा को 1 अगस्त, 2021 को पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के सचिव का भी अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है। यह प्रोफेसर शर्मा की विलक्षण वैज्ञानिक प्रतिभा और देश के प्रति उनके समर्पण भाव का जीवंत प्रमाण है। श्री आशुतोष शर्मा 9 जनवरी 2015 से भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के सचिव के रुप में निरंतर कार्य कर रहे हैं। उन्होंने भारत में विज्ञान के अवसंरचनात्मक विकास और उनके लिए मानवीय सक्षमताओं की सुदृढ़ता से संबंधित विविध नवीन कार्यक्रमों को शुरू करने की सार्थक पहलें की हैं। देश में नवाचार और स्टार्टअप, उन्नत विनिर्माण, अपशिष्ट प्रसंस्करण, हरित स्वच्छ ऊर्जा और साइबर-भौतिक प्रणालियों में अनुसंधान एवं विकास के साथ साथ उद्योगों में अकादमिक सहयोग, समाज में विज्ञान संचार, महिला वैज्ञानिकों को आगे आने का सफल आव्हान और राष्ट्र हित हेतु प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में प्रमुख अंतरराष्ट्रीय सहभागिता जैसे अनगिनत सुकार्यों के दर्शन प्रोफेसर आशुतोष शर्मा की कार्यशैली में स्पष्टतौर पर होते हैं।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी प्रोफेसर आशुतोष शर्मा अपने आत्मीय व्यक्तित्व के कारण वैज्ञानिक बिरादरी से लेकर आमलोगों के भी बेहद निकट हैं। सोशल मीडिया के उनके फेसबुक और ट्विटर एकाउंटों में लोकप्रिय प्रोफेसर शर्मा को लाखों की संख्या में देश और विदेश के युवा, वैज्ञानिक, साहित्यकार, कलाकार और विशुद्ध आमजन भी फॉलो करते हैं। उनके आकर्षक व्यक्तित्व और कृतित्व से प्रभावित जन लगभग प्रतिदिन ही उनकी पोस्ट की प्रतीक्षा करते हैं। विज्ञान जगत से जुड़े लोगों के प्रति आमजनों का ऐसा विशेष लगाव विरले ही देखने में आता है। प्रोफेसर आशुतोष शर्मा ऐसे ही विरले भारतीय वैज्ञानिकों में से एक हैं। बहुत से लोग उनके करिश्माई व्यक्तित्व को देखते हुए विश्वास भी नहीं कर सकते कि यह वर्ष 2021 उनकी षष्टिपूर्ति को मनाने का है। प्राचीन वैश्विक एवं भारतीय इतिहास तथा दर्शन के ज्ञाता के साथ साथ साहित्य और चित्रकला में निष्णात, विशुद्ध शाकाहारी प्रोफेसर आशुतोष शर्मा जैसे वैज्ञानिक के विषय में जानने के लिए सभी लालायित रहते हैं।

प्रोफेसर शर्मा वास्तव में आधुनिक कणाद ऋषि हैं, जिन्होंने विश्व को नैनोकण के अस्तित्व से परिचित करवाने वाले नैनोसाइंस के लिए अद्भुत मनीषी शिष्यों को तैयार किया है। प्रोफेसर आशुतोष शर्मा एक दूरदर्शी शिक्षाविद रहे हैं जिन्होंने नैनोसाइंस और नैनोटेक्नोलॉजी जैसे नवीनतम विषयों में असाधारण योगदान दिया है। नैनोटेक्नोलॉजी विज्ञान की वह शाखा है, जिसमें 1 नेनोमीटर से 100 नेनोमीटर के मध्य के आकारों के कणों का अध्ययन किया जाता है। एक नैनोमीटर की अतिसूक्ष्मता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि यह कण एक मीटर के अरबवें हिस्से के बराबर होता है। पृथ्वी पर जीवन के शुभारंभ के समय से प्रकृति में होने वाले सतत् परिवर्तनों के साथ साथ विभिन्न नैनोकणों का निर्माण होता आ रहा है। अत: नैनोकणों का संबंध विज्ञान की प्रत्येक विधा से है और नैनोटेक्नोलॉजी भौतिकी, रसायन, जैव-सूचना व जैव-प्रौद्योगिकी जैसे सभी विषयों को आपस में जोड़ने का कार्य कर रही है। नैनोटेक्नोलॉजी वह तकनीक है जिसमें किसी भी पदार्थ में परमाणविक, आणविक और परमआणविक स्तरों पर परिवर्तन किया जा सकता है।

यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि आज भारत में नैनोसाइंस और प्रोफेसर आशुतोष शर्मा एक दूसरे के पूरक के रुप में माने जाते हैं। नैनोसाइंस के क्षेत्र में प्रोफेसर आशुतोष शर्मा के अनुसंधान योगदान अत्यधिक अंत:विषयक रहे हैं। नैनोटेक्नालॉजी में एक विस्तृत शृंखला के रुप में प्रोफेसर शर्मा ने ऊर्जा, स्वास्थ्य और पर्यावरण में कार्बन आधारित नैनोसंघटकों और माइक्रो-इलेक्ट्रोमैकेनिकल सिस्टम (एमईएमएस) एवं नैनो-इलेक्ट्रोमैकेनिकल सिस्टम (एनईएमएस), कार्यात्मक अंतरअवस्थाओं, नरम पदार्थ के सूक्ष्म व नैनो-यांत्रिकीय अध्ययनों, नैनो-पैटर्निंग और नैनोफाइब्रिकेशन, कोलाइड और इंटरफेसियल इंजीनियरिंग, जैव पदार्थों और जैव सतहों, आर्द्रता, आसंजन और पतली पॉलीमर फिल्मों, नैनो-संरचनाओं के निर्माण और अनुप्रयोग के जैसे विविध क्षेत्रों में अग्रणी शोधकार्य किए हैं। प्रोफेसर शर्मा ने त्रिविमीय अरैखिक स्थिरता सिद्धांत और प्रयोगों द्वारा समांगी अध:स्तरों पर पतली फिल्मों की आकारिकी की अस्थिरता और विकास की व्याख्या की है। उन्होंने विषमांगी और पैटर्न वाले अध:स्तरों पर पतली फिल्मों के अनार्द्रन के लिए एक नवीन सिद्धांत प्रस्तावित किया है, जिससे टेम्प्लेटिंग द्वारा पॉलिमर फिल्मों के छोटे पैमाने पर पैटर्निंग के लिए एक उत्कृष्ट विधि निर्मित की जा सकती है।

इन समस्त अभूतपूर्व नैनोशोधों पर आधारित प्रोफेसर आशुतोष शर्मा के 350 से अधिक उत्कृष्ट शोधपत्र एवं रिव्यू अंतरराष्ट्रीय जर्नलों में प्रकाशित हुए हैं। उनकी संपादित दो पुस्तकें एडवांसेस इन नैनोसाइंस एण्ड नैनोटेक्नोलॉजी (2004) तथा वेव डायनॉमिक्स एण्ड स्टेबिलिटी ऑफ थिन फिल्म फ्लो सिस्टम्स (2006) बेहद लोकप्रिय हुई हैं। असीम ऊर्जावान प्रोफेसर आशुतोष शर्मा ने एक बार

कहा था कि कोई भी नवीन विचार या अवधारणा अंतत: एक उपयोगी उत्पाद में परिणित होगी, जो समाजोपयोगी हो सकती है। प्रोफेसर शर्मा के इसी मौलिक दर्शन ने उन्हें पंद्रह से अधिक पेटेंट दर्ज करवाने वाला महान वैज्ञानिक बना दिया है। विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संस्थानों में 150 से अधिक आमंत्रित बीज व्याख्यानों द्वारा उन्होंने नैनोटेक्नालॉजी और अन्य वैज्ञानिक विषयों को पूरे विश्व में प्रसारित करने का कार्य किया है। देश और विदेश में उन्होंने नैनोटेक्नोलॉजी स्टार्टअप के लिए अपना अमूल्य मार्गदर्शन प्रदान किया है।

देश और विदेश में बेहद लोकप्रिय प्रोफेसर आशुतोष शर्मा का जन्म 22 अगस्त 1961 को राजस्थान के जयपुर में हुआ था। राजस्थान की मिट्टी में खेले, पले, पढ़े और बढ़े, बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि और जन्मजात वैज्ञानिक चेतना से लैस आशुतोष शर्मा को वर्ष 1977 से 1982 तक भारतीय राष्ट्रीय योग्यता छात्रवृत्ति मिलने का गौरव मिला था। उन्होंने देश के प्रतिष्ठित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर से सन् 1982 में केमिकल इंजीनियरिंग में बीटैक किया। उसके बाद मास्टर डिग्री के लिए उन्होंने अमेरिका की पेंसिल्वेनिया स्टेट यूनिवर्सिटी में प्रवेश लिया, वहां से वर्ष 1984 में केमिकल इंजीनियरिंग में ही एमएस की डिग्री प्राप्त की। अमेरिका में ही फिर मेधावी आशुतोष का चयन प्रतिष्ठित एवं विश्वविख्यात प्रोफेसर एली रूकेनस्टीन के मार्गनिर्देशन में पीएचडी करने के लिए स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयॉर्क, बफ़ेलो के डिपार्टमेंट ऑफ कैमिकल एण्ड बायोलॉजिकल इंजीनियरिंग के लिए हुआ। इसी दौरान सन् 1985 में डॉ. आशुतोष शर्मा का विवाह हुआ। प्रोफेसर रूकेनस्टीन के प्रिय शोधार्थी आशुतोष शर्मा ने वर्ष 1988 में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

लगभग नौ वर्षों तक अमेरिका में अध्ययन करने के बाद डॉ. आशुतोष शर्मा वर्ष 1990-91 में स्वदेश वापस आए और शिक्षण को उन्होंने अपने पेशे के रूप में अपनाने का निर्णय लिया। वे सन् 2011 से 2013 तक भारतीय राष्ट्रीय अभियांत्रिकी अकादमी के आईएनएई चेयर प्रोफेसर भी रहे हैं। वे अपने देश के ही नहीं बल्कि विश्व के विद्यार्थियों और शोधार्थियों के पसंदीदा प्रोफेसरों में से एक रहे हैं। प्रोफेसर शर्मा को यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्सास ऑस्टिन, यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्टर्न ओंटारियो, यूनिवर्सिटी ऑफ एर्लांगेन-नरेम्बर्ग के उनके विद्यार्थी आज

भी उतने ही सम्मान से याद करते हैं, जब उन्होंने विजिटिंग प्रोफेसर के तौर पर प्रोफेसर आशुतोष शर्मा से शिक्षा ग्रहण की थी। इनके अलावा दक्षिण कोरिया के विश्व स्तरीय विश्वविद्यालय कार्यक्रम और यूरोपीय अनुसंधान आयोग के सदस्य के रुप में कार्य करते हुए प्रोफेसर आशुतोष शर्मा ने भारत के पंद्रह से अधिक प्रमुख वैज्ञानिक संस्थानों के शासी बोर्डों और शासी परिषदों में अपनी महत्वपूर्ण सेवाएं दी हैं।

प्रोफेसर शर्मा का सम्पूर्ण जीवन और उनके शोधकार्य प्रौद्योगिकी विकास तथा राष्ट्र निर्माण के साथ गहरी मौलिक अंत:दृष्टि के एकीकरण का उत्कृष्ट उदाहरण है। प्रोफेसर शर्मा ने सदैव आविष्कार और नवाचार को अकादमिक और उद्योग, अनुसंधान, विकास एवं बाजार के मध्य सहज संपर्क के साथ मिलकर काम करने की पैरवी की है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के अंतर्गत कार्यरत नैनोसाइंस सेंटर और एडवांस्ड इमेजिंग सेंटर को स्थापित करवाने में प्रोफेसर आशुतोष शर्मा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, वे इन दोनों केंद्रों के संस्थापक समन्वयक रहे हैं। कैमिकल इंजीनियरिंग और नैनोटेक्नोलॉजी सहित बहु-विषयक उत्कृष्ट अनुसंधानों में संलग्न प्रोफेसर आशुतोष शर्मा भारत को विज्ञान और प्रौद्योगिकी में एक आत्मनिर्भर महाशक्ति बनाने के लिए पूरी तरह से समर्पित हैं। उनके सक्षम नेतृत्व में विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) स्थानीय से लेकर वैश्विक स्तर तक भारत में वैज्ञानिक विकासात्मक प्रयासों को सफलतापूर्वक पूरा कर पा रहा है और भारतीय विज्ञान को अंतरराष्ट्रीय मान्यता और पहचान मिली है। पहली बार ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स (जीआईआई, 2020) में भारत मध्य और दक्षिण एशियाई देशों के बीच अग्रणी स्थान रखते हुए शीर्ष 50 देशों की सूची में 48वें स्थान पर पहुंच गया है। प्रोफेसर शर्मा मानते हैं कि देश के विकास का सीधा संबंध लोगों के विकास से होता है। जीवन के प्रत्येक पहलू में विज्ञान-तकनीक और शोध कार्य अहम भूमिका निभाते हैं। अत: विकास के पथ पर भारत को आगे बढ़ाने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए युवा पीढ़ी के लिये सूचना और विज्ञान आधारित वातावरण तैयार करने और उच्च शिक्षा के स्तर पर शोध तथा अनुसंधान के पर्याप्त संसाधन उपलब्ध कराने की दिशा में प्रोफेसर आशुतोष शर्मा निरंतर प्रयासरत रहे हैं।

इसी वर्ष जनवरी 2021 में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर बनाने और अगले दशक में वैज्ञानिक शोध एवं विकास के क्षेत्र में देश को विश्व के अग्रणी राष्ट्रों की पंक्ति में लाने के उद्देश्य के साथ ५वीं राष्ट्रीय विज्ञान प्रौद्योगिकी और नवाचार नीति २०२० तैयार की गई है। इस नीति में सामाजिक आर्थिक एवं भेदभाव रहित पर्यावरण का निर्माण करते हुए 'जन-केंद्रित' पारिस्थितिक तंत्र विकसित करने तथा प्रत्येक पाँच वर्षों में पूर्णकालिक समतुल्य शोधकर्ताओं की संख्या, शोध एवं विकास पर सकल घरेलू व्यय (जीईआरडी) और जीईआरडी में निजी क्षेत्र के योगदान को दोगुना करने पर बल दिया गया है। यह नई विज्ञान नीति भारत को वैश्विक स्तर पर तीव्रता से बदल रहे समय के अनुसार आगे बढ़ने और भविष्य की चुनौतियों से निपटने में सहायक साबित होगी। निश्चित रुप से यह कहा जा सकता है कि भारत प्रोफेसर आशुतोष शर्मा जैसे आधुनिक वैज्ञानिकों की मेधा और समर्पण की भावना की शक्ति से आगामी दशकों में विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार के क्षेत्र में व्यक्तिगत एवं संस्थागत उत्कृष्टता स्थापित करने और वैश्विक मंच पर अपनी विशिष्ट पहचान बना पाने में सफल हो सकेगा।

लेखिका गोवा की वरिष्ठ साहित्यकार हैं।
ई-मेल : response50123@gmail.com

खबरों में देश-विदेश

■ सोनम जैन

विश्व में फिर पैर पसार रहा है कोरोना

कोरोना से हाहाकार जैसे समाचार इस समय नहीं आ रहे हैं। किंतु इसका यह मतलब बिल्कुल नहीं है कि अब कोरोना गुजरे समय की बात हो गया है। विश्व के विभिन्न देशों में कोरोना के मामले अभी भी चिंताजनक बने हुये हैं। वहीं भारत के भी कुछ राज्यों में कोरोना की तीसरी लहर की आहट मिल रही है। कोरोना काल के प्रारंभ से ही अमेरिका इस महामारी का सबसे बड़ा शिकार रहा है। यहां अभी भी 92.80 लाख लोग कोरोना का उपचार करा रहे हैं। विशेष बात यह है कि अब यह आंकड़ा धीरे-धीरे ही सही लेकिन लगातार बढ़ रहा है। इसी प्रकार के हाल इंग्लैंड, ईरान, रुस व तुर्की में बने हुये हैं। वहीं मैक्सिको, भारत व ब्राजील में फिलहाल सक्रिय कोरोना के मामले 4 लाख से कम हैं, लेकिन थोड़ी सी भी स्थिति खराब होने पर यह आंकड़ा कभी भी इसके पार जा सकता है। भारत में दक्षिण और पूर्वोत्तर राज्यों में स्थिति अभी भी खराब बनी हुई है।

ब्रिक्स सम्मेलन में शामिल सभी देशों ने अफगानिस्तान के हालात पर जतायी चिंता

अफगानिस्तान पर तालिबान का राज हो गया है। पंजशीर के 70 प्रतिशत हिस्से पर भी अब वो काबिज हो चुका है। उसने सत्ता में आने के तुरंत बाद जो वादे अपने देश की जनता और विश्व से किये थे, उसे वो पूरा करता हुआ नहीं दिखायी दे रहा है। वहां के हालात पर 13वें ब्रिक्स (ब्राजील, रुस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका) शिखर सम्मेलन में चिंता व्यक्त की गयी। विशेष बात यह है कि इस संगठन के सदस्य देश चीन और रुस तालिबान सरकार का समर्थन करते रहे हैं, इसके बाद भी वो अफगानिस्तान में तालिबान राज को लेकर शंकित थे। इस शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता भारत ने की थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ब्रिक्स देशों सहित विश्व से आतंकवाद से लड़ने के लिये एक होने का अनुरोध किया, तो वहीं चीन ने भी इस क्षेत्र में भारत के सहयोग की सराहना की।

राजनाथ सिंह और नितिन गडकरी ने इमरजेंसी एयर स्ट्रिप का किया उद्घाटन

भारतीय नौसेना के लड़ाकू विमान आवश्यकता पड़ने पर राजमार्ग के ऊपर भी उतर सकें, इस उद्देश्य से भारत-पाकिस्तान सीमा से कुछ किलोमीटर दूर ही राजस्थान के बाड़मेर में एमरजेंसी एयर स्ट्रिप का निर्माण किया गया है। इसका उद्घाटन रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और सड़क परिवहन व राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी के द्वारा किया गया। इस अवसर पर चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल बिपिन रावत और एयर चीफ मार्शल आ.के.एस. भदौरिया भी उपस्थित रहे। ये सभी अतिथिगण सड़क मार्ग के स्थान पर हरक्यूलिस प्लेन से सीधे इसी एयर स्ट्रिप पर उतरे। इसके बाद एक और लड़ाकू विमान यहां उतारा गया, तो दूसरे विमान ने टच डाउन (एयर स्ट्रिप को छूकर निकल जाना) किया। नितिन गडकरी ने बताया कि इस 3 किलोमीटर की एयर स्ट्रिप के निर्माण में 45 करोड़ रुपये का खर्च आया है।

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने रखी राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय की नींव

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने हाल ही में उत्तर प्रदेश के दो महत्वपूर्ण विश्वविद्यालयों की नींव रखी। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद अपने प्रयागराज दौरे पर थे। यहां उनके द्वारा इलाहबाद हाईकोर्ट में राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय की आधारशिला रखी गयी। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि न्यायपालिका में लोगों का विश्वास पैदा करने के लिये मौजूदा स्थिति में बदलाव की आवश्यकता है। न्याय व्यवस्था का खर्च आम आदमी के लिये वहन करना आसान हो। निर्णयों की भाषा सामान्य आदमी की समझ में आने वाली होनी चाहिए। राष्ट्रपति के द्वारा इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय सहित विभिन्न अन्य परियोजनाओं की भी आधारशिला रखी गयी। इस अवसर पर बोलते हुये केंद्रीय कानून मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा कि हमारी सरकार सभी को सुलभ न्याय दिलाने के लिये वचनबद्ध है। इसके लिये जो भी आवश्यक कदम उठाने होंगे या न्यायपालिका को जो भी सहयोग चाहिए होगा, वह उपलब्ध कराया जायेगा। चीफ जस्टिस ऑफ इण्डिया एनवी रमना ने न्यायिक बुनियादी ढांचे को मजबूत करने की आवश्यकता पर बल देने के साथ ही कहा कि इलाहबाद उच्च न्यायालय ने ही इंदिरा गांधी को पद्मुक्त करने का ऐतिहासिक फैसला सुनाया था। ऐसे निर्णय लेने के लिये बहुत साहस की आवश्यकता होती है। वर्तमान भारत सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में लंबित जजों की नियुक्ति पर शीघ्र निर्णय कर अच्छा कार्य किया है। कार्यक्रम में उ.प्र. की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी उपस्थित रहे। राष्ट्रपति ने अपने प्रयागराज दौरे के दौरान पश्चिम बंगाल के पूर्व राज्यपाल केसरीनाथ त्रिपाठी के घर पहुंचकर उनसे भी मुलाकात की। इस कार्यक्रम से कुछ दिनों पूर्व ही राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद गोरखपुर पहुंचे थे और वहां उन्होंने महायोगी गुरु गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय की नींव रखी थी। इस अवसर पर राष्ट्रपति ने बताया कि वो राष्ट्रपति भवन में आरोग्य वन विकसित करा रहे हैं, जिसके पीछे भी आयुष से जुड़ी औषधियों का महत्व ही है। उ.प्र. के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बताया कि इस प्रकार का विश्वविद्यालय आस-पास के क्षेत्र में कहीं नहीं था, इसलिये इसकी अत्यंत आवश्यकता थी।

उत्तर भारत की खबरें

■ विशाल शर्मा/शैलेन्द्र जैन

बनवारीलाल पुरोहित बने पंजाब के स्थायी राज्यपाल

बनवारीलाल पुरोहित को कुछ समय पूर्व पंजाब के राज्यपाल और चण्डीगढ़ के प्रशासक का अतिरिक्त कार्यभार दिया गया था। वे उस समय तमिलनाडु के राज्यपाल थे। तमिलनाडु को नया राज्यपाल मिलते ही श्री पुरोहित अब पंजाब के पूर्णकालिक राज्यपाल बन गये हैं। इस संबंध में राष्ट्रपति भवन की ओर से भी आवश्यक पत्र जारी कर दिया गया है। यद्यपि इसमें चण्डीगढ़ के प्रशासक के बारे में कोई जानकारी नहीं दी गयी है, किंतु 27 अगस्त को ही पंजाब के राज्यपाल और चण्डीगढ़ के प्रशासक वी.पी. सिंह बदनौर से ये दोनों जिम्मेदारियां श्री पुरोहित को मिल गयी थीं, इसलिये ऐसा माना जा रहा है कि अब वो चण्डीगढ़ के स्थायी प्रशासक भी होंगे। सामान्यत: पंजाब के राज्यपाल ही चण्डीगढ़ के प्रशासक होते हैं, इसलिये राष्ट्रपति भवन के द्वारा जारी विज्ञप्ति में इसका अलग से उल्लेख नहीं है।

इलेक्ट्रॉनिक गैजेट तक सीमित युवा एथलीट निषाद कुमार से लें प्रेरणा : राजेंद्र आर्लेकर

पैरा ओलंपिक में सिल्वर मैडल जीतने वाले एथलीट निषाद कुमार ने परिवार और कोच के साथ हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर से मुलाकात की। इस अवसर पर राज्यपाल ने कहा कि निषाद ने हिमाचल प्रदेश के साथ ही पूरे देश का गौरव बढ़ाया है। उनकी इस सफलता से राज्य के अन्य खिलाड़ियों को भी प्रेरणा मिलेगी। श्री आर्लेकर के द्वारा आहवान किया गया कि युवा वर्ग इलेक्ट्रॉनिक गैजेट की दुनिया से बाहर निकलकर निषाद जैसी प्रतिभाओं से प्रेरणा लें। निषाद कुमार ने प्रदेश के मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर से भी मुलाकात की। श्री ठाकुर ने निषाद को हर संभव सहायता का आश्वासन दिया। इस मुलाकात के दौरान राज्य के शहरी विकास मंत्री सुरेश भारद्वाज, पुलिस महानिदेशक संजय कुंडू, खेल एवं युवा विभाग के सचिव एस.एस. गुलेरिया आदि भी उपस्थित रहे।

ले.ज. गुरमीत सिंह बने उत्तराखंड के राज्यपाल

उत्तराखंड के कई ऐसे क्षेत्र है, जहां के हर घर से कम से कम एक व्यक्ति सेना में है। प्रदेश को अभी तक जितने भी राज्यपाल मिले, वो सभी राजनीतिक पृष्ठभूमि से थे। केंद्र सरकार ने पहली बार सैन्य अधिकारी रहे लेफ्टिनेंट जनरल (रिटायर्ड) गुरमीत सिंह को उत्तराखंड का

राज्यपाल बनाया है। श्री सिंह 40 वर्षों तक सेना में सेवारत रहने के बाद 2016 में डिप्टी चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ के पद से सेवानिवृत्त हुये थे। उन्हें चार बार राष्ट्रपति पदक से सम्मानित किया जा चुका है। नवनियुक्त राज्यपाल चीन मामलों से जुड़े सैन्य ऑपरेशन के निदेशक भी रह चुके हैं।

मुख्यमंत्री मनोहरलाल व प्रदेश भाजपा अध्यक्ष ओम प्रकाश धनखड़ ने बजरंग पुनिया को किया सम्मानित

हरियाणा देश को बहुत से पहलवान दे चुका है। इस बार ओलंपिक खेलों में हरियाणा के झज्जर जिले के खुडुन गांव के रहने वाले पहलवान बजरंग पूनिया ने कांस्य पदक जीता है। मनोहरलाल सरकार ने खिलाड़ी का सम्मान करने के साथ ही उनके गांव और जिले के विकास करने के लिये भी कई नयी परियोजनाओं को शुरु करने का निर्णय लिया। हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहरलाल ने हरियाणा भाजपा के अध्यक्ष ओम प्रकाश धनखड़ के साथ पहलवान बजरंग पूनिया का सम्मान उनके गांव में जाकर किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री के द्वारा आक्सीजन प्लांट सहित 21.35 करोड़ रुपये की विभिन्न परियोजनाओं का उपहार भी दिया गया। मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन में पूनिया और उनके गांव वालों को आश्वासन दिया कि आगे जिस भी मदद की आवश्यकता होगी, हरियाणा सरकार उन सभी की व्यवस्था कराने का प्रयास करेगी। कार्यक्रम में प्रदेश के खेल मंत्री संदीप सिंह, रोहतक से सांसद डॉ. अरविंद कुमार शर्मा आदि उपस्थित रहे।

इलेक्ट्रिक वाहनों की खरीद पर उत्तराखंड सरकार देगी सब्सिडी : पुष्कर सिंह धामी

इलेक्ट्रिक वाहन पर्यावरण संरक्षण के लिये उपयोगी हैं और पेट्रोल-डीजल के वाहनों का विकल्प बनकर उभरे हैं। इसी को ध्यान में रखते हुये उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने प्रदेश में पहले 5000 दोपहिया और 1000 चौपहिया वाहनों पर सब्सीडी देने का ऐलान किया है। उन्होंने घोषणा की है कि दोपहिया पर प्रति वाहन 7500 रुपये और चौपहिया पर प्रति वाहन 50,000 रुपये की सब्सिडी उनकी सरकार के द्वारा दी जायेगी। मुख्यमंत्री ने यह घोषणा हिमालय दिवस पर आयोजित एक सेमिनार को संबोधित करते हुये की।

डॉ. राजेश कुमार पाण्डेय को मिला शिक्षक श्री सम्मान

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए उ.प्र. सरकार ने हेमवती नंदन बहुगुणा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय नैनी, प्रयागराज में वाणिज्य विभाग के एसोशिएट प्रोफेसर डा. राजेश कुमार पाण्डेय को शिक्षक श्री सम्मान से सम्मानित किया है। डॉ. राजेश कुमार पाण्डेय ने अपने 23 वर्ष के स्नातक एवं स्नातकोत्तर अध्यापन के साथ ही विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय जरनल, पत्र-पत्रिकाओ में 100 से अधिक लेख व शोध पत्र लिखे, जो बहुत लोकप्रिय हुये हैं।

पूर्वोत्तर भारत की खबरें

■ राजीब अगस्ती/आलोक सिंह

पूर्वोत्तर के कुछ राज्यों में सुधरी कोरोना की स्थिति, कुछ में हालात चिंताजनक

भारत में क्या कोरोना की तीसरी लहर दस्तक दे चुकी है? इस बारे में विशेषज्ञों की अलग-अलग राय है। पूर्वोत्तर राज्यों पर नजर डालें तो जनसंख्या के अनुपात में यहां कोरोना के मामले अभी भी चिंताजनक हैं। यद्यपि कुछ राज्यों में सुधार हुआ है, लेकिन भारत के अन्य कई बड़े प्रदेशों की तुलना में स्थिति को खराब ही कहा जायेगा। पूर्वोत्तर में मिजोरम सबसे अधिक कोरोना प्रभावित प्रदेश बन गया है। यहां 13 हजार से अधिक कोरोना के सक्रिय मामले हैं। लगभग 12 लाख जनसंख्या वाला यह प्रदेश भारत का छठा सबसे अधिक सक्रिय कोरोना मरीजों वाला राज्य है। असम में स्थिति तेजी से सुधरी है, किंतु यहां पर अभी भी 4000 से अधिक सक्रिय कोरोना के मामले हैं। इसी प्रकार मणिपुर में 2500 और मेघालय में 1500 से अधिक कोरोना के सक्रिय मरीज अपना उपचार करा रहे हैं। सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश व त्रिपुरा में कोरोना के सक्रिय मामले 1000 से कम हैं। कुछ दिनों पूर्व तक जहां असम में सक्रिय कोरोना के मरीज पांच अंकों में थे, तो वहीं पूर्वोत्तर का कोई ऐसा प्रदेश नहीं था, जहां 1500 से कम कोरोना के मरीज उपचार करा रहे हों। इस अनुसार स्थिति पहले से बेहतर लगती है, लेकिन वहीं दूसरी ओर बिहार और राजस्थान जैसे बड़े प्रदेशों में पूरे राज्य के अंदर 100 से कम कोरोना के मरीज उपचार करा रहे हैं, इसकी तुलना में अभी बहुत प्रयास करने शेष हैं।

केंद्रीय मंत्री सर्वानंद सोणोवाल ने जोरहाट नाव दुर्घटना में घायलों से की मुलाकात

केंद्रीय मंत्री सर्वानंद सोणोवाल हाल ही में असम के दौरे पर थे, यहां उन्होंने जोरहाट मेडिकल कॉलेज और अस्पताल का दौरा किया। इस दौरान सोणोवाल ने जोरहाट नाव दुर्घटना में घायलों से भी मुलाकात की। जोरहाट के उपायुक्त अशोक बर्मन के अनुसार ब्रह्मपुत्र नदी के निकट 1.5 किलोमीटर की दूरी पर दुर्घटनाग्रस्त नौका का मलवा मिला था। इस दुर्घटनाग्रस्त नौका से दो लोग नहीं मिले थे। इसके अलावा अन्य घायलों को जोरहाट मेडिकल कॉलेज में भर्ती किया गया, जिनको देखने केंद्रीय मंत्री गये थे।

प्रो. जगदीश मुखी को मिला नागालैंड के राज्यपाल का अतिरिक्त कार्यभार

असम के राज्यपाल प्रो. जगदीश मुखी को नागालैंड के राज्यपाल का अतिरिक्त कार्यभार दिया गया है। प्रो. मुखी को 22 अगस्त 2016 को अण्डमान एवं निकोबार द्वीप समूह का

उपराज्यपाल बनाया गया था। इसके बाद 10 अक्टूबर 2017 को उन्हें पूर्वोत्तर के सबसे बड़े राज्य असम का कार्यभार दिया गया। तब से वे इस प्रदेश को अपना मार्गदर्शन दे रहे हैं। इस दौरान उन्हें 8 मार्च 2019 को मिजोरम के राज्यपाल का अतिरिक्त कार्यभार भी दिया गया था। इस पद पर वे 25 अक्टूबर 2019 तक रहे। इस बार उन्हें नागालैंड के राज्यपाल का अतिरिक्त कार्यभार भी दिया गया है। नागालैंड के राज्यपाल आर.एन. रवि का तमिलनाडु स्थानांतरण होने के कारण यह व्यवस्था की गयी है।

सिक्किम के राज्यपाल गंगा प्रसाद ने लद्दाख में किसान सुविधा केंद्र का किया उद्घाटन

लेह में सिक्किम सरकार के सहयोग से बने किसान सुविधा केंद्र का सिक्किम के राज्यपाल गंगा प्रसाद ने उद्घाटन किया। इस सुविधा केंद्र का निर्माण सिक्किम स्टेट आर्गेनिक सर्टिफिकेशन एजेंसी के द्वारा किया गया है। मुख्य अतिथि के रुप में कार्यक्रम को संबोधित करते हुये राज्यपाल

गंगा प्रसाद ने कहा कि सिक्किम भारत का पहला जैविक खेती करने वाला प्रदेश है। इस नाते हमें कई सम्मान भी मिले हैं। लद्दाख के किसानों को भी राज्य की इस विशेषता का लाभ मिले, इस उद्देश्य से इस सुविधा केंद्र का निर्माण किया गया है। लद्दाख के उप राज्यपाल आर.के. माथुर ने कार्यक्रम में आने के लिये सिक्किम के राज्यपाल का धन्यवाद किया। कार्यक्रम में कृषि सचिव, (लद्दाख), रविंद्र कुमार, सांसद जमयाग नामग्याल, विनीता छेत्री, सुधीर गिरी, ताशी त्सेतन, राज यादव, ओपी चौरीशा व श्रीकांत बी सुसे आदि उपस्थित रहे।

स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि और बागवानी पर विशेष ध्यान देगी सिक्किम सरकार : प्रेम सिंह तमांग

सिक्किम के मुख्यमंत्री प्रेम सिंह तमांग ने राज्य नीति आयोग की बैठक को संबोधित करते हुये कहा कि हमें राज्य की स्वास्थ्य व्यवस्था, शिक्षा, कृषि व बागवानी पर और अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। बैठक में तय हुआ कि इसके लिये आवश्यक प्रस्ताव तैयार कर केंद्र सरकार और उसके डोनर मंत्रालय के सामने रखा जायेगा, जिससे सभी परियोजनाओं के लिये आवश्यक संसाधनों की व्यवस्था हो सके। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार जैविक कृषि को प्रोत्साहन देती है, इसलिये हम बागवानी को भी अधिक महत्व देते हैं। कोरोना के दूसरे चरण में जिस प्रकार की समस्याओं का सामना राज्य ने किया है। वैसा दुबारा न हो, इसके लिये हमें अधिक सजग रहने की जरुरत है। इस महामारी के कारण शिक्षा व्यवस्था बुरी तरह से प्रभावित हुई है। इसे फिर से ठीक कर और आगे बढ़ने के लिये हम निरंतर प्रयास कर रहे हैं। बैठक में नीति आयोग के सलाहकार प्रो. रमेश चंद, डॉ. प्रेम सिंह, मुख्य सचिव एस.सी. गुप्ता व विकास आयुक्त वी.बी. पाठक आदि अधिकारीगण उपस्थित रहे।

दक्षिण भारत की खबरें

■ नवरतन पींचा जैन/वेदप्रकाश पांडेय

केरल सरकार की लापरवाही के कारण प्रदेश में बढ़ रहे हैं कोरोना के मामले : वी. मुरलीधरन

केंद्रीय विदेश राज्य मंत्री वी. मुरलीधरन ने आरोप लगाया कि वाम दलों की केरल सरकार की लापरवाही के कारण ही प्रदेश में कोरोना अनियंत्रित हो गया है। पूरे देश के आधे से अधिक मामले केरल से ही आ रहे हैं। इसके उलट वाम सरकार मोपला विद्रोह की वर्षगांठ मनाने में व्यस्त है। मृतकों की संख्या भी बहुत अधिक है। इसके लिये सीधे तौर पर केरल सरकार जिम्मेदार है। विदेश राज्य मंत्री ने कहा कि केंद्रीय स्वास्थ्य दल जब राज्य में आया, तो उसने भी अपनी जांच में यही सब पाया। कोविड से रोकथाम के लिये केरल सरकार के पास कोई नीति नहीं है, यह प्रदेश सरकार पूरी तरह से असफल रही है। केरल में समाचार लिखे जाने के समय 2.08 लाख कोरोना के सक्रिय मामले थे अर्थात पूरे भारत के 59 प्रतिशत मामले इसी राज्य से हैं।

केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने तेलंगाना में शुरु किया ड्रोन से दवा पहुंचाने का पायलट प्रोजेक्ट

केंद्रीय विमानन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने हाल ही में तेलंगाना का दौरा किया। यहां सबसे विशेष बात यह है कि उनके द्वारा भारत में पहली बार ड्रोन से दवाओं की आपूर्ति का पायलट प्रोजेक्ट शुरु किया गया। इसका अध्ययन करने के बाद इस प्रोजेक्ट को पूरे देश

में लागू करने की योजना है। इसके लिये 3 माह तक निगरानी रखकर डाटा एकत्रित किया जायेगा। केंद्र सरकार के द्वारा तेलंगाना की केसीआर सरकार के सहयोग से शुरु किये गये इस प्रोजेक्ट के लिये क्षेत्रों को तीन जोन में बांटा गया है। ग्रीन जोन में ड्रोन उड़ाने के लिये अनुमति की आवश्यकता नहीं होगी। येलो जोन में अनुमति लेनी होगी और रेड जोन में ड्रोन से आपूर्ति नहीं की जा सकेगी। ज्योतिरादित्य ने इस प्रोजेक्ट के उद्घाटन के अतिरिक्त मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव के साथ प्रदेश में विमानन से जुड़ी परियोजनाओं पर चर्चा की। इन कार्यक्रमों में तेलंगाना के मंत्री के.टी. रामा राव, महमूद अली, वी. प्रशांत रेड्डी व मुख्य सचिव प्रदीप करोला आदि उपस्थित रहे।

बेटी के अलग पार्टी बनाने से मां दुखी, तो भाई जगनमोहन रेड्डी नाराज

कुछ दिनों पूर्व आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री जगनमोहन रेड्डी की बहन एस. शर्मिला ने तेलंगाना में अलग पार्टी बना ली थी। जगन की पार्टी वाईएसआर कांग्रेस आंध्र प्रदेश में अधिक प्रभावी है, लेकिन क्योंकि तेलंगाना भी इसी प्रदेश के हिस्से से अलग होकर बना राज्य है, इसलिये जगनमोहन रेड्डी अपनी पार्टी का विस्तार तेलंगाना तक करना चाहते थे। बहन के अलग पार्टी बना लेने से उनके इस सपने को गहरा धक्का लगा है। इसका असर हाल ही में उनकी मां वाईएस विजयलक्ष्मी के द्वारा अपने पति राजशेखर रेड्डी की 12वीं पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित श्रद्धांजलि सभा में देखने को मिला। इस सभा में शर्मिला के अलावा विभिन्न पार्टियों के कई नेता पहुंचे थे, लेकिन जगनमोहन नहीं आये। सूत्रों के अनुसार जगन मोहन रेड्डी वाईएसआर घाट पर अपने पिता को श्रद्धांजलि देने आये थे, लेकिन यहां करीब 40 मिनट रुकने के बाद वे चले गये। जगनमोहन और शर्मिला के बीच की इस तकरार से उनकी मां विजयलक्ष्मी दुखी हैं। जहां एक ओर शर्मिला चाहती हैं कि जगनमोहन तेलंगाना में उनकी पार्टी का समर्थन करें, तो वहीं भाई का मानना है कि बहन को ऐसा करने की जरुरत ही नहीं थी।

केंद्रीय कारागार के कैदियों ने बनाई भगवान गणेश की मूर्तियां, हाथों-हाथ बिकी

सजा का उद्देश्य लोगों को सुधारना होता है। इसके लिये उनके अंदर सकारात्मकता का भाव जगाना आवश्यक है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये पुडुचेरी में पुलिस महानिरीक्षक जेल रविदीप सिंह ने एक ऐसी पहल की है, जिसका प्रयोग सभी जगह किया जा सकता है। पूरे देश में गणेश चतुर्थी के अवसर पर गणपति बप्पा मौर्या के नारे लगे। कोरोना के कारण इस बार भी भव्य कार्यक्रम नहीं हो सके, लेकिन लोगों ने व्यक्तिगत स्तर पर गणपति स्थापना बड़े उत्साह के साथ की। इस कारण भगवान गणेश की मूर्तियों की मांग अधिक हो गयी। इसको ध्यान में रखते हुए ही पुलिस अधिकारी ने पुडुचेरी की सेंट्रल जेल में कैदियों को भगवान गणेश की मूर्तियां बनाने के लिये प्रोत्साहित किया। कैदियों द्वारा बनायी गई 51 मूर्तियां जैसे ही बिक्री के लिये रखी गयीं, कुछ ही मिनटों में सभी को खरीद लिया गया। रविदीप सिंह ने बताया कि वो श्री अरबिंदो सोसाइटी के साथ मिलकर कैदियों के कौशल विकास के लिये काम कर रहे हैं। कैदियों को योग, बेकरी उत्पाद, जैविक खेती, गौशाला संचालन जैसे विभिन्न कार्य सिखाने का प्रयास किया जा रहा है। कुछ कार्य शुरु हो गये हैं, शेष की योजना बन चुकी है।

तमिलनाडु के राज्यपाल बने आर.एन. रवि

अभी तक नागालैंड के राज्यपाल का कार्य संभाल रहे आर.एन. रवि को अब तमिलनाडु का राज्यपाल बनाया गया है। उन्होंने बनवारीलाल पुरोहित की जगह ली है। उनकी नियुक्ति के बाद तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.जे. स्टालिन, विपक्षी दलों एआईएडीएमके और पीएमके ने श्री रवि को शुभकामनाएं दी हैं। वहीं दूसरी ओर कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष के.एस. अलागिरि ने अपना अलग ही रुख बनाया हुआ है। उन्हें इसके पीछे साजिश नजर आती है। यहां यह ध्यान देने वाली बात है कि कांग्रेस स्टालिन के साथ गठबंधन में है। आर.एन. रवि राजनीतिक बयानबाजी से अलग हटकर तमिलनाडु का कार्यभार संभालने जा रहे हैं। नागालैंड में भी राजनीति से ऊपर उठकर वे हमेशा काम करते रहे।

पश्चिम भारत की खबरें

■ आशा सिंह देवासी/धीरेन बरोट

सरदार धाम भवन का किया लोकार्पण

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ऑनलाइन आयोजित कार्यक्रम में अहमदाबाद के सरदार धाम भवन का उद्घाटन तथा दूसरे चरण के लिये बालिका छात्रावास का भूमि पूजन किया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने स्वामी विवेकानंद के शिकागो में दिये गए ऐतिहासिक भाषण को याद किया। उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने भारत के मानवीय मूल्यों से दुनिया को परिचित कराया था। उनके भाषण से युवाओं को नई दिशा मिल रही है। नरेंद्र मोदी ने अमेरिका में हुए 9/11 हमलों और सुब्रमण्यम भारती को भी याद किया। उन्होंने नई शिक्षा नीति को अत्यंत महत्वपूर्ण बताते हुये इसके महत्व को रेखांकित किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा जिस छात्रावास का शिलान्यास किया गया है, उसमें 2000 छात्राओं के रहने की व्यवस्था होगी।

हिमालय हमारी आध्यात्मिकता का केंद्र है : भगत सिंह कोश्यारी

हिमालय दिवस पर आयोजित एक ऑनलाइन कार्यक्रम को संबोधित करते हुये महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी ने कहा कि पूरे

विश्व से लोग हिमालय पर आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने आते हैं। यह हमारी आध्यात्मिकता का केंद्र है। पिछले कुछ सालों में विश्व के विभिन्न देशों ने हिमालय दिवस को मान्यता दी है। विभिन्न लोग हिमालय की रक्षा और उत्थान को ध्यान में रखते हुये प्राकृतिक ढंग से विकास पर बल दे रहे हैं। हिमालय की रक्षा करना हम सब के लिये अत्यंत आवश्यक है। इसके लिये और अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है। इस अवसर पर पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक, उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत व पद्मश्री डॉ. अनिल जोशी ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में किशोर उपाध्याय, प्रीतम भरतवाण, प्रो. मोहन सिंह पंवार, प्रो. दुर्गेश पंत, सूर्यकांत धस्माना, कुसुम घिल्डियाल व दिव्या गुप्ता आदि भी उपस्थित रहे।

दूसरे राज्यों से आने वाले सभी लोगों का रजिस्टर बनायें : उद्धव ठाकरे

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने प्रदेश की पुलिस को निर्देशित करते हुये उनसे दूसरे राज्यों से आने-जाने वाले लोगों का रजिस्ट्रर बनाने का निर्देश दिया है। यह आदेश हाल ही में मुम्बई की बेटी के साथ हुये बलात्कार के बाद आया है। शिवसेना हमेशा से महाराष्ट्र में होने वाले अपराधों के लिये दूसरे राज्यों विशेष रुप से उत्तर प्रदेश और बिहार के लोगों को जिम्मेदार बताती रही है। उद्धव के नये आदेश को भी इसी आधार पर लिया गया निर्णय माना जा रहा है। जहां एक ओर उनके भाई और एमएनएस प्रमुख राज ठाकरे ऐसी मांग लंबे समय से करते रहे हैं, वहीं दूसरी ओर भाजपा ने इसे समाज को तोड़ने वाला निर्णय बताया है। भाजपा विधायक अतुल भातकालकर ने इस आदेश को आधार बनाकर उद्धव ठाकरे के विरुद्ध धारा 153ए के अंतर्गत मामला दर्ज करवाने की घोषणा की है। उद्धव ठाकरे ने कहा है कि वो महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिये हर संभव कदम उठायेंगे।

देवेंद्र फडणवीस से मिले डॉ. प्रमोद सावंत

डॉ. प्रमोद सावंत, महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री एवं गोवा, भाजपा के प्रभारी देवेंद्र फडणवीस के मुम्बई स्थित घर पर उनसे मिले। यहां उन्होंने फडणवीस के घर में स्थापित भगवान गणेश का पूजन कर, उनसे आर्शीवाद लिया। गोवा के मुख्यमंत्री डॉ. सावंत का फडणवीस से मिलना, इसलिये भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है क्योंकि उन्हें भाजपा ने गोवा का प्रभारी बनाया है। वहां अगले साल चुनाव होने हैं। ऐसे में संभावना व्यक्त की जा रही है कि दोनों के बीच गोवा की वर्तमान स्थिति और आगामी चुनाव को लेकर गहन चिंतन-मंथन हुआ है। गोवा के पूर्व मुख्यमंत्री और अत्यंत प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले मनोहर पर्रीकर के निधन के बाद यह पहला विधानसभा चुनाव है। इसलिये देवेंद्र फडणवीस और डॉ. प्रमोद सावंत भाजपा की तैयारियों में किसी प्रकार की कमी नहीं छोड़ना चाहते। गोवा में पिछली बार 11 मार्च 2017 को विधानसभा के परिणाम घोषित किये गये थे, इसलिये संभावना है कि फरवरी 2022 में वहां चुनाव हो सकते हैं।

भूपेंद्र पटेल बने गुजरात के नये मुख्यमंत्री

विजय रुपाणी ने सुबह पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ ऑनलाइन आयोजित एक कार्यक्रम में भाग लिया और फिर इसके बाद अचानक अपने पद से त्याग पत्र दे दिया। सूत्रों के अनुसार मुख्यमंत्री बदलने पर विचार पिछले लगभग एक वर्ष से चल रहा था, किंतु भाजपा अंतिम निर्णय नहीं ले पा रही थी। पार्टी ने रुपाणी के त्याग पत्र के बाद केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर, मनसुख मांडविया और भूपेंद्र यादव की उपस्थिति में पहले भूपेंद्र पटेल को विधायक दल का नेता चुना और फिर इसके अगले दिन गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने उन्हें मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलायी। इस समारोह में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के साथ ही उ.प्र. के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह, कर्नाटक के मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई, हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहरलाल, गोवा के मुख्यमंत्री डॉ. प्रमोद सावंत, असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा के साथ ही पूर्व मुख्यमंत्री विजय रुपाणी, पूर्व उप मुख्यमंत्री नितिन पटेल, भाजपा गुजरात अध्यक्ष सी.आर. पाटिल आदि उपस्थित रहे।

हरियाणा सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना

5 किलो गेहूं

पात्र व्यक्ति प्रति माह

मुफ्त राशन

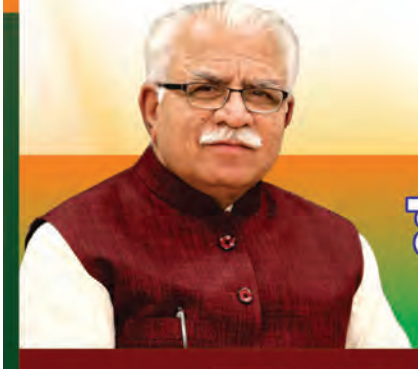

धन्यवाद मोदी जी

भोजन भी, जीवन भी, सम्मान भी

जन-जन राशन - घर-घर राशन

सूचना, जन सम्पर्क एवं भाषा विभाग, हरियाणा । www.prharyana.gov.in | @DiprHaryana

ORDER NO. : D19205/21

दिल में
हिंदुस्तान
देश को करें रोशन
मेक इन इंडिया
के साथ
SURYA
MADE IN INDIA
LIGHTING | APPLIANCES
FANS | STEEL & PVC PIPES
आत्मनिर्भर भारत की पहचान
SURYA ROSHNI LIMITED
E-mail: consumercare@surya.in | www.surya.co.in | suryalighting surya_roshni
Tel: +91-11-47108000, 25810093-96 | Toll Free No.: 1800 102 5657

सरकारी नौकरियाँ आज के हर युवा का सपना है। अपने इसी सपने की पूर्ति के लिये हर कोई अपने स्तर पर प्रयासरत है। आपके इसी प्रयास में साथ देने के लिए हमने 'चाणक्य वार्ता' में इस जॉब नोटिफिकेशन को स्थान दिया है, जिससे किसी भी सरकारी नौकरी की सूचना आप तक पहुंच सके। आशा है यह कॉलम आपके लिए लाभदायक सिद्ध हो रहा होगा।

सरकारी नौकरियों में अवसर

सी.ए. स्वीटी जैन

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे
पद : अप्रेंटिस
संख्या : 432
अंतिम तिथि : 10 अक्टूबर 2021
वेबसाइट : www.secr.indianrailways.gov.in

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड
पद : ग्राम विकास अधिकारी
संख्या : 3896
अंतिम तिथि : 9 अक्टूबर 2021
वेबसाइट : www.rsmssb.rajasthan.gov.in

राष्ट्रीय अंत: विषय विज्ञान और प्रोद्योगिकी संस्थान
पद : कनिष्ठ सचिवालय सहायक
संख्या : 8
अंतिम तिथि : 11 अक्टूबर 2021
वेबसाइट : www.niist.res.in

छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग
पद : सहायक जिला लोक अभियोजन अधिकारी
संख्या : 67
अंतिम तिथि : 7 अक्टूबर 2021
वेबसाइट : www.psc.cg.gov.in

जम्मू-कश्मीर लोक सेवा आयोग
पद : असिस्टेंट प्रोफेसर
संख्या : 173
अंतिम तिथि : 7 अक्टूबर 2021
वेबसाइट : www.jkpsc.nic.in

नौसेना पोत मरम्मत यार्ड
पद : अप्रेंटिस
संख्या : 230
अंतिम तिथि : 1 अक्टूबर 2021
वेबसाइट : www.indiannavy.nic.in

राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान
पद : कनिष्ठ सचिवालय सहायक
संख्या : 6
अंतिम तिथि : 15 अक्टूबर 2021
वेबसाइट : www.ngri.org

उत्तराखंड अधिनस्थ सेवा चयन आयोग
पद : ड्राइवर
संख्या : 164
अंतिम तिथि : 10 अक्टूबर 2021
वेबसाइट : www.sssc.uk.gov.in

ओडिशा पॉवर ट्रांसमीशन कॉरपोरेशन लि.
पद : विभिन्न
संख्या : 200
अंतिम तिथि : 14 अक्टूबर 2021
वेबसाइट : www.optcl.co.in

उत्तर प्रदेश राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन
पद : एएनएम
संख्या : 5000
अंतिम तिथि : 30 सितंबर 2021
वेबसाइट : www.upnrhm.gov.in

संकलनकर्ता 'चाणक्य वार्ता' की आर्थिक सलाहकार हैं। ई-मेल sjsweetyj@gmail.com

सीता पर नयी दृष्टि डालेगी फिल्म

पोस्टर रिलीज किए जाने के बाद से ही फिल्म सीता लगातार चर्चा में बनी हुई है। फिल्म में रामायण की कहानी को सीता के दृष्टिकोण से दिखाने की कोशिश की जाएगी। अलौकिक देसाई के निर्देशन में बन रही इस फिल्म में पहले दीपिका पादुकोण को कास्ट किए जाने की खबरें आई थीं और फिर बाद में कहा गया कि करीना कपूर खान इस फिल्म में लीड रोल प्ले करेंगी। हालांकि बाद में इन दोनों ही अदाकारों का पत्ता साफ हो गया और अब एक ताजा अपडेट के मुताबिक कंगना रनौत ये किरदार निभाएंगी। इस फिल्म में लीड रोल प्ले करने के लिए हो रही कास्टिंग की लंबी खींचतान के बाद अब 4 बार नेशनल अवॉर्ड जीत चुकीं कंगना रनौत को फाइनल किया गया है।

सिनेमा ■ टेलीविजन ■ आयोजन

डॉ. महेश्वर

पृष्ठ 24 का शेष भाग

हर निर्णय लिया। सभी की बात को धैर्य पूर्वक सुनने, समझने और उसके समाधान के लिए सदैव सजग रहने वाले श्री भगत सिंह कोश्यारी जी ने संसद में जनहित से जुड़े हर उस विषय को उठाया जो हर नागरिक को पढ़ाई, दवाई और कमाई अर्थात शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार को सुनिश्चित करता हो। मन वचन और कर्म में 'स्वच्छ परिवेश, प्रत्येक के लिए पेयजल, आवास, परिवहन और विद्युत युक्त प्रदेश' भावना लिए सदैव सक्रिय रहने वाले सौम्य व्यक्तित्व के स्वामी श्री भगत सिंह कोश्यारी जी के महत्वपूर्ण भाषणों को संकलित कर चाणक्य वार्ता प्रकाशन समूह ने बहुत महत्वपूर्ण कार्य किया है। यह पुस्तक जहां शोध छात्रों के लिए मील का पत्थर साबित होगी वही आने वाले समय में नए सांसदों को उनके दायित्वों का बोध कराएगी। जनप्रतिनिधि के संवैधानिक दायित्वों के साथ-साथ उसके नैतिक दायित्वों की ओर संकेत करने वाले इस ग्रंथ के संकलनकर्ता डॉ अमित जैन विशेष साधुवाद के पात्र हैं। चाणक्य वार्ता प्रकाशन समूह के गौरवशाली प्रकाशन ग्रंथों की शृंखला में 'भारतीय संसद में भगत सिंह कोश्यारी' का सर्वत्र स्वागत होगा, इसी आशा के साथ मैं कोश्यारी जी की सकारात्मक ऊर्जा, नैतिक प्रेरणा और जन समस्याओं के समाधान के लिए सदैव तत्पर रहने की भावना को प्रणाम करते हुए डॉ अमित जैन जी को कोटिश: बधाई, शुभकामनाएं देता हूँ।

लेखक नई दिल्ली के वरिष्ठ साहित्यकार हैं। ई-मेल : response50123@gmail.com

पृष्ठ 20 का शेष भाग

'आपके पत्र का लिखित उत्तर भेजना कठिन है। अत: आप सुविधानुसार कभी मिलने आ जाइए, अथवा आज्ञा हो तो वर्धा आकर मैं आप से मिल लूं।''

फलत: 31 जनवरी 1934 को सेठ जमनालाल नागपुर आए। उनके साथ गणपतराव टिकेकर तथा कुमारी ताराबेन भी थीं। इस भेंट में डॉक्टर जी ने जमनालालजी को स्पष्ट किया कि संघ अस्पृश्यता को सिरे से नकारता है, वह राजनीति से अलिप्त है तथा किसी भी संस्था के विरोध में नहीं है। संघ का खादी से भी विरोध नहीं है। इसको और अधिक स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि—

''जिनकी खादी पर पूर्ण श्रद्धा है तथा जो खादी के अतिरिक्त दूसरा वस्त्र छूते भी नहीं, उन्हें संघ के गणवेश में खाकी खादी का प्रयोग करने की पूरी स्वतंत्रता है। डॉक्टर जी ने आगे यह भी जोड़ा कि खादी से स्वराज्य मिल सकेगा अथवा वह अर्थशास्त्र की दृष्टि से बाजार में टिक सकेगी, यह हमें नहीं लगता। साथ ही, देशी मिलों के कपड़े का बहिष्कार करना घातक है, क्योंकि इससे विदेशी वस्त्र तथा स्वदेशी मिलों के वस्त्र को एक ही तराजू से तोला जाता है। वास्तव में तो मिल का कपड़ा पंद्रह आने स्वदेशी ही होता है। संघ स्वदेशी का पुरस्कर्ता होने के कारण विदेशी कपड़े का खाकी गणवेश उसे मान्य नहीं।'' (डॉ. हेडगेवार चरित्र, पृष्ठ-279)

डॉक्टर जी ने संघ का लिखित विधान भी उन्हें पढ़कर सुनाया, जिससे अनेक प्रश्न स्वत: ही समाप्त हो गए थे। किन्तु डेढ़ घंटे तक चले इस वार्तालाप में सेठ जी बार-बार घूम फिर कर यह बात कहते थे कि ''संघ कांग्रेस का विरोध करता है।'' अत: डॉक्टर जी ने उन्हें बताया कि संघ कांग्रेस का विरोध नहीं करता, अपितु वास्तविकता यह है कि कांग्रेस ही संघ का विरोध करती है। उन्होंने प्रमाण सहित एक के बाद एक ऐसे उदाहरण प्रस्तुत करने शुरू किए, जिनमें कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने संघ के विरूद्ध अप्रचार करके लोगों के मन कलुषित किए। इतना ही नहीं तो उन्होंने केवल दो-तीन दिन पूर्व का ही प्रसंग उन्हें बता दिया कि— ''आपने सुना ही होगा कि दो-तीन दिन पहले ही आपके यहां मीराबेन या ताराबेन ने संघ के विषय में कुछ भी कल्पना न होते हुए भी मनमानी बातें कहीं।''

यह सुन सेठजी हक्के-बक्के रह गए। उन्हें आश्चर्य हुआ कि डॉक्टर जी को वर्धा में हुई बात इतनी जल्दी कैसे पता लग गई। ताराबेन सामने ही बैठी थीं। अपनी गलती पकड़े जाने पर उनके मुंह पर हवाइयां उड़ने लगीं। सेठ जी यह भी समझ गए कि डॉक्टर जी ताराबेन को प्रत्यक्ष नहीं जानते, इसलिए उन्होंने तुरंत ही ताराबेन का परिचय करा दिया।

इस भेंट के बाद 1 फरवरी 1934 को डॉक्टर जी ने एक कार्यकर्ता को अपने पत्र में लिखा—''मैंने सेठजी को संघ का विधान पूरी तरह पढ़कर सुना दिया। इससे अनेक प्रश्न काफी कम हो गए। केवल इतनी सी बात बच गई कि 'संघ कांग्रेस का विरोध करता है'। किंतु मैंने सप्रमाण उनके सामने रखा कि संघ कांग्रेस का द्वेष नहीं करता, बल्कि कांग्रेस के ही बड़े-बड़े लोग संघ से द्वेष करते हैं तथा आगे ऐसा न हो, इस विषय में ध्यान रखने को कहा।'' (डॉ. हेडगेवार चरित्र, पृष्ठ-279)

बाद में डॉक्टर जी ने श्री बजाज को उनके प्रश्नों के उत्तर लिख कर भी श्री अप्पाजी जोशी के द्वारा भिजवा दिए थे। (क्रमश:)

लेखक इतिहासकार व संघ विचारक हैं।
ई-मेल : response50123@gmail.com

सभी देशवासियों को

75 वें स्वतंत्रता दिवस

की हार्दिक शुभकामनाएँ

जय हिंद

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

“ देश की आज़ादी का अमृत महोत्सव कोटि-कोटि भारतवासियों का पर्व है, जिसमें पूरे भारत की परंपरा भी है, स्वाधीनता संग्राम की परछाई भी है और आज़ाद भारत की गौरवान्वित करने वाली प्रगति भी है। यह आयोजन हमारे इन 75 वर्षों की उपलब्धियों को दुनिया के सामने रखने का और अगले 25 वर्षों के विकास की रूपरेखा और संकल्प के लिए प्रेरणा लेने का अवसर है। ”

- नरेन्द्र मोदी

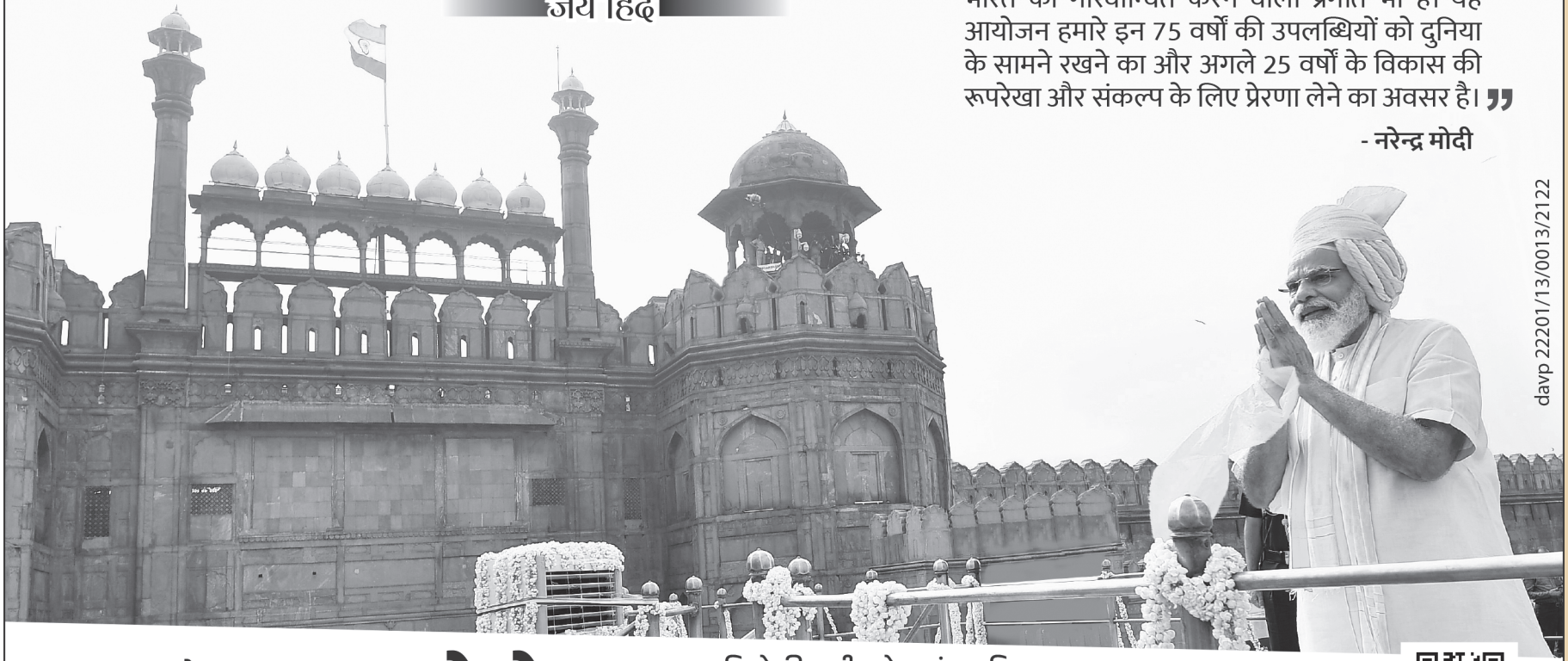

davp 22201/13/0013/2122

कण-कण में,
हर धड़कन में... पहले देश

लाल किले की प्राचीर से स्वतंत्रता दिवस समारोह का प्रात:6:25 बजे से दूरदर्शन द्वारा सीधा प्रसारण

#AmritMahotsav
क्यूआर कोड स्कैन करें और आज़ादी के अमृत महोत्सव में भाग लें

प्रत्येक माह 1 व 16 तारीख को प्रकाशित
पोस्ट करने की तारीख : 3-4 व 17-18
नई दिल्ली से प्रकाशित
Posted at Delhi RMS - 110006

RNI No. DELHIN / 2016 / 65854
Postal Regn No. DL(W) 10/2230/2019-21
Licensed to Post without Pre-payment
of Postage L.No. U(W)-13/2019-21

आपकी प्रेरणा ही हमारी शक्ति है!

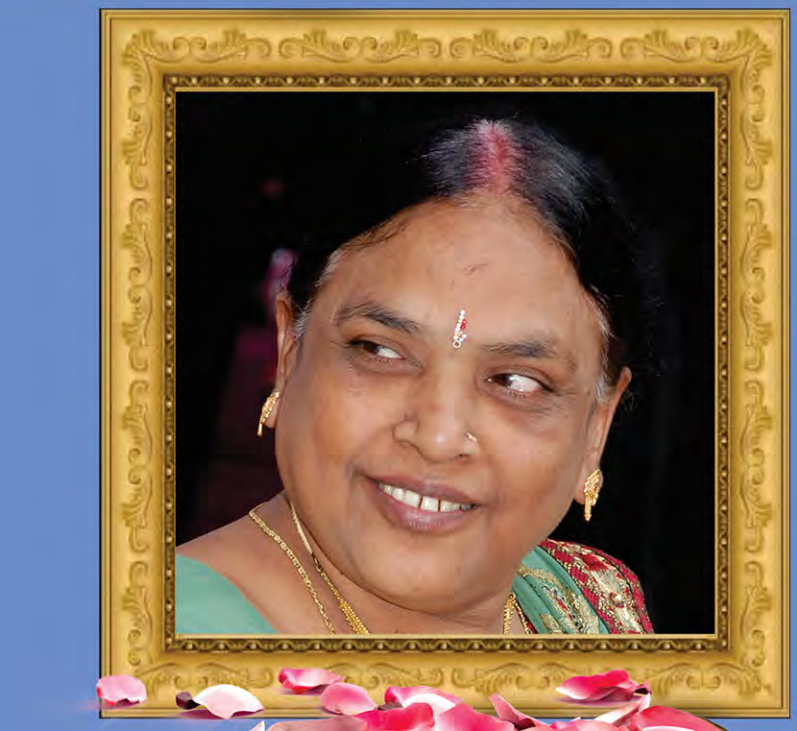

श्रीमती कांतिदेवी जैन

[1 जनवरी 1958–30 सितम्बर 2019]

द्वितीय पुण्यतिथि पर भावपूर्ण श्रद्धांजलि

चाणक्य वार्ता प्रकाशन समूह